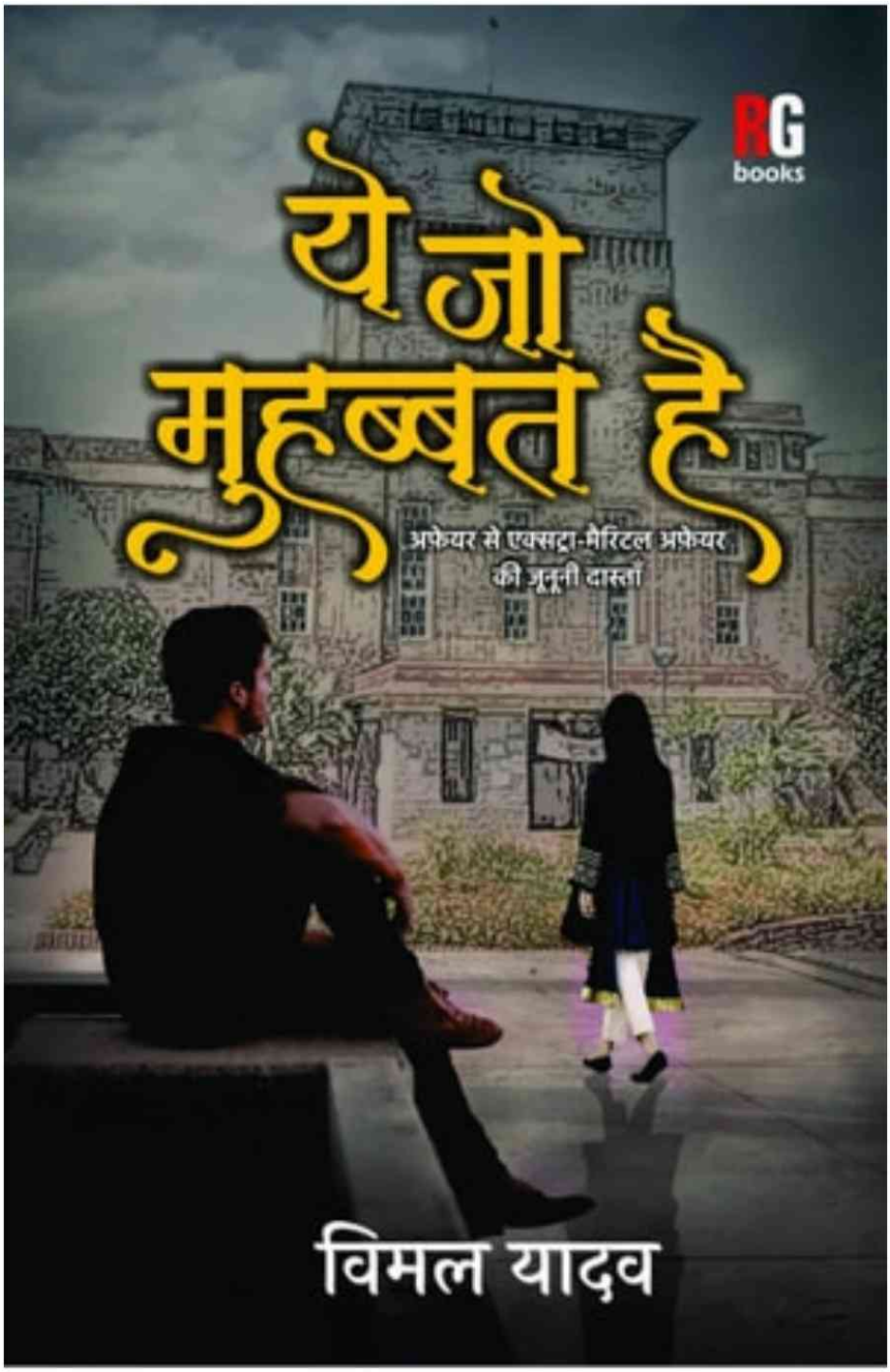
RG
books
ये जो मुहब्बत है
अफेयर से एक्सट्रा-मैरिटल अफेयर
की जूनूनी दास्तां
विमल यादव

ये जो मुहब्बत हैं

उपन्यास

विमल यादव

REDGRAB books

Title : Ye Jo Mohabbat Hai

Author : Vimal Yadav

Published By

Redgrab books Pvt. Ltd.

942, Mutthiganj, Prayagraj, 211003

www.redgrabbooks.com

contact@redgrabbooks.com

Copyright © Vimal Yadav 2022

Printing rights reserved : Redgrab Books Pvt. Ltd., 2022

Cover design and Typeset in Redgrab Books arts

The author asserts the moral right to be identified as the author of this work

This book is entirely a work of fiction and has no resemblance to any person or thing, living or dead. If found any, that will be purely coincidental. I have mentioned several places in Rampur but do not claim it to be exactly the way I have described.

These places may or may not exist. There are no intentions to hurt any individual or group through this story. Its sole purpose is to entertain its audience.

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, and including photocopying, recording, or by any information storage and retrieval system, without the written permission of the Publisher, except where permitted by law.

कहानी लिखने वाला बड़ा नहीं होता है
बड़ा वह है, जिसने कहानी अपने जिस्म पर झेली है

अमृता प्रीतम

Prat के लिए...

मेरी क़लम से

कहते है, प्यार और जंग में सब जायज़ होता है। क्या वाक़ई ऐसा होता है? लोग जंग में भी हारते हैं तो यक़ीनन प्यार में हारने वालों की तादाद कुछ ज़्यादा ही है। कुछ लोगो के लिए प्यार एक ख़ूबसूरत अहसास होता है, लेकिन कुछ की ज़िंदगियाँ इस अहसास की छुअन से वंचित रह जाती हैं, फिर भी इंसान प्यार करता है और जीतने तथा हारने की महीन-सी लकीर पर कोई फिसल जाता है तो कोई पार हो जाता है।

लव में जब सब कुछ ठीक चल रहा होता है तो वो दुनिया की सबसे ख़ूबसूरत चीज़ होती है और जब लव में इंसान टूट कर बिखर जाता है तो वो दुनिया की सबसे बुरी चीज़ बन जाती है। ऐसा क्यों होता हैं यह तो वही बता सकते है, जिन्होंने शिद्दत से प्यार किया हो। वो कहते है न कि प्यार में सारी हसरतें पूरी नहीं होती हैं, कुछ अधूरी भी रह जाती हैं। "ये जो मुहब्बत है" भी कुछ ऐसी ही कहानी है।

इस कहानी को काग़ज़ पर उतारने के लिए लगभग तीन सालों से उलझन में था कि इसे लोगों के सामने बयां करूँ या नहीं, लेकिन आख़िरकार अंदर से एक आवाज़ आई और फिर सोचा कि हर कहानी का अपना सच होता है और इस कहानी को भी सच तक के सफ़र के लिए रास्ता मिलना चाहिए। इस सच तक पहुँचने में कुछ की तो ज़िन्दगी गुज़र जाती है और फिर भी यह सफर अधूरा ही रहता है। "ये जो मुहब्बत है" इस अधूरे सफ़र की पूरी दास्तांन है।

उम्मीद करता हूँ कि "ये जो मुहब्बत है" को पढ़ते हुए आपकों अपनी भावनाओं और अन्दर दबाए हुए प्यार से मिलने का मौक़ा ज़रुर मिलेगा, जो आपको प्यार की नई खोज के साथ-साथ निश्चित ही कहानी में अपनी ख़ुद की परछाईं ढूंढ़ने को बाध्य कर देगा।

विमल

अनुक्रमणिका

1. फिर तेरी कहानी याद आई -1

2. लव एट फर्स्ट साइट

3. नीले रंग का सूट

4. Angel priya

5. चूम लूँ होंठ तेरे

6. दोस्ती की क़सम

7. आशिक़ बनाया आपने

8. फाईट

9. दिल को चुराया तूने सनम

10. बेख़ौफ़-बेपरवाह प्यार

11. वजह तुम हो

12. जन्नत- 2

13. इश्क़ है धोख़ा

14. भुला देंगे तुमको सनम धीरे-धीरे

15. तू बेवफ़ा है

16. मेहँदी लगे हाथ

17. शुक्रिया-शुक्रिया दर्द जो तुमने दिया

18. सुन बे लक्कड़बग्घे

19. पहले प्यार की दूसरी पारी

20. 'V' Silent

21. ज़माने का ड़र

22. ग्रीटिंग कार्ड और घड़ी

23. इन्तज़ार ही इश्क़ है

24. फिर तेरी कहानी याद आई- 2

फिर तेरी कहानी याद आई -1

माया वीर की बाँहो में थी। दोनों एक-दूसरे को अपलक देखे जा रहे थे। दोनों एक-दूसरे को महसूस कर रहे थे। दोनों एक-दूसरे में खोए हुए थे। वीर ने अपने हाथ की अँगुलियाँ माया के चेहरे पर घुमाईं और उसके होठों के नीचे तिल के पास ले जाकर रोक दिया।

“तुम्हारा तिल कितना ख़ूबसूरत है, माया ! दिल करता है इसे चूम लूँ।‘‘ वीर ने शरारती लहज़े में कहा।

“अच्छा। कितनी बार चूमोगे इसे?”

“अनगिनत बार, जब तक मेरे सीने में दिल धड़कता रहेगा तब तक तुम्हें, तुम्हारे तिल, होंठ, जिस्म सभी को चूमता रहूँगा।” वीर ने माया के कान में धीरे-से कहा।

“बस-बस हो गया तुम्हारा मक्खन लगाना, अब मुझे छोड़ो।” माया ने वीर की मज़बूत बाँहों की जकड़ से छुड़ाने की कोशिश करते हुए कहा।

“नहीं, प्लीज़ अब यह दूरी बर्दाश्त के बाहर है।” वीर ने माया को अपने और करीब खींचकर कहा।

“बर्दाश्त के बाहर तो मेरे भी है, मगर समझा करो।” माया ने कहा।

लेकिन वीर उसे छोड़ना नहीं चाहता था। वो चाहता था कि माया उसकी बाँहों में जीवन भर ऐसे ही रहे, वो बस उसे देखता रहे, महसूस करता रहे ,प्यार करता रहें।

“माया, तुम बहुत ख़ूबसूरत हो। दिल करता है तुम हमेशा मेरी बाँहो में ऐसे ही रहो। ऐसे ही हम एक-दूसरे को देखते रहें। ड़र लगता है कि अगर मैंने अपनी पकड़ ढ़ीली की तो तुम मुझसे दूर न हो जाओ। मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूं। आई लव यू यार माया।” वीर ने अपना हाथ माया की कमर से नीचे ले जाते हुए कहा।

"आई लव यू टू बाबा, पर अब छोड़ो मुझे....."

लेकिन माया अपनी बात पूरी कह पाती, उससे पहले ही वीर ने अपने होंठों से माया के होंठों को सिल दिया। माया अब वीर की बाँहों में पिघल रही थी। वीर का स्पर्श माया को बहका रहा था। दोनों एक-दूसरे को किस करते हुए बिस्तर तक जा पहुँचे। अब बिस्तर पर सिलवटें पड़ रही थीं और कमरे में पिन ड्रॉप ख़ामोशी ने अपने पैर पसार लिए थे।

दूसरे कमरे में मोबाइल बज रहा था। फ़ोन की आवाज़ से वीर अपनी पुरानी यादों से बाहर निकला और वो पल धुंएँ की तरह उसकी आँखों के सामने से ग़ायब हो गया। उस पल को सोचते हुए वीर के चेहरे पर एक हल्की-सी मुस्कान तैर गई।

वीर अपने सोफ़े पर बैठा अपनी पुरानी यादों की गलियों से गुज़रकर वापिस वास्तविकता के शून्य में ताक रहा था। रात के ग्यारह बज रहे थे। बाहर बहुत ज़ोरों से बारिश हो रही थी। कमरे में हल्की रौशनी थी। सोफे के सामने मेज़ पर एक व्हिस्की की बोतल जो अपना आधा नशा उतार चुकी थी, दो सिगरेट के पैकेट, ऐश-ट्रे जो सिगरेट के ठूँठों से भरा पड़ा था और एक प्लेट में मसालेदार मूँगफली रखी हुई थी। कमरे में धीमा इंस्ट्रूमेंटल म्यूज़िक बज रहा था और चारों तरफ़ कमरे में तन्हाई पसरी हुई थी।

वीर अपनी टेबल की तरफ़ आगे आया और अपने ख़ाली गिलास में व्हिस्की डाली और उसे एक झटके-से गले में धकेल दिया। फिर उसने एक सिगरेट जला ली और खिड़की की तरफ़ बाहर देखने लगा। बारिश मस्त होकर बरस रही थी । खिड़की पर बारिश की कुछ बूँदें पसरी हुई थीं, जो लगातार अन्दर ताँक-झाँक कर रही थीं।

व्हिस्की अपना काम कर रही थी। वीर की आँखों के आगे हल्का-हल्का धुंधलापन छा रहा था। वीर ने अपनी आँखों को बन्द किया और ख़ुद को फिर से उन्ही यादों

की गलियारो में खड़ा पाया जहाँ वो जाना नहीं चाहता था, लेकिन न चाहते हुए भी वो वहा पहुँच जाया करता था।

"प्लीज़, वीर मुझे वो सब वापिस चाहिए जो मैंने तुम्हें दिया था।" माया ने गुस्से से कहा।

"वो सब क्या, क्या दिया है तुमने मुझे? मेरे पास तो तुम्हारा केवल प्यार है और वो भी अब मुझसे दूर जा रहा है जानबूझ कर। कहाँ है तुम्हारा प्यार, जो मैं तुम्हारी आँखों में देख नहीं पा रहा हूँ। कहीं खो गया है या तुमने ही उसे बाहर निकाल कर फेंक दिया? कहाँ निकाल कर फेंक दिया? किसी कचरे के ड़ब्बे में या अपने पैरो से रौंद दिया? ज़रा दिखाओं तो अपने कठोर पैर, जिनसे तुमने मेरे नाज़ुक प्यार को चींटी की तरह मसल कर रख दिया।" वीर ने माया की आँखों में अपने उस खोए हुए प्यार को ढूंढ़ते हुए कहा।

वीर अब थोड़ा भावुक हो चला था।

"मुझे तुम्हारी कोई बकवास नहीं सुननी। मैं इसके लिए तुमसे मिलने नहीं आई हूँ, मुझे वो सब वापिस चाहिए, बस !"

"अपने पाँच साल के रिलेशन में तुम्हारी यादें हैं केवल मेरे पास, तुम्हारा स्पर्श है, तुम्हारी ख़ुशबू है और तुम्हारे अनगिनत किस हैं। अगर इन्हें मेरे से जुदा कर सकती हो तो ले जाओ, लेकिन तुम इन सब यादों और पलों को मुझसे छीनकर क्या करोगी? फिर इन्हें भी रौंद दोगी तुम।"

"वीर, प्लीज़ मुझे ज़्यादा गुस्सा मत दिलाओ। ये यादें, पल और किस तुम अपने पास रखो। मुझे इनमें से कुछ भी नहीं चाहिए। मुझे अपनी तस्वीरें, लव लैटर्स और गिफ़्ट्स वापिस चाहिए जो मैंने तुम्हें इन पाँच सालों में दिए हैं। मैं तुम्हारे पास अपना कुछ भी नहीं छोड़ना चाहती, कुछ भी नहीं।"माया ने अपनी आवाज़ को थोड़ा तेज़ करते हुए कहा।

"नहीं, वो सब तो मैं तुम्हें नहीं दे सकता। इन सब पर तो केवल मेरा ही हक़ है। यही कहा था न तुमने जब मुझे यह

सब दिया था। फिर आज तुम क्यों इन्हें मुझसे वापस करने को कह रही हो?" वीर ने सड़क की दूसरी तरफ़ देखते हुए कहा।

दोनों सड़क के एक तरफ़ खड़े होकर कभी धीमे तो कभी चिल्लाकर बातें कर रहे थे। वीर से बार-बार 'न' सुनने पर माया का गुस्सा तेज़ होता जा रहा था और उसने अचानक वीर का कॉलर पकड़ लिया।

"मुझे अपना सब कुछ वापिस चाहिए, बस। मुझे तुम पर अब बिल्कुल भी यक़ीन नहीं है। मेरी आगे की ज़िंदगी में तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं है और उसे तुम बर्बाद कर सकते हो। वो सब मुझे लौटा दो, नहीं तो मैं कुछ भी कर सकती हूँ।"माया का गुस्सा अब अपनी पराकाष्ठा पर था।

वीर माया को अचंभित होकर देख रहा था। उसे बिल्कुल भी यक़ीन नहीं हो रहा था कि माया उसके साथ इस तरह का बर्ताव करेगी। उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। अब वीर को भी गुस्सा आने लगा था, लेकिन उसने अपने गुस्से पर कण्ट्रोल किया। वीर ने माया का हाथ अपने कॉलर से हटाया और अपनी कमर के दोनों तरफ़ हाथ रखकर सड़क के दूसरी तरफ़ किनारे पर लगे पेड़ को देखने लगा, जिसके सूखे पत्तें पेड़ से अलग होकर नीचे ज़मीन पर गिर रहे थे। वो सोच रहा था कि इस पेड़ और उन पत्तों को भी तकलीफ़ होती होगी जो एक-दूसरे से जुदा हो रहे हैं।

कुछ सोचने के बाद वीर ने माया की तरफ़ देखा और वो सब कुछ देने से मना कर दिया जिसके लिए माया उससे मिलने आई थीं।

माया ने गुस्से से वीर की तरफ़ देखा और कहा कि ठीक है रखो तुम अपने पास उन्हें, लेकिन अब जो होगा उसके ज़िम्मेदार तुम ख़ुद होगे। इतना कहते ही माया वहाँ से जाने लगी।

माया जब भी मुलाक़ात के बाद बस स्टॉप तक जाती थी तो वीर हमेशा उसके साथ जाता था, लेकिन आज वो नहीं गया

और न ही उसने माया को जाते हुए देखना चाहा। वीर माया को रोक लेना चाहता था। वह उसे कह देना चाहता था कि मत जाओ, मेरी धड़कन हो तुम, लेकिन अब उसे यह नहीं मालूम था कि वो माया को किस हक़ से रोकता? वह सड़क के दूसरे किनारे लगे उस पेड़ के पास गया और उसने ज़मीन पर गिरा एक सूखा पत्ता उठाया और पेड़ की तरफ़ देखने लगा।

दोबारा फ़ोन की आवाज़ के साथ वीर अपने अतीत की गहराई से बाहर आया। उसकी अँगुली में फँसी सिगरेट पूरी तरह राख बनकर फ़र्श पर पसर चुकी थी। उसने महसूस किया कि उसकी आँखों से आँसुओं की दो बूँदे उसके चेहरे पर लुढ़क गई थीं।

"क्यूँ मैं माया की यादों के पिंजरे को तोड़ नहीं पा रहा हूँ? क्यूँ हर रात वो मुझे दिखती है और मेरा हाथ पकड़कर उस अतीत के गलियारे में ले जाती है, जिसमें मैं जाना ही नहीं चाहता और हमेशा की तरह वहाँ अकेला तन्हा छोड़कर चली जाती है? इस तकलीफ़ से मुझे कब छुटकारा मिलेगा? मैं अब थक चुका हूँ उसकी यादों और उसके चेहरे को सिगरेट के धुँए के पीछे छुपाते-छुपाते।" वीर अपने अंतर्मन में ही बातें कर रहा था।

बाहर फ़ोन लगातार बज रहा था। वीर ने उठकर कमरे में चल रहे म्यूज़िक को बन्द किया और दूसरे कमरे मे जाकर फ़ोन देखा तो सत्रह मिस्ड कॉल किसी नए नम्बर से फ़ोन की स्क्रीन पर फ़्लैश हो रहे थे। फ़ोन पर वापिस कॉल करने का वीर का बिल्कुल भी मन नहीं कर रहा था। उसने फ़ोन को वहीं टेबल पर रखा और वापिस अन्दर कमरे मे जाने लगा कि तभी फ़ोन दोबारा बजा। उसी नए नम्बर से कॉल फिर से आ रहा था। वीर ने फ़ोन रिसीव किया।

"अरे, बेवक़ूफ़ है क्या तू? कितनी देर से तुझे कॉल कर रही हूँ, उठा क्यूँ नहीं रहा?"

"कौन बोल रहा है?"

"माधवी बोल रही हूँ, पहले यह बता अभी कहाँ पर है तू।"

"मैं तो दिल्ली में हूँ, लेकिन तुझे मेरा नम्बर कहाँ से मिला?"

"तूने तो अपना पुराना नम्बर बन्द किया हुआ है, तो अजय के पास कॉल किया था। उसी ने तेरा नम्बर दिया है, उसी से पता चला कि तू दिल्ली में है।"

"ठीक है, मुझसे क्या काम है? क्यूँ फ़ोन किया है?" वीर ने थोड़ा कठोर बनते हुए कहा।

"बकवास ना कर। मैं अभी दिल्ली एयरपोर्ट पर हूँ और मेरी दस बजे की ऑस्ट्रेलिया के लिए फ़्लाइट थी। लेकिन अब तेज़ बारिश और तूफ़ान के कारण फ़्लाइट डिले हो गई है और सुबह से पहले कोई फ़्लाइट भी नहीं है, तो सोचा कि तेरे पास सुबह तक रुक जाती हूँ।" माधवी ने एक साँस में सब कह दिया।

"लेकिन तू वहीं एयरपोर्ट के वेटिंग रूम में इन्तज़ार कर सकती हैं, यहाँ आकर क्या करना है। परेशान हो जाएगी और वैसे भी बारिश हो रही है।" वीर ने स्थिति को टालते हुए कहा।

"हाँ, पता है मुझे वेटिंग रूम का, ज़्यादा ज्ञान न दे। मेरे साथ टिप्सी भी है, तो मैं यहाँ कम्फ़र्टेबल फ़ील नहीं कर रही हूँ। इसलिए तुझे फ़ोन किया है। चल बता कहाँ पर आना है? अपना पता दे, मैं कैब करके आती हूँ।"

वीर ने बिना कोई रिप्लाई किए फ़ोन रख दिया और कमरे की दीवार पर टँगी एक तस्वीर को देखने लगा, जिसमें वीर, माधवी और अजय तीनों एक-दूसरे के कंधों पर हाथ रखकर खड़े थे। वीर को माधवी से बात किए हुए तीन साल हो चले थे। माधवी अपनी शादी के बाद अपने पति के साथ ऑस्ट्रेलिया में सैटल हो गई थी। उनके बीच में कभी कोई ऐसी बात या घटना नहीं घटी थी कि तीनों आपस में नाराज़ रहें।

बस, वीर ने ही धीरे-धीरे उन दोनों से दूरियाँ बना ली थीं। हालांकि अजय से कभी–कभी बात हो जाती थी और उसी से वीर को माधवी का पता चला था कि वो अपनी शादी के कुछ महीनों बाद विदेश में सैटल हो गई है। उसका पति अब वहीं जॉब करने लगा था।

"ये टिप्सी कौन है, जिसका नाम माधवी ने फ़ोन पर लिया? शायद वो उसकी बेटी होगी। उस लगा कि माधवी के साथ इस तरह का बर्ताव नहीं करना चाहिए था । वो और उसकी बेटी परेशान हो रही होगी।" वीर ने यही सोचकर अपना फ़ोन उठाया और अपना पता माधवी के नम्बर पर मैसेज कर दिया।

कुछ समय बाद 'ओके, मैंने कैब ले ली है।मैं आ रही हूँ।' का रिप्लाई आया।

वीर ने अपना फ़ोन वापिस टेबल पर रख दिया और खिड़की से बाहर बारिश को देखने लगा। वो अजय और माधवी के बारे में सोचने लगा। कितनी गहरी दोस्ती थी हमारी और आज केवल मेरे ही कारण हम न कभी मिल पाते हैं और न कभी बातें हो पाती है। वो हमारी दोस्ती के भी क्या दिन थे जब हम छुप-छुप कर बीयर और सिगरेट पीते थे, साथ घूमने निकल जाते थे, मस्ती करते थे, फिल्में देखते थे। एक बार तो हम तीनों व्यस्क फ़िल्म देखने के लिए थियेटर में चले गए थे, फिर हमें बीच में ही वापिस आना पडा था। वो दिन कितने मस्ती भरे और सुकून वाले पल थे, लेकिन आज यह दोस्ती की नाव कितने ही किनारों से टकराकर बिखर गई थी, जिसका कारण कोई और नहीं केवल मैं था।

वीर ने अपना एक पैग बनाया और वापिस खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया।

तक़रीबन चालीस मिनट के बाद दरवाज़े पर घंटी बजी। वीर ने घड़ी की तरफ़ देखा 12:10 का समय हो रखा था। उसने जाकर दरवाज़ा खोला तो सामने माधवी खडी थी। उसने

ब्लैक कलर की जींस और पिंक कलर का टॉप पहना हुआ था। पैरो में स्पोर्ट शूज़ और बाल खुले हुए थे। गोद में उसने टिप्सी को लिया हुआ था, जो उसके कंधे पर सर रखकर सोई हुई थी।

"हे... कैसा है? "

"मैं ठीक हूँ, तुझे आने में कोई दिक़्क़त तो नहीं हुई।"

"नहीं, कोई दिक़्क़त नहीं हुई.... बस बारिश के कारण सड़को पर थोड़ा ट्रैफिक ज़्यादा था।"

"ओके.... प्लीज़ अन्दर आ ना।"

बड़े शहरों और क़स्बों का एक फ़र्क़ यह भी होता है कि शहरों की बारिश इतनी शांति से होती है कि कुछ भी रोक नहीं पाती है और गांव में जब बारिश होती है तो सब कुछ रुक जाता है, सिर्फ़ बारिश होती है।

माधवी अन्दर आई। उसने अपना ट्रॉली बैग दीवार के साथ खड़ा कर दिया और अपना हैंड़बैग सामने टेबल पर रख दिया। टिप्सी को माधवी ने बेड़ पर सुला दिया और वीर की तरफ़ मुस्कुराते हुए देखने लगी।

"क्या हुआ?" वीर ने पूछा।

"कुछ नहीं"

"यह तुम्हारी बेटी बहुत क्यूट है।"

"हम्मम.... अपनी मम्मा पर गई है ना। इसलिए बहुत क्यूट है।" माधवी ने जवाब दिया।

"कितने साल की हो गई है टिप्सी?" वीर ने टिप्सी को देखते हुए पूछा।

"अगले महीने पूरे दो साल की हो जाएगी।" माधवी ने टिप्सी के जूते उतारते हुए कहा।

माधवी जूते उतारने के बाद वहीं बैड़ पर बैठी वीर को ताक रही थी। वीर उसके सामने खड़ा था। वो बेड़ से खडी हुई

और वीर के पास आकर सीधे उसे गले से लगा लिया। वीर ने अपना चेहरा दाईं तरफ़ घुमा लिया ताकि उसे व्हिस्की की बदबू ना आ जाए।

बहुत अच्छा लगता होगा जब कोई पुराना दोस्त काफ़ी समय बाद मिलता है। कुछ अलग ही फ़ीलिंग्स होती होंगी। लेकिन वीर को कुछ भी ऐसा महसूस नहीं हो रहा था। शायद, उसमें अब किसी भी प्रकार की फ़ीलिंग्स बची ही नहीं थीं। एक ज़िन्दा इंसान के लिए इससे भयावह स्थिति क्या हो सकती है, जब वो किसी रिश्ते को महसूस ही न कर पाए। वह एक ऐसी सूखी नदी की तरह होता है, जिसमें पानी बहना बरसों पहले बन्द हो चुका हो।

"और कैसा है तू।" माधवी ने पूछा?

'मैं ठीक हूँ।"

"लग तो नहीं रहा।" माधवी ने कमरे में चारों तरफ़ देखते हुए कहा।

"नहीं, बिल्कुल ठीक हूँ मैं।"

"अच्छा, तेरे जैसे ठीक होते हैं क्या? हुलिया देखा है तुमने अपना? किसी अघोरी साधु की तरह दाढ़ी बढा रखी है, बाल बढ़ा रखे है, शराब पी रखी है, सिगरेट पीकर होंठों की सतह काली पड़ चुकी है, होंठों में दरारें आ चुकी हैं और फ़्लैट तो माशाअल्लाह ग़ज़ब का बना रखा है तूने। सफ़ाई किए हुए लगता है कि महीनों हो गए हैं। कमरे में एक तरफ़ शराब की ख़ाली बोतलें पडी हुई हैं। कुछ कपड़े बेड़ पर बिखरे हुए हैं। मोजे बिस्तर के नीचे पड़े हुए हैं। अगर ऐसे ठीक होते हैं तो फिर तो बहुत ठीक है तू।"

"अच्छा, चल छोड़ ना। तू फ्रेश हो ले। काफ़ी थकी हुई लग रही है। तब तक मैं क़ॉफी बनाता हूँ तेरे लिए।" वीर ने बात काटते हुए कहा।

माधवी बस खड़े-खड़े वीर को घूरे जा रही थी। शायद कहना चाहती थी कि इतने सालों के बाद मिलेगा तो ऐसा मिलेगा, यह कभी सोचा नहीं था। हाँ, यह भी सच है कि वीर का हुलिया किसी विलेन की तरह लग रहा था और वैसे भी हीरो टाइप बनना तो वीर को कभी पसन्द ही नहीं था। वीर उससे अपनी तारीफ़े और नहीं सुनना चाहता था, इसलिए उसने अपने क़दम क़ॉफी बनाने के लिए किचन की तरफ़ बढ़ा लिए।

"मैं क़ॉफी नहीं पीती, अदरक वाली चाय बना ले।" माधवी ने अपने ट्रॉली बैग से तौलिया निकालते हुए कहा।

"हाँ, ठीक है। तू फ्रेश हो ले तब तक, मैं चाय बनाता हूँ।" वीर ने भगौने में पानी डालते हुए कहा।

"अच्छा, सुन। एक टी-शर्ट और लॉवर दे अपना। जींस में मुझे कम्फर्ट फील नहीं हो रहा है।" माधवी ने कहा।

"हाँ ज़रूर। फ्रिज में होंगे, ले ले।"

"फ्रिज में।" माधवी ने अचंभित होकर किचन के दरवाजे पर आकर कहा।

"हाँ, वो दरअसल मेरे पास करीने से कपड़े रखने के लिए अलमारी तो है नहीं और वैसे भी मैंने बीयर पीनी छोड़ रखी है तो फ्रिज को भी तो किसी काम में लेना था।" वीर ने अदरक कूटते हुए कहा।

"फ्रिज में कपड़े कौन रखता है? हद है,यार तेरी भी।" माधवी ने दायाँ हाथ अपनी कमर पर रखते हुए कहा।

माधवी ने फ्रिज से टी-शर्ट और लॉवर लिए और वॉशरूम में फ्रेश होने चली गई। वीर वहीं किचन में चाय को उबलते हुए देखता रहा।

माधवी वॉशरूम से फ्रेश होकर बाहर आ गई थी।

"यह लो तुम्हारी अदरक वाली चाय।" वीर ने कहा।

"थैंक्यू।"

"तुम्हारी चाय किधर है?" माधवी ने वीर के ख़ाली हाथों को देखते हुए कहा।

"मैं रात को चाय नहीं पीता।"

"अच्छा, देखा मैंने , तुम तो रात को शराब पीते हो।" माधवी ने चाय का पहला सिप लेते हुए कहा।

शायद उसको वीर के मुँह से बदबू आ गई होगी या फिर उसने अन्दर कमरे में टेबल पर रखी शराब की बोतल को देख लिया होगा।

"हाँ... कभी-कभी। जब-जब रात मुझ पर भारी होने लगती है तो फिर इस शराब का ही सहारा लेता हूँ। यह दिल का भारीपन थोड़ा कम महसूस होने देती है और फिर रात मुझे कम दर्द देकर जाती है।" वीर ने अन्दर वाले कमरे में जाते हुए कहा।

वीर सामने सोफ़े पर बैठ गया और माधवी उसके सामने बैड़ पर बैठ चुकी थी। माधवी चाय पीते हुए बिना कुछ कहे वीर को देखे जा रही थी।

"अगर तुम कम्फ़र्टेबल हो तो क्या मैं एक-दो पैग ले सकता हूँ?" वीर ने अपनी तलब को काबू न करते हुए पूछा।

"हाँ-हाँ, ले लो। जब मन में तलब उठ ही रही है तो पीना भी चाहिए। जब तबाह होने की ठान रखी है तो पूरी तरह से हो। वैसे भी इस शराब और सिगरेट की वजह से बहुत ज़िंदगी धुआँ होती है। लत बुरी चीज़ है चाहे सिगरेट की हो, शराब की या इश्क़ की। और तुझे तो तीनों की ही लत है।" माधवी ने ताना मारते हुए कहा।

ऐसा नहीं है कि वीर शराब का आदी हो चुका था कि अगर उसके सामने कोई बैठा हो तो भी उसे पीना पड़े, लेकिन माधवी के आने के कारण वीर का नशा आज उतर चुका था और रात अभी बाक़ी थी।

वीर ने अपना एक पैग बनाया और एक सिगरेट जला लीऔर अपने फ़ोन में कुछ देखने लगा। माधवी ने चाय ख़त्म की

और कप सामने टेबल पर रख दिया। वीर ने माधवी की तरफ़ देखा तो वो उसे ही देख रही थी। शायद पूछना चाहती थी कि यह क्या कर रहा हूँ मैं, ऐसा भी क्या जीवन से निकल गया जो उस खालीपन को शराब से भर रहा है? और आखिरकार माधवी ने पूछ ही लिया।

"तो अपने ऐसे हालात क्यूँ बना रखे हैं तूने?" माधवी ने वीर के दोनों हाथों को देखते हुए कहा, जहाँ एक हाथ में सिगरेट जल रही थी और दूसरे हाथ में शराब से आधा भरा गिलास था।

"कैसे हालात? मैं तो एकदम मस्त हूँ।" वीर ने कहा।

"अगर मस्त लोग तेरे जैसे होते हैं तो हम तो इस दुनिया में exist ही नहीं करते। हालात देख तू अपने, ख़ुद से दूर हो चुका है। दोस्तों से तेरा कोई contact नहीं है। ना कभी बातें करता है, ना मिलता है, ना मेरी और अजय की शादी में आया। क्या चाहता है तू? क्यूँ हमारी दोस्ती में अब वो बात नहीं रहीं? मैं और अजय तुझे कितना मिस करते है; ये तो तुझे पता भी नहीं होगा। जब भी मैं अजय से बात करती हूँ तो तेरे बारे में ज़रूर पूछती हूँ कि कैसा है वो? लेकिन अब उसे भी इतना कहाँ पता होता है तेरा? वो बस कह देता है कि हाँ, ठीक है वो। आज आके देखा कि तू तो अपनी मस्त दुनिया में मर रहा है। हाँ, जीना तो नहीं कह सकती इसे, पर बस इतना कहती हूँ कि तू यह ठीक नहीं कर रहा है। न ख़ुद के साथ, न अपने परिवार के साथ और न ही अपने दोस्तों के साथ। ये उसी माया के कारण है न?"

माया का नाम सुनते ही वीर ने माधवी की तरफ़ देखा और उसी पल नज़रें चुराकर खिड़की से बाहर देखने लगा। माधवी लगातार बोले जा रही थी और वीर चुपचाप उसे सुन रहा था । वीर को अपनी आँखों में कुछ गीलापन महसूस हुआ और वो खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया, लेकिन माधवी का लगातार सुनाए जाना जारी था।

"वीर, अब तू समझ, वो तुझे छोड़ के जा चुकी है। अब ख़त्म कर ये सब । निकल उसकी यादों से बाहर और ध्यान दे अपने ऊपर। जब वो अपनी शादीशुदा लाइफ़ में मस्त है तो तू भी अपनी ज़िंदगी जी ना, अब कोई तू अकेला तो है नहीं इस दुनिया में जिसके साथ ऐसा हुआ है। अनगिनत लोग ऐसे हैं जिनके साथ ऐसा हुआ है और आगे भी होता रहेगा, लेकिन वो जीना थोड़े ना छोड़ देते हैं। जब एक लड़की किसी लड़के को इन हालात में छोड़ती है तो कोई दूसरी लड़की ही उसे इन हालात से निकाल सकती है। तो तू भी अब इस पागलपन से बाहर निकल और किसी लड़की को पसन्द कर, उससे मिल, शादी कर। याद रख,मोहब्बत उससे भी हो जाएगी एक दिन, समझा।"

वीर बस खिड़की से बाहर की तरफ़ देखे जा रहा था, और बिना कुछ कहे माधवी की बातों को सुन रहा था।

"वीर, बोल न कुछ, चुपचाप सुने जा रहा है, बस।" माधवी ने कहा।

"क्या बोलूं सब देख ही रही है तू तो, तुझसे अब कुछ छुपा तो है नहीं" वीर ने कहा।

"तभी कह रही हूँ कि शादी कर ले। फिर यह सब ख़त्म हो जाएगा और दोबारा वो दिन लौट आएँगे।" माधवी ने वीर को समझाते हुए कहा।

"हमने तो एक ही शख़्स पर चाहत ख़त्म कर दी। मोहब्बत किसे कहते हैं, हमें मालूम ही नहीं, और वैसे भी दूसरी या तीसरी मोहब्बत पहली मोहब्बत के अवशेषों पर बनी ऐसी इमारत होती है, जिसकी बुनियाद खोखली होती है।" वीर ने बारिश की बूँदों से अपने चेहरे पर आई आँसुओं की बूँदों से मिलाते हुए कहा।

"तुझे समझाना तो बेकार है।"

"अच्छा सुन, कुछ खाने को है क्या? भूख लग रही है।" माधवी ने माहौल को हल्का करते हुए कहा।

"हम्मम.. अभी खाना ऑर्डर कर देता हूँ।" वीर ने फ़ोन उठाते हुए कहा।

"अब रात के एक बज रहा है। खाना मिल जाएगा क्या?" माधवी ने घड़ी की तरफ़ देखते हुए कहा।

"हाँ, मिल जाएगा। यही नीचे गली में एक होटल है, वो दे जाएगा।" वीर ने फ़ोन पर नम्बर डायल करते हुए कहा।

माधवी ने खाना खा लिया था। वो अब बाहर वाले कमरे में टिप्सी को दूध पिला रही थी। वीर ने अब तक कुछ नहीं खाया था।उसे शायद भूख नहीं लग रही थी क्योंकिं अभी उसे और पीना था। वीर को लग रहा था कि ऐसे तो माधवी उसका पीछा नहीं छोड़ने वाली है तो अच्छा है कि पूरा नशे में टल्ली होकर गिर जाए। जब तक माधवी बाहर टिप्सी को दूध पिला रही थी तब तक वीर दो-तीन पैग ओर लगा चुका था।

कुछ समय बाद माधवी अन्दर कमरे में आई।

"टिप्सी सो गई क्या?" वीर ने पूछा

"हा, वो सो गई है। रात को उसे दो बार दूध पिलाना पड़ता है।" माधवी ने वीर के साथ सोफ़े पर बैठते हुए कहा।

"वैसे वीर, माया ने तेरे साथ ग़लत किया। लगता है उसे वफ़ा रास नहीं आई जो उसने बेवफ़ाई चुनी। सब कुछ गड़बड़ कर दिया उसने। क्या उसे दिखा नहीं कि तू उससे कितना प्यार करता है और उसके बिना रह ही नहीं सकता? पर वो मतलबी अपना मतलब निकाल कर चली गई। तेरा सब कुछ बर्बाद कर दिया उसने।" माधवी ने वीर को देखते हुए कहा।

वीर थोड़ी देर चुप रहा और लगातार खिड़की से बाहर देखता रहा। उसे माधवी से 'बेवफ़ा' और 'मतलबी' शब्द सुनकर बुरा लगा। वो माया के लिए किसी से भी ग़लत नहीं सुन सकता था, लेकिन माधवी काफ़ी साल बाद उससे मिली थी, इसलिए

वीर ने माधवी को कुछ नहीं कहा। चुपचाप खड़ा होकर बस माधवी को सुनता रहा। माधवी लगातार बोले जा रही थी। वीर ने अपना एक हाथ खिड़की से बाहर निकाला तो बारिश की कुछ बूँदें उसकी हथेली पर गिर गईं। वीर हथेली को अपने चेहरे के पास लेकर आया और धीरे-से बड़बड़ाया 'बारिश की तरह था हमारा प्यार।' वीर माधवी की तरफ़ मुड़ा और उसने कहा

"माधवी, तुझे पता है बारिश की तरह था हमारा प्यार। सुकून भी दिया और फिर कीचड़ भी किया। सारा दोष माया का ही नहीं था। हम दोनों बराबर के दोषी हैं इस स्थिति के लिए। कुछ ग़लतियाँ मैंने भी की है तो कुछ गुनाह उसने भी किए हैं। हाँ, फ़र्क़ बस इतना है कि एक इश्क़ निभा ना सका और दूसरा भुला ना सका। मैं तो अभी तक उन दोषों की सज़ा काट रहा हूँ और माया अब अपनी दुनिया में खुश हो चुकी है। मैं अब तक यह समझना ही नहीं चाहता कि कुछ चीज़े जीवन में पागलों की तरह चाहते हुए भी नहीं मिलतीं और माया को जो मिला, वो उसमें अपना सामंजस्य बैठा चुकी है। और वैसे भी तो इस दुनिया में यही तो चलता है कि वफ़ा गुनाह है और धोखा बाइज़्ज़त बरी है। तुझे क्या लगता है, मैंने उसे भुलाने की कोशिश नहीं की? हर रोज़ करता हूँ, लेकिन जितनी बार भी उसे भुलाने की कोशिश करता हूँ, उतना ही उसके प्यार के समुन्दर में ख़ुद को ज़्यादा डूबा हुआ पाता हूँ। प्रेम में अक्सर यही तो होता है, कई बार प्रेम छूट जाता है, वह छूटता हुआ दिखता भी है, मगर छूट कभी नहीं सकता बस, केवल रूप बदल लेता है। कभी घृणा, कभी चिढ़, कभी शिकायत बनकर रहता है।

प्रेम पहले अंधा करता है फिर दृष्टि देता है। यहाँ जो सँभल जाता है, उसे उजाला नसीब होता है और जो ड़गमगाता है, वो मोहब्बत की अँधेरी गलियों में भटकता रहता है रोज़ हर दिन, हर पल। प्रेम कई मौतें मर सकता है, लेकिन किसी भी एक पक्ष द्वारा संबंध का तोड़ा जाना इतना दर्द और घृणा पैदा

कर सकता है कि अनुमान नहीं लगाया जा सकता। लेकिन ख़ैर छोड़ो, अब तो यह रिश्ता उस मोड़ तक पहुँच चुका है, जहाँ न उसको आए शर्म और न मुझको आए मौत। ख़ैर, कुछ भी होता, लेकिन मैंने कभी भी यह उम्मीद नहीं की थी कि वो इतनी जल्दी अपनी दुनिया में खुश हो जाएगी। ऐसी दुनिया, जहाँ मेरा नाम तक नहीं है। मेरी मोहब्बत का यह अंजाम तो जायज़ नहीं कि मेरे बिस्तर की सिलवटों में उसका नाम नहीं।"

वीर इतना बोलकर चुप हो गया था। शायद अब वो इसके आगे बोलना ही नहीं चाहता था। माधवी वीर की तरफ़ सारी कहानी जानने की उत्सुकता से देखे जा रही थी।

"वीर, जो तेरे अन्दर भरा हुआ है न, वो निकाल दे अब। तभी तुझे थोड़ा सुकून मिलेगा इस तकलीफ़ से। मुझे बता कब, कैसे, क्या हुआ था तुम दोनों के बीच? हालांकि मुझे थोड़ा-बहुत अजय से इस बारे में पता चला था, लेकिन उसने भी मुझे कभी पूरी बात बताई ही नहीं कि कैसे तुम दोनों अलग हुए? ऐसी क्या परिस्थितियाँ हो गईं जो वो तुझको छोड़ के चली गई।" माधवी ने वीर के हाथों को अपने हाथों में लेते हुए कहा।

"नहीं यार, मैं उसके बारे में कुछ भी बात नहीं करना चाहता हूँ। एक तो मैं उसे रोज़ भूलने की नाकाम कोशिश करता हूँ और तू फिर से मुझे वो सब बात करने को मत बोल। प्लीज़, छोड़ इस बात को। बचपन में हम सोचते थे कि याद कैसे किया जाए, याद करना कितना मुश्किल है लेकिन अब समझ में आया कि भूलना याद करने से भी ज़्यादा मुश्किल है, और वैसे भी तेरी कल सुबह की फ़्लाइट है तो तुझे सो जाना चाहिए। सुबह जल्दी निकलना होगा तुझे।" वीर ने कहा।

"हाँ, सो जाऊँगी, पर पहले तुझे अपनी कहानी बतानी होगी।"

"नहीं, प्लीज़ ऐसा मत कर। मैं बिल्कुल भी उन पलों को याद नहीं करना चाहता।"

"नहीं, बताना तो होगा। कम-से-कम मैं बाद में टिप्सी को बता तो सकूँगी कि मेरा एक दोस्त ऐसा भी है जो सच्चा आशिक़ टाइप है।" माधवी ने सुनने के लिए सोफ़े पर बैठते हुए कहा।

वीर थोड़ी देर तक दीवार की तरफ़ शून्य में देखता रहा और उसने अपने गिलास में बची शराब को एक बार में ही गले में उडेल दिया और वहीं खिड़की से सटकर खड़ा हो गया। वीर को अब न चाहते हुए भी माधवी को बताना पड़ रहा था क्योंकि उसे पता था कि माधवी अब अपनी ज़िद को पूरा करवा कर ही मानेगी। बिना पूरी बात सुने वो पीछा छोड़ने वाली नहीं थी। वीर ने माधवी की तरफ़ देखा, जिसकी आँखों में इस नाकाम, अधूरी प्रेम कहानी को जानने की लालसा साफ़-साफ़ दिख रही थी। वीर ने बोलना शुरू किया।

लव एट फ़र्स्ट साइट

नारनौल एक ऐतिहासिक नगर है, जो हरियाणा के दक्षिण में पड़ता है। इस नगर को लेकर अनेक किवंदन्तियाँ और गाथाएँ प्रचलित हैं। महाभारत काल में इसे 'नरराष्ट्र' के रूप में जाना जाता था। प्रचलित है कि यह नगर पहले भारजंगल से ढका हुआ था और शेरों का ठिकाना था। बाद में जंगलों को काटकर यह नगर बसाया गया और यह एक व्यापारिक केन्द्र बन गया।

शेरशाह सूरी का जन्म नारनौल में हुआ था। अकबर ने यहाँ बीरबल के छत्ते का निर्माण करवायाँ। शाह कुली ख़ां ने यहाँ जलमहल बनवाया था। नारनौल अनेक ऐतिहासिक इमारतों का महत्वपूर्ण दर्शनीय स्थल है (यह गूगल से लेकर चिपका दिया है)।

नारनौल नगर के सरकारी अस्पताल के सामने झोंपड़ीनुमा बनी चाय की दुकान में वीर, आदि और नीलेश, तीनों चाय पी रहे थे। सुबह के दस बज रहे थे। वीर और नीलेश बी.एस.सी. सेकंड़ ईयर में थे और आदि फ़र्स्ट ईयर में था। हालांकि तीनों एक-दूसरे को पहले से ही जानते थे। तीनों ने बारहवीं एक साथ एक ही स्कूल से उतीर्ण की थी। वीर और नीलेश ने अपने बारहवीं के अंक देखकर ही विचार कर लिया था कि उन्हें बी.एस.सी. करने के लिए कालेज में दाख़िला ले लेना चाहिए और आदि ने बारहवीं के बाद अपना एक साल एम.बी.बी.एस. की तैयारी में खपा दिया था और उसके बाद उसने कालेज में दाख़िला लिया था। इसलिए आदि दोनों का जूनियर था, लेकिन इससे इन तीनों को घंटा कोई फ़र्क़ पड़ने वाला था। इनका पढ़ना-लिखना, जीना-मरना, मस्ती करना सब एक साथ ही होता था। हालांकि नीलेश पढ़ाई और क्लास लेने के प्रति सजग था, लेकिन नीलेश भी अधिकतर इनके साथ ही

मिलता था क्योंकि वीर और आदि उसे इतना क्लास लेने का मौक़ा ही नहीं देते थे।

ख़ैर, आज भी तीनों चाय की दुकान पर बैठे किसी सोनी का इन्तज़ार कर रहे थे।

"भैंचो, यह सोनी कहाँ रह गया? आया क्यूँ नहीं अभी तक?" वीर ने मोबाइल की स्क्रीन पर टाइम देखते हुए कहा।

"अरे, बता तो दिया था न कि कहाँ पर आना है?" आदि ने अपनी बाजुओं पर हाथ घुमाते हुए कहा।

"हाँ, आज सुबह ही उससे बात हुई थी तो बताया था कि यहीं चाय की दुकान पर आना है।" वीर ने दरवाजे की तरफ़ देखते हुए कहा।

"अरे यार, मुझे क्लास भी लेनी है। पहला पीरियड़ 09:30 पर शुरू हो चुका है और मैं अभी तक यहीं बैठा हूँ। तुम लोग यह अपना जल्दी ख़त्म करो।" नीलेश ने दोनों को देखते हुए कहा।

"ख़त्म तो तभी होगा जब अपना रैंबो यह शर्त जीतेगा और सोनी को पार्टी देनी पड़ेगी।" वीरे ने आँखों की भौंहें ऊपर चढ़ाते हुए कहा।

दरअसल, सोनी और आदि में पंजा लड़ाने की शर्त लग गई थी। आज का दिन तय किया गया था, पंजा लड़ाने के लिए। और जो भी हारेगा, उसे तीनों को जूस और पैटीज़ की पार्टी देनी पड़ेगी। तो आज इसी दंगल के लिए सोनी का इन्तज़ार हो रहा था।

"अबे चूतिए, कहाँ रह गया था तू?" वीर ने सोनी को दुकान के अंदर आते ही कहा।

"कुछ नहीं भाई वीर, बस थोड़ा लेट हो गया, लेकिन आ तो गया। अब यह बता कि इन दोनों में से किसको हराना है?" सोनी ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा।

"बड़ा जल्दी में है तू, कहाँ जाएगा ?" वीर ने एक सिगरेट सुलगाते हुए कहा।

"भाई, बस इसे हराकर फिर जिम करने भी जाना है।" सोनी ने अपनी टी-शर्ट की बाजू को ऊपर चढ़ाते हुए कहा।

पंजा लड़ाने की प्रतिस्पर्धा आदि और सोनी के बीच शुरू हो चुकी थी। दोनों पूरी ताक़त के साथ एक-दूसरे को हराने में लगे थे, यह दोनों के चेहरों के हाव-भाव से साफ़ पता चल रहा था। चंद ही मिनटो में फ़ैसला हो गया था। आदि जीत गया था। तीनों के चेहरे पर जीत की खुशी कम, ब्लकि पार्टी की खुशी ज़्यादा थी।

"साला, आज तबीयत सुबह से ही ख़राब है, वरना आज तो यह गया था समझो।" सोनी ने टेबल पर हाथ मारा और जाने के लिए खड़ा हो गया।

"भैंचो, जूस और पैटीज़ का ऑर्डर और पैसे, दोनों देते जाना।" वीर ने चुटकी ली तो तीनों दोस्त खिलखिलाकर हँस पड़े।

पार्टी लेने के बाद तीनों नीलेश की बाइक से कालेज पहुँच चुके थे। नीलेश क्लास अटेंड करने के लिए चला गया था तथा वीर और आदि, दोनों कॉरीडोर में घूम रहे थे। फ़र्स्ट ईयर में नए चेहरे देखने को मिल रहे थे। रंग-बिरंगे कपड़ो में लड़कियाँ तितलियों की तरह हर जगह दिख रही थीं। कुछ लड़के अलग-अलग जगहों पर खडे होकर लड़कियों को घूर रहे थे। हालांकि वो दोनों भी यही कर रहे थे।

"अरे यार, इसे देख। क्या ग़ज़ब है भाई।" आदि ने सामने से जाती एक लड़की को देखते हुए कहा।

"लगता है, इस बार तो फ़र्स्ट ईयर वाले लड़कों की मौज हो गई। भैंचो, इतना ग़ज़ब स्टॉक तो पिछले साल भी नहीं आया था।" वीर ने कॉरीडोर में लड़कियों को देखते हुए कहा।

"भाई, अब बहुत सहन कर लिया। अब दोनों भाई सिंगल नहीं रहेंगे। अबकी बार तो ड़बल होके ही रहेंगे, चाहे प्रपोज़ के साथ-साथ रिक्वेस्ट भी क्यूँ ना करनी पड़े।" आदि ने वीर के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

"हाँ यार, अबकी बार कुछ न कुछ तो करना ही पड़ेगा। इस बार बाज़ी मारनी होगी। अगर सेकंड़ ईयर में भी सिंगल ही रहना पड़ा तो मैं अपनी अन्तरात्मा को क्या जवाब दूँगा।" वीर ने सामने खुले आसमान की तरफ़ देखते हुए कहा।

"सेम हीयर भाई, अपना भी यही फ़ाइनल है अब तो।" आदि ने चेहरे पर कॉन्फ़िडेंस लाते हुए कहा।

"तो फिर चल, सुट्टा लगा के आते है।" दोनों जय-वीरू की तरह कालेज से निकल गए।

अगले दिन तीनों कालेज सही समय पर पहुँच चुके थे। यह इन तीनों का रोज़ का काम था। बिल्कुल ठीक समय पर कालेज पहुँचना, लेकिन कलास अटेंड केवल नीलेश करता था। बाकी वीर और आदि केवल टाइमपास और ड़बल होने की उम्मीद से ही आते थे। आज भी नीलेश अपनी क्लास में था और वो दोनों हमेशा की तरह कॉरीडोर में हाथों में किताबें पकड़े सीढ़ियों के सामने खड़े लड़कियों को आते-जाते देख रहे थे। आदि तो हर लड़की की ख़ूबसूरती का कायल हो रहा था। सभी को देखकर उसकी आहें निकल रही थीं, लेकिन वीर ऐसी लड़की की तलाश में था जो उसकी आहें निकलवा भी सके और महसूस भी कर सके। तभी वीर की नज़र सामने आती एक लड़की पर पड़ी। वीर उसे देखता ही रह गया। उस लड़की के चेहरे की आभा देखते ही बनती थी। लौंग का लश्कारा, सुरमयई और बड़ी आँखें, हल्की झुकी पलकें, बिखर के आते उसके बाल, सांवला रंग और साथ में पहना कत्थई रंग का सूट वीर पर क़यामत ढहा रहा था। वीर ने अपने दिल और साँसों, दोनों को सँभालकर आदि से पूछा,"भाई यह कौन है जिसको देखते ही

साँसें रूक गईं और नसों में रक्त अपनी औकात से तेज दौड़ने लगा?"

"कौन यह?" आदि ने लड़की की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

"हाँ, यही। मिल गई भाई, जिसके लिए मैं फ़र्स्ट ईयर से सिंगल से डबल होने की जुस्तजू में भटक रहा था। पता कर इसका।" वीर ने तलाश पूरी हो जाने के भाव को चेहरे पर उतारकर कहा।

"ठीक है, पता करता हूँ।" आदि ने कहा।

थोड़ी देर बाद आदि उसी चाय की दुकान में पहुँचा, जहाँ वीर और नीलेश पहले से उसका वहाँ इन्तज़ार कर रहे थे। "पता चल गया भाई, उसके बारे में।" आदि ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा।

"हाँ तो बता न, देर क्यूं कर रहा है।" वीर ने कहा।

"उसका नाम माया है और इसी साल फ़र्स्ट ईयर में दाख़िला लिया है। बस, इतना ही पता चल सका।" आदि ने कहा।

"इतना ही तो पता करना था मेरे रैंबो। आगे का काम तो तेरे भाई का है।" वीर ने कहा।

"सच में कोई पसन्द आ गई क्या तेरे को? मुझे भी तो दिखा, कौन है वो?" नीलेश ने चाय की चुस्की लेते हुए कहा।

"हाँ, दिखा देंगे। पहले मैं तो देख लूँ उसे जी भरकर।" वीर ने आदि के लिए चाय लाने का इशारा करते हुए कहा।

"पसन्द तो आ गई तुझे, लेकिन थोड़ा सँभल कर करना जो भी करना हो" नीलेश ने चिन्ता ज़ाहिर करते हुए कहा।

"भाई ऐसा है, किसी लड़की को पसन्द करने के लिए उसमें दो चीज़ें होना ज़रूरी है। एक तो उसकी आँखों में छिपा दर्द और दूसरा उसके होंठों पर तैरती मुस्कान। और मेरी माया के पास तो ये दोनों ही है। और रही बात सँभलने की, तो भैंचो

ऐसा है कि अब तक सँभल ही तो रहे थे। अब समय आया है प्यार में डगमगाने का।" वीर ने काल्पनिक तौर पर माया को देखते हुए कहा।

"मेरी माया, क्या बात है?" नीलेश और आदि ने हँसकर चुटकी ली।

"हाँ, सालो, मेरी माया और आज से भाभी है तुम्हारी।" वीर ने कहा।

"अच्छा एक बात बता। उस कविता में क्या कमी थी, जिसने तुझे कुछ महीने पहले प्रपोज़ किया था और तूने इंकार कर दिया था। मेरे अनुसार तो इस माया से कविता ज़्यादा ख़ूबसूरत थी।" आदि ने कहा।

"कविता भी अच्छी लड़की थी, लेकिन बॉस, वो मेरे टाइप की नहीं थी। ख़ूबसूरत होगी वो, लेकिन उसकी ख़ूबसूरती ने दिल को टच नहीं किया। और वैसे भी बात ख़ूबसूरती की नहीं थी। हर किसी की अपनी ख़ूबी होती है। माया में कुछ ऐसा है कि उसे देखते ही अलग ही महसूस हुआ। उसे देखा तो लगा कि साला चौरासी लाख योनियों से गुज़रकर इंसान के रूप में मैंने सिर्फ इसलिए ही जन्म लिया है कि उसे प्यार कर सकूँ। एक अलग ही बात है उसमें यार, जिसको देखते ही साँसें अपना संतुलन खो देती हैं। शरीर में अलग ही थरथराहट होती है। रक्त तेज़ी से बहने लगता है। कुछ अलग ही है उसमें। तुम लोग नहीं समझोगे।" वीर ने कहा।

"भाई, इतना भी संतुलन मत खो प्यार में। एक बात याद रख कि प्यार-मोहब्बत-इश्क़ धोखा है,अभी भी पढ़ लो मौक़ा है। और मुझे भी पढ़ने दो। तुम लोगों के चक्कर में साला रोज़ कोई ना कोई क्लास मिस हो रही है।" नीलेश ने तंज़ कसा।

"यह देखो, अभी तक प्यार के 'प' तक भी नहीं पहुँचा और न ही अभी तक प्यार की कश्ती में हिचकोले खाए, पर यह अपना भाई पहले ही नकारात्मक ज्ञान पेल रहा हैं। भाई पहले

प्यार तो होने दे, फिर देखेंगे आगे का क्या होता है।" वीर ने अपनी बात रखी।

तीनों अपनी चाय ख़त्म कर अपने-अपने घर के लिए रवाना हो चुके थे।

अगले कुछ दिनों तक वीर, आदि और नीलेश अपना अपना टारगेट बनाकर कालेज जाते रहे। नीलेश का हमेशा की तरह समय पर क्लास अटेंड करने का टारगेट, वीर का माया को जी भरकर देखना और उसके नोटिस में आने का टारगेट और आदि का वीर के टारगेट को पूरा करवाना और माया की मदद से एक गर्लफ्रेंड बनाने का टारगेट। तीनों के अपने-अपने लक्ष्य निर्धारित थे।

वीर माया की नज़रों में आ चुका था। माया भी यह जान चुकी थी कि कोई लड़का है जिसका क़द छह फुट के आस-पास छूता है, गेंहुँआ रंग है, शर्ट के ऊपर के दो बटन खुले हुए हैं, चेहरे पर हल्की दाढ़ी लिये उसे नज़रें चुराकर देखता रहता है। बस स्टॉप तक उसके पीछे-पीछे आता है। उसके क्लास से बाहर आते वक़्त सिर्फ़ उसे देखने के लिए दरवाज़े के सामने खड़ा रहता है। जब नज़रें मिलती हैं तो नज़रें चुरा लेता है। माया यह सब जान चुकी थी और जान कर भी अनजान बनी रहती थी।

कुछ दिनों तक यही सिलसिला चलता रहा। वीर माया को देखता रहा और माया भी नज़रें चुराकर वीर को देखने लगी थी, लेकिन कहानी सिर्फ देखने और देखकर मुस्कुराने तक ही सीमित थी।

आज माया ने हरे रंग का सूट पहना हुआ था। बालो में रब़ड डालकर उन्हे बाँधा हुआ था। माया अपने कुछ दोस्तों के साथ नोटिस बोर्ड के पास खड़ी थी और कुछ ही दूरी पर खड़ा वीर माया को ही देख रहा था।

"भाई, कब तक ऐसे ही देखकर काम चलाएगा? अब तो बात कर न उससे।" आदि ने कहा।

"हाँ यार, मैं भी यही सोच रहा हूँ। जल्दी ही करते हैं। अब तो मुझे भी यही लगता है कि इतना टाइम नहीं लेना चाहिए प्रपोज़ करने के लिए।" वीर ने कहा।

"जल्दी कर, नहीं तो कोई और ही उसे उड़ा के ले जाएगा। फिर देखते रहना यहीं पर खड़े होकर। फ़र्स्ट ईयर और सेकंड ईयर के लड़के गिद्द की तरह मंड़रा रहे हैं। कल जब मैं फ़र्स्ट ईयर के कुछ लड़कों से बातें कर रहा था तो माया का ज़िक्र हो रहा था। एक लड़का है जो उसे प्रपोज़ करने का सोच रहा है।" आदि ने कहा।

"नहीं यार, मंड़राने दे गिद्दो की तरह। लेकिन मुझे पता है और मेरी रूह भी जानती है कि वह सिर्फ़ और सिर्फ़ मेरे लिए ही बनी है। अगर फिर भी किसी ने ऐसा करने की जुर्रत की तो उसकी बक्कल तार देंगे। और फिर भी अगर ऐसी बात है तो फिर आज माया से बात कर ही लेते है।" वीर ने अपनी बात रखी।

"हाँ भाई, यही ठीक रहेगा। आज ही कर दे माया को प्रपोज़। फिर अगर बात बन गई तो पार्टी भी होगी।" आदि ने वीर से कहा।

"भैंचो, गांव बसा नहीं लुटेरे पहले से नज़र गड़ाए बैठे हैं।" वीर ने मुहावरे के रूप में तंज़ कसा। "चल, तुम लोग भी क्या याद करोगे, करते हैं आज पार्टी। बीयर और सुट्टे की पार्टी मेरी तरफ़ से।"

"लेकिन एक दिक़्क़त है। अगर तू उसे प्रपोज़ करने जाए तो प्लीज़ यह अपना राऊडी लुक को थोड़ा बदल लेना। नहीं तो तुझे देखते ही मना कर देगी।" आदि ने वीर को उपर से नीचे तक देखते हुए कहा।

"तो क्या करूँ?" वीर ने आदि से पूछा

"पहले तो अपने यह शर्ट के ऊपर के खुले बटन बन्द कर और फिर शर्ट को पैंट के अन्दर दबा और अपने बालों को

एक तरफ़ कर। तभी तो राऊडी से जैंटलमैन टाइप लगेगा।" आदि ने वीर को अँगुली के इशारे से समझाते हुए कहा।

"जिनका रिलेशनशिप स्वयं भगवान ने बनाया हो, तो फिर लुक से क्या फ़र्क़ पड़ेगा।" वीर ने अपनी बात रखी।

"अरे, वो कहते है न कि First Impression is the Last Impression. भाई, कही तो यह लाइन इस्तेमाल होती होगी, आज यही करके देखते हैं।" आदि ने कहा।

"हम्मम ठीक है, नीलेश को फ़ोन कर। फिर निकलते हैं।" वीर ने कहा।

तीनों नीलेश की बाइक पर वहीं अपने अड्डे पर प्लानिंग बनाने के लिए जा चुके थे कि कहाँ और कैसे प्रपोज़ करना है?

कालेज से बस-स्टॉप तक जाने के लिए सामान्य रास्ते के अलावा एक कच्चा रास्ता भी था, जो कालेज के पीछे से जाता था। टैम्पो, मोटरसाईकिल इस्तेमाल करने वाले छात्र उस सामान्य रास्ते का प्रयोग करते थे और जो पैदल बस-स्टॉप के लिए निकलते थे, वे शॉर्टकट का प्रयोग करते थे, जो कि कालेज के पीछे से रेतीला कच्चा रास्ता था।

माया भी उसी रास्ते से बस-स्टॉप के लिए जाती थी। आज वीर ने पक्का इरादा कर लिया था कि माया को प्रपोज़ करना ही है। तीनों दोस्त समय से दस मिनट पहले ही उस कच्चे रास्ते पर पहुँच चुके थे जहाँ से माया रोज़ कालेज के लिए आती-जाती थी। आज भी माया कुछ ही मिनटों में वहीं से गुज़रने वाली थी। आदि और नीलेश मॉरल सपोर्ट के लिए वीर से कुछ दूरी पर जाकर खड़े हो गए थे। वीर ने उन्हें पहले ही कह दिया था कि बाइक चालू ही रखें, क्योंकि अगर कुछ गड़बड़ हुई तो उन्हें वहाँ से भागना भी पड़ सकता है। हालांकि वीर माया की आँखों में पहले ही देख चुका था कि वो उसे शायद ही

'ना' कहे, लेकिन कुछ कह नहीं सकते थे, नज़रें फरेबी भी होती हैं।

कुछ ही मिनटों बाद वीर को माया सामने से आती हुई नज़र आई। उसको देखते ही वीर का कॉन्फ़िडेंस लेवल नीचे ज़मीन चांट रहा था। दिल की धड़कनें तेज़ हो गईं थी और दिल इतनी ज़ोरों से धड़क रहा था कि उसे अपनी धड़कन की आवाज़ साफ़-साफ़ सुनाई दे रही थी। माया जब उसके पास से गुज़री तो उसने वीर को एक नज़र भर देखा भी, मगर वीर वहीं पर खड़ा रहा नि:शब्द। न वो उसे रोक पाया और न ही बात कर पाया। वीर को समझ ही नहीं आ रहा था कि उसे कैसे और क्या बोलकर रोके? वह वहाँ जड्वत खड़ा रहा, बस। जब नीलेश ने बाइक का हॉर्न बजाया, तब वीर ने उन दोनों की तरफ़ देखा। आदि और नीलेश ने वीर को इशारा किया कि वो जा रही है, जल्दी से बात कर उससे। वीर ने फिर अपने दिल की धड़कन की आवाज़ सुनी जो उसी तेज़ी से धड़क रहा था। उसने अपने अन्दर गहरी साँस ली और माया से बात करने के लिए उसके पीछे कुछ कदम दौड़कर पहुँचा और वीर ने घबराते हुए कहा- "हैलो, आपसे एक मिनट बात कर सकता हूँ?" माया ने वीर की तरफ़ देखा और कहा "हाँ बोलो, क्या बात करनी है?"

"आपका मोबाइल नम्बर चाहिए। कुछ बात करनी है।"

"मोबाइल नम्बर किसलिए चाहिए? अब जब तुमने रोक ही लिया है तो अभी बता दो क्या बात करनी है?" माया ने कहा।

असल में, वीर घबरा गया था। ऐसे ही सीधे नम्बर माँगने से कौन देगा? लेकिन जैसे ही वीर ने माया से बात करनी शुरू की तो वीर के दिमाग़ ने अपना काम करना बन्द कर दिया था। दिल बेपरवाह और असंतुलित होकर धड़क रहा था। संभावना, ड़र, खुशी, उत्साह, अनिश्चितता जैसे अनगिनत भाव चेहरे से बाहर झलक रहे थे। इतनी घबराहट उसे आज तक नहीं हुई थी, जितनी आज हो रही थी।

"हाँ जल्दी बोलो, क्या बात करनी है? मुझे जाना भी है।" माया ने आगे बढ़ते हुए कहा।

"वो मैं आपको पसन्द करता हूँ, बस, आपसे फ्रैंड़शिप करनी है। इसलिए आपका फ़ोन नम्बर चाहिए था, क्योंकि सामने बोलने में मैं थोड़ा असहज महसूस कर रहा था।"वीर ने अपने दोनों हाथों की मुट्ठियों को भींचते हुए कहा।

"लेकिन मैं तो मोबाइल रखती ही नहीं हूँ। हाँ, मेरे पापा के नम्बर दूँ, उस पर बात कर लेना उनसे, जो भी करनी हो।" माया ने वीर की आँखों में देखते हुए कहा।

वीर के पास अब आगे कुछ बोलने के लिए शब्द नहीं बचे थे। वीर की घबराहट तेज़ हो रही थी। "रहने दीजिए पापा का नम्बर तो" इतना कहकर वीर वापस जाने के लिए मुडा तो माया ने वीर से कहा,"अच्छा सुनो, तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम वीर है। बस, आपसे फ्रैंड़शिप करनी है।" वीर ने जवाब दिया।

"हाँ-हाँ वो ठीक है, मैंने तो केवल नाम पूछा है। ठीक है तो आप मुझे अपना मोबाइल नम्बर दे दीजिए, मैं कॉल करती हूँ।" माया ने अपने हैंड़बैग से पेन निकालते हुए कहा।

वीर ने अपना मोबाइल नम्बर माया को दिया और मुड़कर आदि और नीलेश की तरफ़ जाने लगा। वीर को सारा वातावरण गुलाबी दिखने लगा था। उसे आस-पास कुछ भी नहीं दिख रहा था। बस, उसकी और माया की हुई बातें ही उसके दिमाग़ में चल रही थीं। हल्की-सी मुस्कुराहट चेहरे पर अपनी छाप छोड़ रही थी। आदि के पास पहुँचते ही वीर ने मुड़कर देखा तो माया जा चुकी थी।

"क्या हुआ? क्या कहा उसने ?" आदि ने वीर के कंधे पर हाथ रखकर पूछा।

"कुछ नहीं। चल, बीयर लेके आते हैं।" वीर ने अपनी दबी शर्ट को पैंट से बाहर निकालते हुए कहा।

"भाई, इसका मतलब कि 'हाँ' हो गई। तभी बीयर पिला रहा है।" नीलेश ने बाइक को बन्द कर उससे उतरते हुए कहा।

"हाँ तो नहीं हुई है अभी, लेकिन उसने मेरे नम्बर लिए हैं, कह रही थी कि कॉल करूँगी। अब देखते है कि वो कॉल करती है या करवाती है।" वीर ने बाइक के साइड़ मिरर में अपने बाल ठीक करते हुए कहा।

"तो अपना ब्रो अब ड़बल होने वाला है।" आदि ने चुटकी ली।

"अबे चल ना, सीधा ठेके पर ले ले।" वीर ने आदि के सिर पर मारते हुए कहा।

वीर आदि और नीलेश, तीनों ठेके पर पहुँच चुके थे। वहाँ से उन्होंने बीयर का एक कैरेट, सिगरेट और खाने का कुछ सामान लिया और किसी सुनसान जगह पर पार्टी करने के लिए निकल गए।

रास्ते में ही वीर ने अजय को भी फ़ोन कर दिया था और कह दिया था कि कहाँ पर पहुँचना है। अजय भी थोड़ी देर में वही पहुँचने वाला था।

अब तिकड़ी नहीं चौकड़ी जम चुकी थी। चारों दोस्त किसी सुनसान जगह पर एक पेड़ के नीचे महफ़िल जमा चुके थे। जगह इतनी सुनसान थी कि दूर-दूर तक कोई इंसान तो क्या, कोई जानवर भी नहीं दिख रहा था। बस, दो सौ मीटर दूर दाईं तरफ़ से रेल की पटरियाँ गुज़र रही थीं। हल्का-हल्का अँधेरा होने लगा था। चारों ने अपनी एक-एक बीयर की बोतल उठाई और एक साँस में ही पूरी बोतल ख़ाली कर गए। दूसरी बोतल खोलकर सामने रख दी। वीर आदि और अजय ने सिगरेट सुलगा ली थी। अजय सिगरेट के धुँए के छल्ले बनाकर ऊपर आसमान की तरफ़ छोड़ रहा था।

आदि की नज़र अजय के हाथों की खरोंचो के निशानों पर पड़ी। आदि ने एक घूंट बीयर गले में उड़ेल कर अजय से

पूछा, "अरे यार, ये चोट के निशान कैसे?" अजय ने कहा, "भाई, दो दिन पहले एक भसड़ हो गई थी। बहुत मुश्किल से बचा हूँ।"

"लेकिन हुआ क्या?" वीर ने पूछा।

"वीर, तुझे तो पता ही है कि चेतना और मेरा सीन चालू है। तो चेतना ने रात को मिलने के लिए कहा तो बन्दा पहुँच गया रात को एक बजे उसके घर के बाहर। चेतना को फ़ोन करके पहले ही कह दिया था कि मैं रात को आ रहा हूँ, तो उसने छत का दरवाज़ा पहले ही खुला छोड़ दिया था और कहा कि सीधा सीढ़ियों से उतरकर कमरे में आ जाना।"

"फिर क्या हुआ?" नीलेश ने पूछा।

"अब उसने यह तो बताया नहीं कि कौन से कमरे मे आना है? मैं जब छत पर पाइप के सहारे चढ़कर सीढ़ियों से नीचे गया तो देखा कि सामने तो तीन कमरे हैं। अब पता नहीं था कि कौन से कमरे में जाना है तो ड़र के कारण जो सामने कमरा था, उसी में चला गया। वहाँ बैड़ पर कोई सो रहा था तो मैंने सोचा कि चेतना ही है। तो मैं भी साथ में बैड़ पर लेट गया। जब उसे कसकर मैंने बाँहों में लिया तो वो चिल्ला पड़ी 'चोर...चोर'। जब उसका चेहरा मैंने ग़ौर से देखा तो वह चेतना की बहन निकली। मेरी तो चोर सुनकर वहीं फट गई। मैं तो सीधा छत पर भागा और वहीं से नीचे कूद गया। तभी यह खरोंचे आ गईं।" अजय ने बीच-बीच में बीयर की घूंट लेते हुए कहा।

"हँसाओ मत, सालो" आदि ने पेट पकड़कर हँसते हुए कहा।

"तो अब चेतना से बात हुईं।" वीर ने पूछा।

"बात क्या हुई, सुबह ही मिलने आई थी। जूते लौटा के गई है जो वहीं रह गए थे।" अजय ने एक और सिगरेट सुलगाते हुए कहा।

वीर, आदि और नीलेश ज़मीन पर लोटे पेट पकड़ कर हँस रहे थे ।

"हँसो मत यार, अब यह बताओ कि बीयर और सुट्टा किस खुशी में आज?" अजय ने सिगरेट वीर को पास करते हुए पूछा।

"वीर ने आज माया को प्रपोज कर दिया है। इसलिए आज ही महफ़िल जम रही है क्योंकि कल तक तो प्रपोज़ल की उत्सुकता थोड़ी कम हो जाती तो सोचा कि पार्टी तो आज ही ले लेते हैं।" आदि ने बढ़-चढ़कर बताते हुए कहा।

"ठीक है वीरे, यह काम तो सही किया तूने। अब यह बता कि तू कब जा रहा है जूते भूलने के लिए?" अजय ने आँख मारते हुए कहा।

"नहीं यार, मुझे यह सब नहीं करना। और वैसे भी अभी कुछ भी पक्का नहीं है। फ़ोन पर 'हाँ' करेगी या 'ना'। फ़ोन भी करेगी या नहीं, पता नहीं है। तो मेरे यार, अभी कुछ भी निश्चित नहीं है।" वीर ने बीयर का घूंट पीते हुए कहा।

"अबे 'हाँ' ही है। तू क्यूँ इतना सोच रहा है? मैंने उसकी आँखों में तेरे लिए 'हाँ' देखी थी।" नीलेश ने अपनी बात को बीच में डाला।

"हाँ भैंचो, तेरे को सौ मीटर दूर से उसकी आँखों में 'हाँ' दिख गई जो मुझे दो मीटर दूर से नहीं दिखी। और वैसे भी भाईयों, मुझे वो सब नहीं करना जो अजय कह रहा है।" वीर ने कहा।

"साले, क्यूँ नहीं करना? काम नहीं करता क्या तेरा?" अजय ने चुटकी ली।

"अबे चूतिए, तेरी तरह वन नाईंट स्टैंड वाला प्यार नहीं है ये, समझा ना। आत्मा से आत्मा वाला प्यार होगा, अगर उसने 'हाँ' करी तो। ऐसा प्यार जो गंगा में पहली डुबकी की तरह होगा, शरीर को छूते ही आत्मा तृप्त हो जाएगी। वैसे छोड़ो, तुम

लोगो को प्रेम का यह रूप समझ में नहीं आएगा।" वीर ने तीनों की तरफ़ देखते हुए कहा।

"हाँ भाई, समझ गए।" तीनों ने एक स्वर में कहा।

"क्या समझ गए?" वीर ने पूछा।

"यही कि आख़िर में तुम्हारा कटेगा ज़रूर।" अजय ने कहा।

"ऐसा कुछ नहीं होगा। साले, जैसे तेरी गर्लफ्रेंड्स तेरा काटती हैं ना वैसी नहीं है माया।" वीर ने कहा।

"भाई, सभी ऐसी होती है, हाँ, किसी-किसी का वो रूप निकलने में टाइम लगता है। बाक़ी अगर वो ऐसी नहीं है तो फिर ठीक ही है।" अजय ने कहा।

चारों ने बची हुई बाक़ी बीयर को ख़त्म किया और अपने-अपने घर जाने के लिए खड़े हो गए।

"अरे यार रूको ना थोडी देर ! पानी की बोतल दे" अचानक ही नीलेश ने बोतल की तरफ इशारा करके कहा।

"बीयर के बाद अब पानी पिएँगा क्या?" अजय ने कहा।

"नहीं यार, मेरा प्रेशर बन गया है!" नीलेश ने कहा।

"अबे यार! तू भी ना। साला जहाँ ट्रेन की पटरी देखी, वहीं प्रेशर बन जाता है।" अजय ने खीझते हुए कहा।

"यार, दे ना पानी की बोतल। धोना तो पडेगा ना।" नीलेश ने कहा।

ले साले। बाप भी नहीं सोचे होंगे कि बेटा ये रईसी करेगा। बिसलेरी से धोएगा।" अजय ने तंज कसा।

नीलेश के आने के बाद चारों वहां से अपने-अपने घर के लिए निकल गए।

नीले रंग का सूट

सुबह के 06:00 बज रहे थे। वीर सोया हुआ था। अचानक उसका फ़ोन बजा तो उसने देखा कि किसी नए नम्बर से कॉल आ रहा था। उसने नींद में ही फ़ोन उठाया।

"हैल्लो... कौन?"

"गुड़ मार्निंग, माया बोल रही हूँ। सो रहे थे क्या अभी तक?"

माया का नाम सुनते ही वीर की आँखों से नींद एकदम से उड़ गई। वो इतनी फुर्ती से उठा कि जैसे किसी ने नींद में उसे करंट लगा दिया हो।

"गुड़ मार्निंग। कैसे हो?" वीर ने अपने बालों में हाथ घुमाते हुए कहा।

"मैं ठीक हूँ। तुम बताओ?"

'मैं भी ठीक हूँ। मैं तो सोच रहा था कि सच में तुम्हारे पापा का ही फ़ोन आएगा, अगर आया तो।" वीर ने कहा।

'पापा का बात करना ठीक नहीं था, तो सोचा कि मैं ही फ़ोन कर लेती हूँ, और वैसे भी किस्मत तुम्हारी।"

"अच्छा.... किस्मत मेरी? लगता है कि कुंभकरण के बात जो सबसे ज़्यादा सोई हुई थी, वो मेरी किस्मत ही थी जो अब जाकर उठी है तुम्हारे फ़ोन आने के बाद।" वीर ने हँसते हुए कहा।

"सो तो है। अच्छा, कालेज आ रहे हो क्या?"

"हाँ, आऊँगा ना। अब तो रोज़ आना पड़ेगा।" वीर ने कहा।

'क्यों, ऐसा क्या है कालेज में, जो रोज़ आना पडेगा?" माया ने अनजान बनकर पूछा।

"बस, वैसे ही। चलो फिर मिलते है कालेज में, बाय।" वीर ने जवाब दिया।

फ़ोन रखने के बाद वीर ने कमरे से बाहर निकलकर ऊपर आसमान की तरफ़ देखा। आज की सुबह उसे कुछ अलग ही लग रही थी। सुबह जल्दी उठने में इतनी खुशी वीर को आज तक नहीं हुईं थी जैसी उसे आज हो रही थी।

वीर, आदि और नीलेश बाइक से कालेज जा रहे थे। नीलेश बाइक चला रहा था। वीर और आदि पीछे बैठे थे।

"अबे, क्या हुआ? आज चुप क्यूँ बैठा है?" नीलेश ने वीर से पूछा।

"कुछ नहीं, यार। वो आज माया से मिलने वाला हूँ कालेज के बाद, तो थोड़ा नर्वस हूँ।" वीर ने कहा।

"इसमें नर्वस की क्या बात है, मिल ले, लेकिन भाई मुलाक़ात बहुत जल्दी हो रही है। दो हफ्ते ही हुए हैं बात करते हुए और आज मुलाक़ात? सही स्पीड़ पकड़ रहे हो गुरू।" आदि ने वीर को कोहनी मारकर कहा।

"अबे, ऐसा कुछ नहीं है। मैं तो दो-तीन दिन से कह रहा हूँ मिलने के लिए, लेकिन वो आज तैयार हुई है तो प्यासे को तो कुआँ ही चाहिए।" वीर ने कहा।

"लेकिन मिलेगा कहाँ?" नीलेश ने पूछा।

"पुरानी कचहरी के पास जो सिटी हार्ट रेस्टोरेंट है, वहीं पर मिलने को कहा है।" वीर ने जवाब दिया।

"सही है, भाई। बहुत महँगा अड्डा चुना है आशिक़ी के लिए भी। वहाँ बैठकर बातें करने का भी घंटे के हिसाब से चार्ज लगता है।" नीलेश ने कहा।

"क्या बात कर रहा है?" वीर ने अचंभे से कहा।

"हाँ और क्या? वहाँ प्राइवेट चैम्बर भी हैं और उनका चार्ज तो ओर भी महँगा है।" नीलेश ने बताया।

"अरे, ये कैसा नियम बना रखा है कि खाने के भी पैसे दो और बैठने के भी। साला यह लोग बिजनेस में ऐसे-ऐसे फ़ॉर्मूले लाते है कि उनके आगे कैमिस्ट्री के फ़ॉर्मूले भी फ़ेल हो

जाएँ। पर चलो, अब ठीक है जब उसे कह ही दिया है वहाँ मिलने का, तो एक बार मिल लेते हैं।" वीर ने कहा।

कालेज ख़त्म होने के बाद नीलेश और आदि ने वीर को रेस्टोरेंट के बाहर उतारा और वो दोनों अपने अड्डे पर चले गए और साथ में यह हिदायत दे गए थे कि माया के आने के बाद ही अन्दर जाए, नहीं तो चार्ज पहले से ही शुरू हो जाएगा।

वीर रेस्टोरेंट के बाहर खड़ा इन्तज़ार कर रहा था तभी सामने ऑटो से माया नीचे उतरी। उसने नीले रंग का सूट पहना हुआ था। बाल खुले हुए थे। माया ऑटो से उतरकर वीर के पास आ रही थीं तो वीर को लगा कि जैसे आस-पास सब कुछ थम-सा गया हो। जब माया वीर के पास आई तो उसने अपनी धड़कनों को सँभालकर उसे अन्दर आने को कहा। दोनों रेस्टोरेंट के अन्दर जाकर दाईं तरफ़ कोने की एक टेबल पर बैठ गए।

"क्या देख रहे हो? मैं ऑटो से उतरी तब भी मैंने देखा कि तुम आँखें फाड़कर मुझे देख रहे थे।" माया ने पूछा।

"नहीं, कुछ नहीं। बस, मैं तो तुम्हें ही देख रहा था। मन-ही-मन में अपनी पसन्द पर गर्व हो रहा था।" वीर ने कहा।

"अच्छा, कहाँ से सीखीं ये लाइन मारने वाली बातें?" माया ने कहा।

"जब दिल अपनी कहानी ख़ुद लिखना चाहता है तो लाइनें भी वहीं से निकलती हैं।" वीर ने माया की आँखों में देखते हुए कहा।

"बहुत ख़ूब। बातें भी बना लेते हो।" माया ने मुस्कुरा कर कहा।

"अच्छा छोड़ो यह बताओ कि क्या खाना है?" वीर ने मीनू कार्ड को माया की तरफ़ करते हुए कहा।

"ओके... तो पावभाजी और कसाटा आईसक्रीम लेते है।" माया ने कहा।

वीर ने वेटर को बुलाया और पावभाजी और कसाटा आईसक्रीम का ऑर्डर दे दिया। कुछ ही मिनट के बाद वेटर ऑर्डर टेबल पर सर्व कर गया था। माया इतनी ख़ूबसूरत लग रही थी कि वीर को अहसास हुआ कि उसने तो कलयुग में ही साक्षात् स्वर्ग देख लिया हो। माया के बोलने से वीर की ध्यान भंगिमा टूटी।

"तो बताओ, क्यूँ मेरे पीछे आते थे? क्यूँ प्रपोज़ किया?" माया ने आईसक्रीम खाते हुएपूछा।

"क्यूँ पीछे आता था और क्यूँ प्रपोज़ किया? अब इसका जवाब भी देना पड़ेगा क्या? तुम्हें नहीं मालूम कि मैं तुम्हें पसन्द करता हूँ। रूको, पसन्द शायद ठीक नहीं होगा, हाँ प्यार करता हूँ। तुम्हें जब पहली बार कालेज में देखा था तो मैं तो वही पर फ्लैट हो गया था। बस, उसी समय मैंने तो तुम्हें अपना मान लिया था। मुझे तो यक़ीन हो गया था कि मैं तो सिर्फ़ तुम्हारे लिए ही बना हूँ और तुम भी सिर्फ़ मेरे लिए ही बनी हो। बस, पता नहीं क्यूँ तुम में मुझे वो आर्कषण दिखा, जिससे मैं तुम्हारी तरफ़ खिंचता चला गया। अब तो यही ख़्वाहिश है कि हम हमेशा साथ रहें।" वीर ने माया को देखते हुए अपने मन की बात कही।

"यह आकर्षण वाला प्यार तो केवल मेरे चेहरे से हुआ न। तो तुम इसे तुम्हारी सच्चा प्यार टाइप वाली मोहब्बत का नाम कैसे दे सकते हो? यह आकर्षण तो कुछ समय बाद ख़त्म हो जाता है। मतलब, फिर आगे तुम्हारा प्यार भी ख़त्म। अगर आगे तुम्हें मैं आकर्षित नहीं दिखी या कोई मुझसे ज़्यादा आकर्षित हुई तो मतलब कि फिर तुम किसी और से प्यार भी कर सकते हो?" माया ने कहा।

"तो दो हफ़्तों में तुम मुझे बिल्कुल भी नहीं समझ पाई। ख़ैर छोड़ो, ऐसा है कि आकर्षण के बिना तो प्यार की कोई परिभाषा सम्भव ही नहीं है। बिना किसी पर आकर्षित हुए कोई अपनी प्रेमिका की तारीफ़ कैसे कर सकता है? बिना आकर्षण

के तो प्यार हो ही नहीं सकता। प्यार तो चेहरे से ही शुरू होता है। अब बिना आकर्षित हुए कोई प्रेमी कैसे प्यार की चरमसीमा पर पहुँच सकता है? इसलिए देवी जी, प्यार में आकर्षण का होना ज़रूरी है और सभी का अपना-अपना आकर्षण होता है। मेरा आकर्षण तुम हो। वो कहते हैं कि कुछ अलग ही वाइब्स आती हैं तुम्हें देख कर। वैसे भी मैं ये नहीं कहता कि तुम्हारे अलावा कोई और ख़ूबसूरत नहीं है, पर जो बात इस सूरत में है, वो किसी और सूरत में नहीं है।" वीर ने अपनी बात रखी।

"तो पहले किसी और ख़ूबसूरत को भी प्रपोज़ किया होगा? कोई गर्लफ्रेंड़ तो रही होगी न तुम्हारी? अब तक मेरे लिए तो रूके नहीं रहे होगे।" माया ने कहा।

"हाँ, रूका हुआ ही था अब तक तुम्हारे लिए क्योंकि मैं उसी ऊँट की कैटेगरी मे आता हूँ।" वीर ने कहा।

"ऊँट, मतलब?" माया ने अचंभित होकर पूछा।

"हाँ, क्योंकि जब ऊँट को पता है कि बिसलेरी और ब्रिसली में उसे कौन-सा पानी पीना है तो हमें क्या अपनी पसन्द का भी नहीं पता होगा? इसलिए अब तक तुम्हारे इन्तज़ार में ही था मैं।" वीर ने जवाब दिया।

वीर की बातें सुनकर माया के चेहरे पर मुस्कान तैर रही थी। वो शायद अब वीर पर यक़ीन कर रही थी, और करे भी क्यूँ नहीं? वीर ने अपने शब्द रुपी ब्रह्मास्त्र जो छोड़े थे। वीर चाहता था कि उसके हाथ को अपने हाथ में ले और अपने पास थोड़ा और नज़दीक बैठा कर बातें करे, लेकिन मुलाक़ात पहली थी और दोनों नौसिखिए भी।

"अच्छा, बहुत फिल्में देखते हो लगता है।" माया ने कहा।

"फिल्मे? हाँ, वो तो देखता हूँ। क्या करें, अब तक वो ही तो थी तन्हाई काटने का ज़रिया।" वीर ने कहा।

"तो मिला तन्हाई से छुटकारा।" माया ने पूछा।

"हाँ, लगता तो है कि अब तन्हाई से छुटकारा तो मिल ही जाएगा, लेकिन अब बेचैनी ने घेर लिया है मुझे। जब तक तुम्हें न देखूं तो बेचैनी बढ़ती है और जब देख लूँ तो बस फिर तुम्हें ही देखते रहने की बेचैनी रहती है।" वीर ने कहा।

"ओह...इन रोमांटिक बातों से इश्क़ नहीं होने वाला मुझे, समझे मिस्टर?" माया ने अपने नख़रे दिखाए।

"इन बातों से ही तो इश्क़ हुआ करता है, मिस। शक्लें देखकर तो शादियाँ हुआ करती हैं। वैसे भी इश्क़ तो तुमको भी हो रखा है मुझसे। बस, कबूल करने में टाइम लगेगा।" वीर ने कहा।

"हम्ममम...देखते हैं, चलो अब निकलना चाहिए मुझे, लेट हो रहा है।" माया ने अपना हैंड़ बैग उठाते हुए कहा।

"हाँ, ठीक है। चलते हैं।एक बात कहूँ क्या?" वीर ने पूछा।

"हाँ, बोलो ना?"

"तुम्हारे ऊपर यह नीले रंग का सूट बहुत फबता है। इसमें तुम बहुत ख़ूबसूरत लगती हो।" वीर ने कहा।

"अच्छा जी..... ठीक है। और कुछ?"

"नहीं।"

"तो ठीक है, अब मैं चलती हूँ। फिर मिलेंगे।"

"हाँ, ठीक है। बाय।"

माया से मिलने के बाद वीर उसी चाय की दुकान पर पहुंचा जहाँ पर नीलेश और आदि पहले से ही मौजूद थे।

"और लौंडे, कैसी रही मुलाक़ात?" आदि ने पूछा।

"मौसम-ए-इश्क़ में मचले हुए अरमान हैं हम,
दिल को लगता हैं कि दो ज़िस्म एक जान हैं हम,
ऐसा लगता है तो लगने में कुछ बुराई नहीं,
दिल ये कहता है कि वो अपनी हैं पराई नहीं।।।"

"दोस्तो, ऐसा लगता है कि इस गाने की लाइनें केवल स्मिता पाटिल और माया के लिए ही लिखी गई थीं। आज जब उसे इतने नज़दीक से देखा तो उसके दो लज्जाशील आँखों ने तो मुझ पर बिजलियाँ ही गिरा दी। बस, लग रहा था कि बरसों तक हम वहीं पर बैठे रहें और मैं बस उसे ही देखता रहूँ। अब इससे तो तुम्हें मेरे दिल का हाल और मुलाक़ात का पता चल ही गया होगा।" वीर ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा।

"जिओ चीते।" नीलेश ने तीन चाय का ऑर्डर देते हुए कहा।

"लेकिन भाई, अब एक दिक्कत है। रात को नींद नहीं आती। अब तो माया से सुबह तक बातें करने का मन करता है, लेकिन ये फ़ोन का बैलेंस ख़त्म हो जाता है। रोज़ दो सौ का रिचार्ज करवा रहा हूँ। अब तो जो रिचार्ज करता है, उस दोस्त को भी शक़ हो गया है। जब भी उसे रिचार्ज करने की कहता हूँ तो केवल एक बात पूछता है कि लगता है कि हमारी भाभी मिल गई है।" वीर ने अपना समस्या बताईं।

"तो भाई, रिलायंस का सिम यूज कर न। उसमें रिलायंस से रिलायंस के नम्बर पर फ्री कॉलिंग रहती है।" आदि ने सुझाव दिया।

"अच्छा.....ताऊ अंबानी ने यह प्लान तो सही चला रखा है।" वीर ने चाय पीते हुए कहा।

"और नहीं तो क्या? इस रिलायंस और अंबानी ने ही आशिक़ों को ज़िन्दा रखा है, नहीं तो बेचारे महँगाई के नीचे दब कर मर जाते। अब तो अंबानी से ही आशिक़ो को उम्मीदे रहती है।" आदि ने कहा।

"हाँ, ये सब तो ठीक है, लेकिन वीर मेरे भाई, इतने प्यार में भी मत पड़। प्यार करने वाले अक्सर मौसम की तरह बदल जाते हैं और उन तड़पते आशिक़ों में तेरा भी नाम होगा फिर।" नीलेश ने चाय के पैसे देते हुए कहा।

"मैं तो पहचानता ही नहीं कोई मौसम, मैं तो उसे चाहता हूँ चाय की तरह।" वीर ने टेबल पर रखे चाय के गिलास को हाथ में लेकर कहा।

"लगता है, अपना भाई माया से मिलने के बाद शेर से शायर बनता जा रहा है। ऐसे बदलाव सदियों में देखने को मिलते हैं।" आदि ने चुटकी ली।

"भाई, शायर तो ठीक है, लेकिन वीर को देखकर लगता है कि अजय ठीक ही कह रहा था उस दिन कि एक दिन इसका कटेगा ज़रूर क्योंकि यह डूबां ही इतनी शिद्दत से है प्यार में।" नीलेश ने कहकर बाइक स्टार्ट की।

"चल ना किसी का नहीं कटेगा। अब घर छोड़ दे मेरे को। रास्ते में अजय का फ़ोन आया था। उससे मिलना है, कोई ज़रूरी काम है उसे।" वीर ने बाइक पर बैठते हुए कहा।

नीलेश ने वीर को घर पर छोड़ने के लिए बाइक दौड़ा दी और आदि ऑटो लेकर बस-स्टैंड के लिए निकल गया था।

शाम को वीर अजय से मिलने के लिए गया। अजय और माधवी वहाँ पहले से ही मौजूद थे।

"भाई, कल गुड़गांव चलना है।" अजय ने वीर के पहुँचते ही कहा।

"क्यों क्या हुआ? गुड़गांव क्या काम है ?" वीर ने पूछा।

"अरे यार, अब अजय ने कोई गुड़गांव की लड़की से फ्रैंड़शिप करी है तो यह उससे मिलने के लिए कह रहा था तो लड़की ने कल मिलने का कह दिया है। इसलिए यह इतना उत्साहित हो रखा है।" माधवी ने कहा।

"अबे तुझे कहाँ से मिल गई गुड़गांव की बन्दी? भैंचो, कहां-कहां हाथ मारता रहता है। किसी शहर को तो छोड़ दे।" वीर ने अजय से कहा।

"भाई, हुआ क्या कि एक दिन फेसबुक चला रहा था तो friend suggestions में angel priya नाम का suggestion दिखा। तो मैंने उसे फ्रैंड़ रिक्वेस्ट भेज दी। पहले तो मैंन सोचा कि किसी का नाम angel priya कैसे हो सकता है? कोई फेक आईडी ही होगी। फिर धीरे-धीरे बातें शुरू हुईं तो पता चला कि आईडी फेक नहीं है और अब देखो, कल उससे मिलने वाला हूँ।" अजय ने कहा।

"अरे यार, कहाँ फँसवाएगा? मैं क्या करूँगा वहाँ जाकर? तू ही मिल आ।" वीर ने कहा।

"चल ना, भाई। माधवी भी चल रही है। थोड़ा घूमना भी हो जाएगा और बीयर-शीयर भी ले लेंगे।" अजय ने कहा।

"माधवी, तू वहाँ क्या करेगी? तेरा वहाँ क्या काम?" वीर ने माधवी की तरफ़ देखकर कहा।

"मुझे कुछ शॉपिंग करनी थी तो सोचा कि अब तुम लोग जा ही रहे हो तो मैं भी चलती हूँ और वैसे भी यहाँ लोकल

मार्केट से कपड़े ख़रीदकर बोर हो गई हूँ। वहाँ से कोई लेटेस्ट कलेक्शन ही ले आऊँगी।" माधवी ने अपनी बात रखी।

"हद है यार तुम लोगों की भी। अब प्रोग्राम पहले से ही सेट कर रखा है तो चलो फिर चलते हैं।" वीर ने अपनी सहमति जताई।

अगले दिन सुबह सात बजे वीर और अजय, दोनों माधवी के घर की गली के नुक्कड़ पर खड़े होकर उसका इन्तज़ार कर रहे थे। माधवी को फ़ोन करके अजय ने बता दिया था कि सुबह सात बजे गली के मोड़ पर मिल जाना, लेकिन दोनों को उसका इन्तज़ार करना पड़ रहा था। अजय अपने पापा की गाड़ी ले आया था। अजय ने घर पर बता दिया था कि कालेज में पार्टी है तो गाड़ी ले के जा रहा हूँ। वीर ने भी घर पर कालेज से लेट आने का बहाना बना दिया था। बीस मिनट के बाद माधवी आई और फिर तीनों गुड़गांव के लिए निकल गए।

लगभग तीन घंटे के बाद तीनों गुड़गांव पहुँच चुके थे। प्रिया को अजय ने पहले ही बता दिया था कि एम.जी. रोड़ पर सहारा मॉल के बाहर ग्यारह बजे मिलना है। अजय ने गाड़ी मॉल की पार्किंग में लगा दी। तीनों गाड़ी में ही ग्यारह बजने का इन्तज़ार कर रहे थे। तभी अजय के मोबाइल पर प्रिया का मैसेज आया कि वो मॉल के मेन गेट पर पहुँच चुकी है।

"तो तू मिल ले उससे। फ्री होकर कॉल कर देना। तब तक मैं और वीर भी कुछ शॉपिंग कर लेते है।" माधवी ने अजय से कहा।

"और कोई दिक्कत हो तो हम तो हैं ही यहीं पर। देख लेना, कहीं angel priya की जगह कोई devil priyansh ना हो।" वीर ने माधवी से हाई-फाईव करते हुए अजय से कहा।

"अबे, क्या यार तुम लोग भी? भाई, फेसबुक पर हर angel priya फेक नहीं है। कुछ Priya angel की तरह हैं भी। जैसे ये प्रिया जो गेट पर तुम्हारे भाई का इन्तज़ार कर

रही है। वैसे भी कुछ प्रिया ने रियल प्रिया को भी बदनाम किया हुआ है। हर कोई ऐसा नहीं होता, समझे? चलो, अब मैं चलता हूँ। वैसे भी मुझे पसन्द ही नहीं कि कोई सुन्दर कन्या मेरा इन्तज़ार करे।" अजय ने वीर की तरफ़ आँख मारकर कहा।

अजय मॉल के गेट की तरफ़ चला गया था। वीर और माधवी पार्किंग की लिफ़्ट से मॉल के अन्दर चले गए थे।

दो घंटे के बाद वीर के मोबाइल पर अजय का कॉल आया कि पार्किंग में मिलो, अभी निकलना है। वीर और माधवी, दोनों पार्किंग में पहुंचे तो अजय पहले से ही गाड़ी में इन्तज़ार कर रहा था। दोनों के पहुँचते ही अजय ने गाड़ी स्टार्ट की और तीनों वहाँ से निकल गए।

"अबे हुआ क्या, बताएगा भी? इतनी जल्दी में निकल रहा है।" वीर ने अधीर होकर अजय से पूछा।

"कुछ नहीं हुआ। मिल लिया बस, और क्या?" अजय ने जवाब दिया।

"कहीं सच में devil priyansh तो नहीं था?" माधवी ने कहा।

"नहीं, थी तो प्रिया ही और वो भी किसी angel की तरह ख़ूबसूरत।" अजय ने कहा।

"तो अभी तो टाइम था हमारे पास। इतनी जल्दी क्यों आया? अभी तो उसके साथ और टाइम बिताता। मैं तो ठीक से शॉपिंग भी नहीं कर पाई।" माधवी ने अपने शॉपिंग बैग की तरफ़ देखकर कहा।

"अब बताएगा भी.... कि क्या हुआ ?" वीर ने फिर से पूछा।

"हुआ यूं कि जब मैं गेट पर गया तो प्रिया वहीं मेन गेट के पास ही मेरा इन्तज़ार कर रही थी। वो बिल्कुल एकदम परी की तरह थी। रंग इतना गोरा, इतना साफ जैसे कि अभी धुल कर आई हो, बिल्कुल नाज़ुक। वहाँ से हम दोनों रेस्टोरेंट में गए।

खाना खाया और कुछ देर वही बैठकर बात की। फिर मैंने उससे कहा कि चलो, पार्किंग में चलते हैं। वहीं गाड़ी में बैठकर बातें करेंगे, लेकिन उसने कहा कि पहले मुझे थोड़ी शॉपिंग करनी है। अगर उसके बाद टाइम बचा तो फिर चलेंगे पार्किंग में। तो हम दोनों शॉपिंग करने के लिए चले गए। तो बन्दी ने आठ ड्रेस और दो जोड़ी जूते ले लिए। बिल काउंटर पर गए तो बोली कि मैं अपना कार्ड घर भूल आई। प्लीज़, आप पे कर दो। मैं आपको जब कभी दोबारा मिलूँगी तो लौटा दूँगी। यार, मैं तो बारह हजार का बिल देखकर ही अचंभित हो गया। पर्स में तो मात्र तीन हजार ही थे, तो उसे कहाँ से बारह हजार की शॉपिंग करवाता। फिर मैंने उससे कहा कि मेरा ए.टी.एम. कार्ड गाड़ी में है, मैं उसे लेकर आता हूँ। तब तक तुम कुछ और भी पसन्द कर लो। भाई, दुकान से बाहर निकलते ही तेरे पास फ़ोन कर दिया कि पार्किंग में मिलो। क़सम से जिसने भी यह कहा है न कि स्त्रियाँ कुछ देकर पाती हैं और पुरुष कुछ पाकर देते हैं, एकदम लल्लू टाइप रहा होगा। वो शायद कभी ऐसी स्थिति में नहीं फँसा होगा वरना वो भी यही कहता कि स्त्रियाँ भी कुछ पाकर ही देती हैं।" अजय ने भूमिका बांधी।

वीर और माधवी, दोनों जोर-जोर से हँस रहे थे।

"अरे, हँस क्या रहे हो तुम लोग? अब यह बताओ कि कोई पहली मुलाक़ात में ऐसा करता है भला?" अजय ने दोनों से पूछा।

"हां, करता तो नहीं है, लेकिन कोई ऐसा भी नहीं करता कि किसी लड़की को कोई इतनी शॉपिंग के साथ बिल काउंटर पर छोड़कर भाग आए। अब उस बेचारी तुम्हारी angel का क्या होगा?" माधवी ने हँसते हुए कहा।

"बेटा, तुम दोनों हँस लो। जिस दिन मेरी तरह ऐसी आफ़त में फँसोगे ना, तब तुम लोगों को पता चलेगा कि मैंने आज क्या खोया है? साला गाड़ी लाने का भी कोई फ़ायदा नहीं हुआ, लेकिन इस घटना से एक बात का पता चला कि गोरे तब

भी लूटते थे और आज भी लूटना चाहते हैं।" अजय ने तंज़ कसा।

वीर और माधवी अब भी अजय की बातें सुनकर हँस रहे थे।

तीनों ने रास्ते में बीयर खरीद ली थी और अब गाडी में ही चीयर्स कर रहे थे। वीर ने मोबाइल देखा तो माया की तीन कॉल आ चुकी थीं, लेकिन वीर ने अभी माया से बात करना ठीक नहीं समझा। तीनों दो-दो बोतलें ख़ाली कर चुके थे। माधवी ने अब पीने से मना कर दिया था तो वीर और अजय ने अपनी एक-एक बीयर और खोल ली थी।

"माधवी, तुझे पता है, वीर भी अब रिलेशनशिप में है। इसने एक लड़की को प्रपोज़ किया और उसने भी 'हाँ' कर दी है। अब तो इसका भी सीन चालू है।" अजय ने कहा।

"अच्छा....क्या बात है, वीर? मुझे अजय से पता चल रहा हैं। तूने तो मुझे बताया भी नहीं?" माधवी ने तंज कसा।

"नही, ऐसी कोई बात नहीं है। यह बस अभी हुआ है और तब से तुझसे बात नहीं हुईं वरना बता देता।" वीर ने जवाब दिया।

"चल, कोई बात नहीं। यह तो बता कि लड़की कौन है? कैसी है? कही angel priya टाइप की तो नहीं?"

"नहीं, वो बिल्कुल भी वैसी नहीं है। बहुत ख़ूबसूरत है। मोटी आँखें, सुराहीदार गर्दन, कमर तक बाल, होंठों के नीचे तिल और सांवला रंग तो क़यामत ही ढा देता है।" वीर ने कहा।

"सांवला रंग..... क्या बात है?" माधवी ने हाथ से वाह की आकृति बनाकर कहा।

"हाँ, सांवला रंग। क्यों, क्या हुआ? इसको ही हाईलाइट क्यूं कियाहै? अबे यार, अब आज की जनरेशन भी रंगभेद की बात करेगी क्या? मेरी नज़र से देखो तो सांवला रंग इस दुनिया में सबसे प्यारा और आकर्षक रंग है और मैं तो सांवले रंग को

गोल्डन रंग कहूँगा क्योंकि मेरे लिए अब सबसे ख़ूबसूरत रंग वही है और वैसे भी किसी ने क्या ख़ूब कहा है:

"हुस्न का क्या काम सच्ची मोहब्बत में,

यार सांवला भी हो तो क़ातिल लगता है।।"

"क्या बात है.... कती ग़ालिब बनता जा रहा है छोरा। अच्छा, एक बात तूने भी सुनी है क्या जो मैंने सुनी है कि सांवले रंग की लड़कियों में सेक्स कुछ ज़्यादा ही होता है।" अजय ने चुटकी ली।

"अबे ठरकी...तुझे यही सूझता है क्या दिन भर? तूने तो आज अपना कटवा लिया और पता नहीं पहले भी कितना बार कटवाया होगा? तू तो यह सब बोल ही मत क्योंकि यह तुझे सूट ही नहीं करता।" माधवी ने कहा।

"ऐसा कुछ नही है। मैं तो मज़ाक़ कर रहा था। और वैसे भी अगर दस में से किसी तीन ने धोखा भी दे दिया तो तू नकारात्मक पक्ष क्यों देखती है? सकारात्मक पक्ष सात देख ना।" अजय ने माधवी की तरफ़ देखकर कहा।

माधवी और अजय, दोनों वीर के अच्छे दोस्त थे। आदि और नीलेश की तरह ही। आदि और नीलेश से तो कालेज में ही मुलाकात हो पाती थी, लेकिन अजय वीर का लंगोटिया यार था। अजय और वीर की दोस्ती जय-वीरू टाइप की तो नहीं थी, लेकिन उससे कम भी नहीं थी। माधवी स्कूल में वीर के साथ पढ़ती थी और उसके घर के नज़दीक ही रहती थी तो माधवी के साथ भी वीर का अच्छा कॉम्बीनेशन था। और वैसे भी जो दोस्त एक बार कहने पर इतनी दूर बिना कारण साथ चल दे, साथ पीकर मस्ती करे, आपके हर ग़लत और सही में बिना नतीज़ा जाने साथ दे तो ऐसी दोस्ती कम ही लोगों को नसीब होती हैं। इन तीनों की दोस्ती भी कुछ ऐसी ही थी।

ख़ैर, तीनों अब अपने शहर में दाख़िल हो चुके थे। अजय ने माधवी को नुक्कड़ पर उतार दिया था। वीर और अजय अभी

कुछ देर और घूमना चाहते थे। उन्होंने रास्ते में सिगरेट ली और गाड़ी शहर से बाहर की तरफ़ घुमा दी।

चूम लूँ होंठ तेरे

एक महीने से वीर और आदि की क्लास attendance ज़ीरो थी और कालेज present सौ प्रतिशत। जबकि नीलेश की कॉलेज और क्लास attendance दोनों ही लगभग पूरी थीं। आज भी नीलेश जब अपनी बॉटनी की क्लास अटेंड कर रहा था तब वीर और आदि, दोनों कॉरीडोर में खड़े मोबाइल पर कुछ देख रहे थे। तभी दोनों के पास दाऊद आया।

आगे बढ़ने से पहले दाऊद का परिचय कराना ज़रूरी है। दाऊद एक विचित्र प्रकार का प्राणी था, जिसका वास्तविक नाम हर्ष था। 'दाऊद' नाम की उपलब्धि इनको इनके साहसिक कार्यों तथा मज़बूत हौसलों के कारण मिली थी। दाऊद भी वीर और आदि की तरह ही बी.एस.सी. का छात्र था, लेकिन उसका Stream Non-Medical था। उसके क्लास present का रिकोर्ड तो इतना ख़राब था कि उसे आज तक यह भी नहीं पता था कि उसकी क्लास कहाँ लगती है। उसकी presence तो हमेशा Medical वाली क्लास के बाहर ही रहती थी। इसका कारण यह था कि वीर की क्लास में शिखा नाम की लड़की थी जो कि हर्ष को बेहद पसन्द थी। जब हर्ष पहली बार कालेज आया था, तभी उसने शिखा को देखा था। बस, तब से ही वह उसके एकतरफा इश्क़ में पड़ गया था। यही कारण था कि वह हमेशा Medical Stream की क्लास के आस-पास ही रहता था और उसके दोस्त भी Medical वाले ही बन गए थे।

शिखा से प्यार का इज़हार करने की हिम्मत हर्ष की डेढ़ साल से नहीं हुई थी और उसे भी यक़ीन था कि वो अपने प्यार का इज़हार नहीं कर पाएगा। लेकिन फिर भी वह अपने एकतरफा प्यार की क़ीमत ब़ख़ूबी जानता था। उसके कालेज आने का एकमात्र लक्ष्य यही था कि वह केवल शिखा को देख सके। उसने शिखा के नोटिस में आने के काफ़ी प्रयत्न किए,

लेकिन डेढ़ साल के बाद भी नतीज़ा यह था कि शिखा हर्ष को लेशमात्र जानती थी।

सुबह कालेज के टाइम होने से पहले ही हर्ष शिखा के घर के आस-पास पहुँच जाया करता था। जब वह कालेज के लिए निकलती थी तो उसके पीछे-पीछे कालेज आता था। पूरे दिन उसे देखने भर के लिए कोशिश जारी रखता था। जब कालेज खत्म होता था तो शिखा के पीछे-पीछे जाकर उसे घर तक ड्रॉप करता था। यह सब कार्य उसके नित्य कार्य में शामिल थे।

शिखा एक बेहद ख़ूबसूरत लड़की थी। अब ख़ूबसूरती के दीवाने तो बहुत होते हैं। शिखा को पसन्द करने वालो की सूची में केवल हर्ष ही नहीं था बल्कि उसकी क्लास के कुछ लड़के और भी थे। उन लड़को को तो हर्ष ने आस-पास के कुछ लोकल बदमाशों को लाकर समझा दिया था, लेकिन हद तो तब हो गई जब उन्हीं लाए हुए बदमाशों में से एक बदमाश को शिखा पसन्द आ गई। अब उस गुंडें टाइप बदमाश को यह कहने के लिए कि शिखा केवल हर्ष की है, वह उससे बड़े गुंडों की शरण में पहुँच गया। इस तरह हर्ष की पहचान आस-पास के बदमाशों में हो गई और कुछ बदमाशों से दुश्मनी भी हो गई थी। हर्ष केवल शिखा के लिए अपनी हिम्मत से बड़ा काम कर रहा था। शिखा को लेकर न जाने कितनी ही बार उसकी बदमाशों से लडाई हुईं, लेकिन मजाल है कि उसने कभी किसी पर भी हाथ उठाया हो। हर बार हर्ष ही मार खाकर आता था। हर्ष ने हाथ उठाए केवल सामने वाले पक्ष से माफ़ी माँगने के लिए। वह उनसे वही कह देता था कि आज के बाद वह शिखा की तरफ़ देखेगा भी नहीं। लेकिन यहाँ बन्दे की हिम्मत की दाद देनी पडेगी कि इतनी बार पिटने तथा कुछ थर्ड क्लास गुंडों से बेइज़्ज़त होने के बाद भी हर्ष के दिल के अन्दर पडे एकतरफा इश्क़ के पत्थर को हिला तक न सके।

कोई उसकी कितनी भी धुलाई करे, कितना भी बेइज़्ज़त कर ले, वो स्वयं कितना भी झूठ बोल ले कि वह कभी भी अब शिखा की तरफ़ देखेगा भी नहीं, लेकिन उसने साबित किया कि शारिरिक तथा मानसिक दर्द से कहीं बढ़कर होता है दिल का दर्द। जो भी कोई उससे यह कहता था कि उसे शिखा की तरफ़ दोबारा देखना भी नहीं तो बन्दा किसी के सामने भी मार खाने के लिए फ़िर से तैयार हो जाता था। इसी प्रकार अपने एकतरफा इश्क़ को बचाने के लिए किसी के सामने भी खड़ा होने की काबिलियत के कारण ही उसका नाम दाऊद पडा। वह नाम हर्ष को भी इतना पसन्द आया कि उसने अपनी बाइक के Wind Screen पर भी 'दाऊद' नाम लिखवा लिया था।

कॉरीडोर में खडे वीर और आदि जब मोबाइल पर कुछ देख रहे थे तो उनके पास दाऊद आया और वीर से कहा कि भाई, माया से कोई लड़का नीचे क्लास के बाहर बात कर रहा है।

"कौन लड़का? कहाँ पर ?" वीर से पहले आदि ने कहा।

"आदि, जब मैं शिखा की एक झलक देखने के लिए उसकी क्लास के बाहर खड़ा नाकाम कोशिश कर रहा था तो वहीं मुझे माया दिखी जो किसी लड़के से बात कर रही थी।" दाऊद ने कहा।

"हाँ तो उसकी क्लास का होगा कोई बन्दा।" वीर ने कहा।

"चल न, देख के आते हैं। पता तो चले है कौन?" आदि ने कहा।

जब तीनों कॉरीडोर के दूसरी तरफ़ पहुंचे तो दूर से ही उनको माया और वो लड़का बातें करते हुए दिख गए।

"भैंचो, ये तो रवि है। मेरी ही क्लास का बन्दा है। एकदम Imposter टाइप का बन्दा है। सबके सामने साला

अच्छा बनता है और पीछे से उनकी ही लंका लगाता है। लेकिन वीर यह माया से क्यूँ बात कर रहा है?" आदि ने कहा।

अब मुझे कैसे पता होगा? मैं तो यहीं तेरे साथ खड़ा हूँ। हो सकता है, कोई काम हो।" वीर ने कहा।

"भाई, इसे हर बन्दी से बिना काम ही कोई काम होता है। आज कालेज के बाहर लपेट लेते है इसको।" आदि ने कहा।

"छोड़ ना। ऐसा कुछ नहीं है।" वीर ने कहा।

रात को जब वीर की माया से बात हुई तब न तो माया ने वीर को बताया कि रवि उससे क्यूँ बात कर रहा था और न ही वीर ने माया से पूछना ज़रूरी समझा। वीर ने अगले दिन माया से मिलने के लिए कह दिया था। माया से मिले हुए काफ़ी दिन हो गए थे। ऐसा नहीं था कि वो बिल्कुल भी नहीं मिले थे। सिटी हार्ट रेस्त्रां में मिलना तथा कसाटा आईसक्रीम खाना तो बहुत बार हो चुका था, लेकिन वीर अब माया से किसी एकान्त जगह पर मिलना चाहता था ताकि वह उसे अपने करीब बैठाकर बात कर सके।

अगले दिन जब वीर और आदि नीलेश के साथ कालेज पहुँचे तो रवि माया के साथ कॉरीडोर में खड़ा था। वीर को यह बर्दाशत नहीं हुआ और उसने आदि से कहा कि यार, इस रवि को कुछ ज़्यादा ही काम हो रखा है माया से। लगता है, अब इसे समझाना पड़ेगा। जब रवि वहाँ से जाए तो उसे कालेज के बाहर ले आना। इतना कहकर वीर और नीलेश कालेज से बाहर चले गए। वीर ने अजय को फ़ोन कर कालेज बुला लिया था।

जब आदि रवि को कालेज के बाहर बुला कर लाया तब वीर, नीलेश और अजय बाहर ही खड़े उसका इन्तज़ार कर रहे थे।

"देख भाई, एक बात पूछता हूँ। साफ-साफ बता देना कि तू माया से क्यूँ बात कर रहा था?" वीर ने रवि के कॉलर को ठीक करते हुए कहा।

"तुम लोगों से मतलब? मैं किसी से भी बात करूँ। भारत एक आजाद देश है। यह हमें किसी से भी बात करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है।" रवि ने जवाब दिया।

"ओ तेरी, अबे किस टाइप का बंदा है ये? वीर, ये ऐसे नही मानेगा। इसके दो-चार कंटाप रख देते हैं। साला, ये इन टाइप के लौंडों की नस्ल बहुत ख़राब होती है जो बकचोदी में भी ज्ञान पेलते है। जब तक इनके शरीर में दो-चार झटके न लगे तो इनका दिमाग़ ही नही चलता।" अजय ने कहा।

"मित्र, कैसी बात कर रहे हो मुझसे? एक तो मैं तुम लोगों को इतना जानता भी नहीं हूँ और दूसरा यह कि मैं उस टाइप का लौंडा, ओ सॉरी, व्यक्ति तो कतई नही हूँ जैसा कि आप मुझे बता रहे हो। आप लोगों को कोई ग़लतफ़हमी हुई है।" रवि ने वीर और अजय दोनों से मुख़ातिब होकर कहा।

"वीर, मैंने पहले ही कहा था न कि यह साला एकदम Imposter टाइप है। साला मुंह में राम, बगल में छुरी। यहाँ ऐसी ज्ञान की बातें कर रहा है, वहाँ हँसकर बातें कर रहा था और यहाँ से जाने के बाद तो अलग ही ढंग से बात करेगा। अबे, अगर दाढ़ी बढ़ाने से ही ज्ञान आता न तो बकरियों की आधी आबादी विद्वान होती, समझा।"आदि ने कहा।

"देख रवि, ऐसा है कि तू अभी कालेज में नया आया है, लेकिन माया मेरी गर्लफ्रेंड़ है। तो आज के बाद उसके आस-पास अगर नज़र भी आया ना तू, तो कसम से तुझे बहुत दिक्कत हो जाएगी। और दोबारा अगर मैंने ऐसे देखा तो मैं तुझे बाहर बुलाकर नहीं समझाऊँगा, वहीं क्लास में सबके सामने आकर तुझे ठीक से समझाऊँगा।" वीर ने रवि को चेतावनी दी।

"मैं तो केवल काम से उससे बात कर रहा था। उसके कुछ टॉपिक्स में प्रॉब्लम थी तो मैं वहीं समझा रहा था।" रवि ने जवाब दिया।

"हां-हां ठीक है। बस, आगे से ध्यान रखना। और अगर दिमाग़ में कुछ ऐसा-वैसा सोच रखा है तो फिर ठीक नहीं होगा।

समझा, अब निकल।" वीर ने हाथ से जाने का इशारा करते हुए कहा।

"अबे जाने क्यूँ दिया? दो-चार झापड़ तो रख ही देने थे। ऐसे लोग काम के नाम पर काम-वासना फैलाते है।" अजय ने कहा।

"छोड़ ना, जाने दे। अगर आगे ऐसा कुछ होता है तो फिर देखते हैं। अब तुम लोग जाओ। मुझे और आदि को कुछ काम है।" वीर ने कहा।

अजय और नीलेश कालेज से जा चुके थे। वीर और आदि वहीं पर थे। उनके जाने के कुछ देर बाद वीर ने आदि से कहा कि कालेज ख़त्म होने के बाद माया को लेकर घर पर आ जाना। मैंने माया से कह दिया है कि आदि के साथ आ जाना।

"घर पर कोई नहीं है क्या?" आदि ने पूछा।

"नही, कोई नहीं है। सब बाहर गए हुए हैं तो सोचा कि माया से मिल लूँ।" वीर ने कहा।

"क्या बात है? अकेले में? हम्ममम...।"आदि ने चुटकी ली।

"अरे ऐसी कोई बात नहीं है जो तू सोच रहा है और ऐसा सोचना भी मत। बस, ले आना उसे।" वीर ने कहा।

"ठीक है। ले आऊँगा।"आदि ने जवाब दिया।

आदि माया को लेकर वीर के घर पहुँच चुका था। माया को छोड़कर आदि अपने घर निकल गया था। माया अन्दर आई और उसने वीर से पूछा कि यह किसका घर है? यहाँ क्यूँ मिलने के लिए बुलाया है?

"ये अजय का घर है। बहुत बार हम रेस्टोरेंट में मिल चुके हैं, लेकिन मैं आज यहाँ अकेले में तुमसे मिलना चाहता था।" वीर ने जवाब दिया।

वीर अपने घर के बारे में माया से झूठ नहीं बोलना चाहता था, लेकिन अनायास ही वीर के मुँह से झूठ निकल गया

था। वह माया को सच बताना चाहता था, लेकिन उसने सोचा कि माया उसे झूठा समझेगी, इसलिए वीर ने माया को सच नहीं बताया।

"ओके... लेकिन मुझे यहाँ मिलना ठीक नहीं लग रहा है।" माया ने कहा।

"यहाँ कोई चिन्ता की बात नही है। तुम एकदम Comfortable होकर बैठो। अच्छा, एक बात बताओ कि वो रवि तुमसे रोज़ क्यूँ बात करता है?" वीर ने पूछा।

"क्यूँ...jealous फील कर रहे हो क्या?" माया ने कहा।

"हां, jealous फील कर रहा हूँ। बस, पता नहीं क्यूं जब भी कोई तुम्हारे करीब होता है तो मुझे क्या हो जाता है? मैं यह नहीं कहता कि हर कोई ग़लत सोच के साथ तुमसे बात करता है, लेकिन बस, मुझे बहुत बुरा लगता है।" वीर ने कहा।

वीर अब माया को कैसे समझाए कि कोई भी उसके करीब आता है तो भैंचो उसकी झांटें सुलग जाती हैं। उसे बहुत बुरा लगता है। वो बार-बार यही सोचता है कि माया को देखने का हक़ केवल उसका ही है।

"ऐसा क्यूँ ?" माया ने वीर से पूछा।

वीर माया के बहुत करीब आया और उसने कुछ देर तक माया को बड़े प्यार से निहारा। उसके बाद उसने माया का हाथ अपने हाथ में लिया और माया से कहा कि शायद मैं दुनिया में सबसे ज़्यादा प्यार करता हूँ तुमसे। मैं तुम्हारे करीब केवल ख़ुद को देख सकता हूँ, और किसी को भी नहीं। और वैसे भी इन रवि जैसे लड़को से मुझे कोई insecurity नहीं है क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम भी मुझसे बहुत प्यार करती हो, लेकिन फिर भी इस तरह के लड़को से तुम कम ही contact रखो तो अच्छा है।

"हाँ, प्यार तो करती हूँ मैं तुमसे और वो भी बहुत ज़्यादा, लेकिन अब यह क्या बात हुई कि अगर कोई मुझसे आकर बात करे तो मैं उससे बात ही न करूँ। क्या तुम शक़ कर रहे हो मुझ पर?" माया ने पूछा।

"मैं यह नही कह रहा कि तुम बात न करो किसी से। बस, मैं तो तुम्हें केवल सचेत कर रहा हूँ। और वैसे भी बात शक़ की नहीं, हक़ की है।" वीर ने कहा।

"तो तुम मुझ पर अपना हक़ समझते हो?" माया ने कहा।

"हाँ, प्यार ही इतना करता हूँ तुमसे कि हक़ तो है ही हमारा एक-दूसरे पर। बोलो है या नहीं हक़?" वीर ने माया को अपनी तरफ़ खींचते हुए कहा।

कुछ देर तक दोनों एक-दूसरे की आँखों में देखते रहे। दोनों की पलकों की लहरें अपनी-अपनी जगह उठने-गिरने लगीं। फिर माया ने अपना चेहरा वीर के सीने में छुपा लिया और कहा कि बिल्कुल हक़ है तुम्हारा। वीर ने माया के चेहरे को दोनों हाथों से पकड़ा और उसके होंठों को चूम लिया। दोनों एक-दूसरे को किस कर रहे थे। माहौल पूरा रोमांटिक हो रखा था। जब वीर ने माया को पहली बार चूमा तो दोनों की आँखें सीपियों की तरह मूंद गई थी। वीर ने माया के होंठों को चूमने के बाद उसके ललाट को चूमा। वैसे भी जब प्रेमी अपनी प्रेमिका के ललाट को चूमता है तो प्रेम अपनी पराकाष्ठा पर होता है।

जब वीर के फ़ोन पर अजय का कॉल आया तब फ़ोन की आवाज से दोनों का ध्यान किस से हटकर मोबाइल पर गया। वीर ने देखा कि अजय का कॉल आ रहा है तो उसने फ़ोन काट दिया और अपने अंतर्मन में अजय को दो-चार गालियाँ भी दी। वीर माया को दोबारा अपनी बाँहों में भरना चाह रहा था। जब वीर ने माया को अपने नज़दीक किया तो माया ने वीर को यह कहकर रोक दिया कि प्यार का मतलब ठहराव है। शान्त नदी की तरह ठहराव। प्यार तो पेड़ की छाया की तरह सुकून

देने वाला होता है। उसे धूप की चिलचिलाहट नहीं बनने देना चाहिए। हम दोनों एक-दूसरे से इतना प्यार करते है कि हमें अपने प्यार में सुकून चाहिए न कि जल्दबाज़ी।

थोड़ी देर बाद माया वहाँ से चली गई। माया के जाने के बाद वीर ने अजय को फ़ोन किया और उसे मिलने के लिए घर पर बुलाया। कुछ देर बाद जब अजय वीर के घर पर आया तो वीर ने अजय का हाथ पकड़कर अपने दिल पर रखा, जो ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था।

"अबे, क्या हुआ? ठीक तो है?" अजय ने अपना हाथ हटाकर कहा।

"अजय मेरे भाई, मै अभी माया से मिला था। अभी थोड़ी देर पहले ही गई है। तूने देखा न कि मेरा दिल कितने ज़ोर से धड़क कर अपनी खुशी व्यक्त कर रहा है? आज पता चला कि इंसान को जब प्यार होता है तो वह हर वक़्त प्यार के नशे में क्यूँ रहता है? पता है, जब माया मेरे बहुत करीब आई तो मैं अपना संतुलन खो बैठा और आगोश में आकर उसे किस कर दिया। तब से यह दिल बहुत ज़ोरो से धड़क रहा है। आज बहुत अच्छा महसूस हो रहा है।" वीर ने अपनी खुशी जाहिर की।

"जिओ मेरे लाल..आगे क्या हुआ?" अजय ने कौतुकता से पूछा।

"किसके आगे?" वीर ने अजय से पूछा।

"अबे, किस के बाद क्या हुआ?"

"किस के बाद कुछ नहीं हुआ। भाई, ये दिल इतनी ही खुशी बर्दाश्त कर सकता था। अगर आगे बढ़ते तो ये दिल साला सीना चीर के बाहर आ जाता। और वैसे भी ठरकी, सच्चा प्यार करने वाली का प्यार आसमान से टूटे तारे की तरह होता है। वह लूटने की चाहत रखने वाले को कभी नहीं मिलता। हमारा प्यार तो इतना पवित्र है कि जिसमें एक-दूसरे को पाना है, लूटना नहीं, समझा?" वीर ने जवाब दिया।

“साला, यहाँ अकेले में बुलाकर कौन-सी पवित्रता दिखा रहा था?” अजय ने तंज़ कसा।

“भाई, तू नहीं समझेगा। यह सब छोड़। चल चाय-सुट्टा पीकर आते है।” वीर ने घर का मेन गेट लॉक करते हुए कहा।

“ये आज तक समझ नहीं आया कि तेरे में सारी कमियाँ हैं। सिगरेट की, बीयर की, और भी बहुत है जो बता नही सकता। ये एक प्यार का fault कैसे रह गया तेरे अन्दर?” अजय ने बाइक स्टार्ट करते हुए कहा।

वीर और अजय, दोनों उसी चाय की दुकान पर पहुँच चुके थे जहाँ उनके चाय और सुट्टे का खाता चलता था।

दोस्ती की कसम

वीर और अजय, दोनों नारनौल से अम्बाला जाने वाली बस में बैठे थे। दोनों अम्बाला जा रहे थे। जाने का कारण यह था कि कुछ महीने पहले दोनों ने एयरफोर्स में नौकरी के लिए आवेदन किया था। अब दोनों का परीक्षा केन्द्र अम्बाला आया था, इसलिए दोनों ने रात को नारनौल से अम्बाला के लिए बस पकड़ी, जो उन्हे सुबह 06:00 बजे तक अम्बाला पहुँचाएगी। सुबह 09:00 बजे एयरफोर्स स्टेशन, अम्बाला में उनकी परीक्षा होनी थी।

सुबह 08:30 बजे वीर और अजय, दोनों परीक्षा केन्द्र पहुँच चुके थे। वहाँ हज़ारों की संख्या में अभ्यार्थी आए हुए थे। दोनों ने एक घंटे की परीक्षा दी और परिणाम का इन्तज़ार करने लगे। लगभग 11:00 बजे परीक्षा के परिणाम की घोषणा की गई। दोनों परीक्षा में उत्तीर्ण हो गए थे। उत्तीर्ण अभ्यार्थियों को शारिरिक दक्षता के लिए मैदान में ले जाया गया। उसमें भी वीर और अजय दौड़, ऊँची कूद, लम्बी कूद आदि सभी गतिविधियों में उत्तीर्ण हो गए थे।

शारिरिक दक्षता के बाद उन्हें एक घंटे का ब्रेक दिया गया और कहा गया कि ब्रेक के बाद इंटरव्यू होना है। वीर ने बैग से मोबाइल निकालकर देखा तो माया की सात कॉल आ चुकी थी, लेकिन वहाँ मोबाइल इस्तेमाल करना वर्जित था, इसलिए वीर ने माया को वापिस फ़ोन नहीं किया।

शाम को इंटरव्यू शुरू हुए, जिसका परिणाम रात 10:00 बजे घोषित किया गया। अजय इंटरव्यू में फेल कर गया था और वीर उत्तीर्ण हो गया था। अगले दिन वीर को सुबह 09:00 बजे वापिस एयरफोर्स स्टेशन मेडिकल के लिए जाना था। रात को दोनों ने एक होटल में कमरा लिया तथा खाना खाने के बाद वीर ने टाइम देखा तो रात के 12:00 बज रहे थे। वीर माया से बात करना चाहता था, लेकिन उसने सोचा कि

काफ़ी लेट हो गया है तो माया सो गई होगी। इसलिए वीर ने माया को फ़ोन नहीं किया।

सुबह ज़ल्दी ही वीर मेडिकल के लिए वापिस एयरफोर्स स्टेशन पहुँच चुका था। अजय वहीं होटल में ही था। उसे वीर के वापिस आने तक वहीं रुकना था ताकि फिर दोनों साथ वापिस जा सकें। पूरा दिन बीतने के बाद वीर शाम को होटल वापिस आया। उसने अजय को बताया कि उसका मेडिकल भी क्लीयर हो गया है। उसे एक महीने के बाद एयरफोर्स ज्वाइन करनी है। अजय ने वीर को बधाई दी और फिर दोनों ने अम्बाला बस स्टैंड से वापिस नारनौल के लिए बस पकड़ ली थी।

दोनों बस में बैठे हुए थे। अजय इयर फ़ोन लगाकर गाने सुन रहा था और वीर खिड़की से बाहर की तरफ़ देखते हुए कुछ सोचे जा रहा था। काफ़ी देर सोचने के बाद वीर ने अजय से कहा कि वह एयरफोर्स ज्वाइन नहीं करेगा। आज दो दिन से माया से बात नहीं हुई है तो देखो, मुझे कितना खालीपन महसूस हो रहा है? और अगर एयरफोर्स ज्वाइन कर ली तो फिर माया से बहुत कम बात हो पाएगी। शायद हो सकता है कि फिर हमारे बीच की दूरी के चलते ब्रेक-अप ही हो जाए। अजय ने वीर को काफ़ी समझाने की कोशिश की कि उसे इस नौकरी को ज्वाइन करना चाहिए। अजय ने वीर से कहा कि ये गर्लफ्रेंड वग़ैरह तो आती-जाती रहेंगी और अगर तू उससे इतना ही प्यार करता है तो एयरफोर्स कौन-सी तेरी गर्लफ्रेंड छीन रही है तुझसे?

“यार माया आती-जाती टाइप की गर्लफ्रेंड नहीं है और ना ही हमारा प्यार ऐसा है। मैं माया से बिल्कुल भी जुदाई बर्दाश्त नहीं कर सकता । और वैसे भी अभी तो मेरी Graduation भी पूरी नहीं हुई है। बाद में नौकरी तो और भी लग जाएगी। मैंने तो पक्का सोच लिया है कि मैं यह नौकरी ज्वाइन नहीं करूँगा। बस, तुझसे एक request है कि घर पर यह मत बताना कि मेरा selection हो गया है और न ही

माधवी को बताना। नहीं तो वो तो पक्का ही मेरे घर पर बता देगी। क़सम है तुझे अपनी दोस्ती की।" वीर ने कहा।

"मेरी एक बात याद रखना कि यह तू बहुत बड़ी ग़लती कर रहा है। अब तो नहीं, लेकिन हाँ, बाद में तुझे इसका बहुत पछतावा होगा। जिस प्यार-प्यार की रट लगाए रहता है न तू, उसमें तेरा ऐसा चूतिया कटेगा न कि फिर तू ख़ुद भी नहीं सँभल पाएगा। साला, यह प्यार ऐसा ही होता है जब कोई उसमें पड़ता है तो प्यार उसका गणित, विज्ञान, भूगोल सब बिगाड़ देता है, याद रखना। और ये कसम क्या दे रहा है? मुझे क्या? कुछ भी कर, तेरी अपनी लाइफ़ है।" अजय ने वीर पर गुस्सा होते हुए कहा।

अजय की बातें सुनकर वीर काफ़ी देर तक ख़ामोश रहा। फिर वीर ने अजय से कहा कि भाई, मैंने सुना है कि सच्चा प्यार एक दिन मिल ही जाता है। माया मुझसे कभी भी अलग नहीं होगी, तू देखना।

"मैं तो अब भी देख ही रहा हूँ और बाद में भी देखूँगा, लेकिन तब तू इस सच्चाई को accept करेगा कि तूने ग़लती की है और रही बात सच्चे प्यार की, तो लानत है यह कहने वाले पर कि सच्चा प्यार एक दिन मिल ही जाता है। ये सच्चा प्यार टाइप की कोई चीज़ नहीं होती है, सब भ्रम है।" अजय ने अपने शोल्डर बैग से पानी की बोतल निकालते हुए कहा।

काफ़ी देर बहस करने के बाद बात इस निष्कर्ष पर पहुंची कि नौकरी की बात अजय वीर के घर पर नहीं बताएगा। दोनों सुबह तक़रीबन पांच बजे नारनौल बस स्टैंड पर उतरे और वहाँ से अपने-अपने घर के लिए ऑटो में निकल गए।

आशिक़ बनाया आपने

वीर का परिवार एक दिन के लिए out of city था। वे सुबह 07:00 बजे ही घर से निकल गए थे। वीर ने कालेज में Practical का बहाना बना दिया था ताकि उनके साथ जाना न पडे। कारण यह था कि वीर माया से मिलना चाहता था। वीर को ऐसे मौक़े कम ही मिलते थे और वो इस opportunity को अपने हाथ से जाने नहीं देना चाहता था। वीर ने माया को पहले ही मिलने का बता दिया था और साथ ही यह भी कह दिया था कि आज कालेज से बंक मारकर सीधा घर पर ही आ जाए।

10:00 बजे माया वीर के घर पर पहुँच गई थी। उसने नीले रंग का सूट पहना हुआ था, जिस पर फूल बने हुए थे। माया ने बाल खोल रखे थे। जब माया कमरे में आई तब वीर ने उसे ग़ौर से देखा और कहा कि अब लगता है, कुछ ज़्यादा ही नीले रंग का सूट पहनने लग गई हो। क़यामत ढाने का इरादा लगता है। लगता है कि यह नीला रंग तो सिर्फ तुम्हारे लिए ही बना है और ऊपर से आज बाल भी खुले छोड़े हैं। कहीं मेरा दिल बांधने का इरादा तो नहीं?

“हाँ, ये तो सही है कि मैं अब नीले रंग के सूट कुछ ज़्यादा ही पहनने लगी हूं। तुम्हें पसन्द है न इस रंग के सूट मुझ पर, बस इसलिए ही। और रही बात दिल बांधने की, तो तुम्हें क्या लगता है कि अब तुम्हारा दिल आजाद भी है? वो तो कब का मेरा हो चुका है।” माया ने वीर से शरारती लहज़े में कहा।

कुछ मिनट तक दोनों एक-दूसरे की आँखों में डूबते रहे। प्यार दिल में होता है, दिमाग़ में होता है, लेकिन वे एक-दूसरे की आदतों में शामिल हो गए थे। प्यार में डूबने की हक़ीक़त यही होती है कि कोई उसकी आदतों में इस कदर शामिल हो जाए कि उसका ख़याल आपके दिलो-दिमाग़ से दूर न हो। वे एक-दूसरे के अलावा किसी और की सोचें ही ना। कहां क्या हो

रहा है, कैसे हो रहा है, क्यों हो रहा है, उससे उनको मतलब ही न हो। वे खोए रहे अपनी ही बसायी हुई दुनिया में, जहाँ ना तो वो किसी को पहचानते हो और ना ही कोई उनको।

वीर ने माया का हाथ पकड़ा और अपनी तरफ़ खींचकर इस तरह अपने अन्दर समा लिया कि सूट पर बिखरे फूलो की महक भीतर ही रहे, बाहर न फैलने पाए। माया भी निश्चित होकर वीर से लिपट चुकी थी। इतने करीब आने के बाद दोनों उस पल को महसूस कर रहे थे।

वक़्त कभी-कभी किसी एक बिन्दु पर आकर ठहर जाता है और इंसान भी उस ठहरे हुए वक़्त में जीना चाहता है। वो नहीं चाहता कि वो वक़्त अब आगे बढे। इंसान उस वक़्त में समा चुका होता है। वीर और माया भी उस ठहरे हुए वक़्त में एक-दूसरे के साथ थे। यह वक़्त उन दोनों के लिए रुका हुआ था। उन्हें लग रहा था कि आस-पास का सब कुछ गतिशील है और बस वो दोनों अपने ही वक़्त में कहीं ठहरे हुए हैं। दोनों एक-दूसरे से इस कदर लिपट गए थे कि अगर दोनों के बीच से हवा भी गुज़रने की गुस्ताख़ी करे तो उसका भी दम घुट जाए। वीर और माया एक-दूसरे को पागलों की तरह किस कर रहे थे। वीर अपने हाथ माया की पीठ की तरफ़ लेकर गया और फिर उसके हाथ नीचे की तरफ़ जाने लगे। माया ने वीर के हाथों को वहीं रोक दिया और कहा कि प्लीज़, ऐसा मत करो।

वीर ने माया से कहा कि आज मेरे हाथों को मत रोको। मेरे इन भटकते हाथों को तुम्हारे जिस्म पर घूमने का लाइसेंस दे दो। वीर और माया ने एक-दूसरे की आंखों में देखा, जिसमें प्यार का सैलाब आ चुका था। माया फिर पागलों की तरह वीर से लिपट गई और उसे किस करने लगी। वीर ने माया को ख़ुद से अलग किया और उसे अपने हाथों में उठा लिया। वीर ने माया को बिस्तर पर लिटा दिया और उसे चूमने लगा। वीर ने माया के सूट को उसके जिस्म से अलग कर दिया। जब वीर ने माया के जिस्म को निहारा तो माया शर्म से नहा गई। माया ने

वीर को अपने ऊपर खींच लिया। दोनों एक-दूसरे में समा रहे थे। वीर माया के पूरे जिस्म को चूम रहा था। वीर और माया एक-दूसरे के इतने ज़्यादा करीब आ गए कि दोनों को एक-दूसरे के जिस्म की गन्ध महसूस होने लगी। जिस्म की गन्ध इंसान को पागल करके छोड़ती है। वीर ने बर्फ़ीले पहाड़ को जिस्म की तपिश से लड़ा दिया। वीर माया को प्यार के ऐसे समन्दर में गोता लगवाने ले गया जहाँ से सूखा लौटना नामुमकिन था। दोनों इस समन्दर में इस तरह नहाए कि पसीने से तर-ब-तर हो गए। साँसें इतना तेज़ थीं कि मानो आज ही ख़त्म हो जाएँगी। थोड़ी देर बाद दोनों के जिस्म की उफनती गर्मी अब सुकून भरी ठंडी हवा में तब्दील हो गई और दोनों ने एक-दूसरे को और कस के भींच कर इस खुशी को महसूस करने को छोड़ दिया। वीर का जिस्म पसीने से नहा गया था और उसने स्वयं के जिस्म को माया से हटाकर बिस्तर पर निढाल कर दिया।

कुछ देर तक दोनों बिस्तर पर उसी नग्न अवस्था में लेटे रहे। वीर ने लेटे हुए ही माया का हाथ अपने हाथों में लिया और कहा कि हम अलग-अलग कितने अकेले और अधूरे है, लेकिन जब साथ होते है तो मुकम्मल होते हैं, एक-दूसरे के पूरक होते है। यह सुनकर माया के चेहरे पर एक प्यारी-सी मुस्कान तैर गई। फिर वीर ने माया के हाथ को अपने होंठों के करीब लाकर चूम लिया।

माया ने वीर से कहा कि मैं सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम्हारी हूं। मुझसे वादा करो कि हम हमेशा एक-दूसरे से प्यार करते रहेंगे और कभी भी अलग नहीं होंगे।

“हाँ, मैं वादा करता हूँ कि हम एक-दूसरे से कभी भी अलग नहीं होंगे। मैं तुमसे इतना ज़्यादा प्यार करता हूँ कि शब्दों से तुम्हें बयाँ भी नहीं कर सकता। आज जो कुछ भी हमारे बीच में हुआ है,यह हमारे प्रेम की पराकाष्ठा है। पता है, तुम मेरी इस Black and White जिंदगी में वो सुनहरा रंग लाई हो, जिसके सामने दुनिया के सारे रंग फीके हैं। तुम्हारी आँखें, रंग,

होंठ, उसके नीचे तिल और जिस्म की खुशबू ने मुझे मदहोश कर दिया है। अब तो लगता है कि तुमसे एक पल भी दूर नहीं रह पाऊँगा। आई लव यू, माया।" वीर ने माया की तरफ़ देखकर कहा।

माया ने जब वीर की ये बातें सुनीं तो माया फिर से वीर से लिपट गई और ख़ुद को वीर की बाँहों में खुला छोड़ दिया।

"कितनी गहराई है तुम्हारे अन्दर, वीर। बिल्कुल समन्दर की तरह। मुझे ड़र लग रहा है कि कहीं डूब न जाऊँ।" माया ने कहा।

"ड़रो मत। तुम नदी की तरह हो। बेख़ौफ़, बेबाक़, कल-कल करके बहने वाली। समा जाओ इस समन्दर के अन्दर।" वीर ने कहकर माया को अपने ऊपर खींच लिया।

शाम को माया के जाने से पहले प्यार का यह सिलसिला फिर दोबारा चला। फिर वही चुम्बन और जिस्म की गन्ध महसूस की गई।

फाईट

वीर जब घर पर बैठा अपने फुर्सत के समय में माया के साथ बिताए ख़ूबसूरत पलों को खुली आँखों से देख रहा था, तब अजय का कॉल आया।

"भाई, कहाँ पर है?" अजय ने पूछा।

"घर पर हूँ। क्यूँ, क्या हुआ?" वीर ने अजय से पूछा।

"अबे, एक भसड़ हो गई है। तू अभी आकर मिल अपने अड्डे पर।" अजय ने कहा।

"अब बताएगा भी क्या हुआ? फिर से तो कहीं जूते नहीं भूल आया तू?" वीर ने चुटकी ली।

"अरे, ऐसा कुछ नहीं है। जब मैं जिम कर रहा था तो तुम्हारे कालेज में घूमने वाले कुछ लोकल बन्दे भी वहाँ आए थे। वो हमेशा की तरह ही जिम करने आए थे। उनमें से एक बन्दे ने कहा कि कालेज में फ़र्स्ट ईयर में एक बन्दी है, जिसका नाम माया है। भाई, मस्त लड़की है। ग़जब का physique लिये हुए है। उसका physique देख कर कसम से दिल आ गया है। तीन दिन हो गए है उसे देखते हुए, अब रुका नहीं जाता। कल जब वो कालेज आएगी तब उससे बात करूँगा। अगर 'हाँ' करती है तो ठीक है नहीं तो साली को उठा कर ले जाऊँगा। ज़बरदस्ती ही चाहे, एक बार तो उसके पूर्ण रूप से दर्शन करने ही है।" अजय ने एक साँस में पूरी बात बताई।

"भैंचो है कौन वो? कहाँ पर है वो ? मैं अभी आता हूँ।" वीर ने गुस्से से कहा।

"वो तो निकल गए जिम से, लेकिन उन तीन में से एक मुझे जानता है तो उससे पता लगाता हूँ कि वो कहाँ पर मिलेंगे, तू अभी आ जा अपने अड्डे पर, वहीं से निकलते हैं।" अजय ने कहा।

वीर पन्द्रह मिनट में अजय के पास पहुँच गया था। अजय ने वीर को दोबारा पूरी बात विस्तार से बताई। अजय ने उन तीन में से एक लड़के से बात कर पता कर लिया था कि अभी वो तीनों कहाँ पर है? अजय ने वीर से कहा कि वो तीनों अपने कालेज के पीछे ख़ाली मैंदान में बैठकर दारू पी रहे है। मैं कुछ बन्दों को बुला लेता हूँ, फिर चलेंगे। आज सालों को सबक सिखा ही देते है।

"यार, वहाँ लडाई करने नहीं जा रहे है। एक बार बात कर लेंगे कि वो ऐसा न करे। शायद मान जाए। बन्दों की ज़रूरत नहीं है। खामखां बात बढ़ जाएगी। ज़्यादा लड़को को देखकर वो यही सोचेंगे कि लड़ाई करने आए हैं।" वीर ने कहा।

"तो सालो के बक्कल तारने ही तो जा रहे हैं। अबे, ऐसे मामलो में रिक्वेस्ट कौन करता है?" अजय ने कहा।

जब वीर और अजय, दोनों कालेज के पीछे वाले मैंदान में पहुंचे तो थोड़ा-थोड़ा अँधेरा गहरा रहा था। वो तीनों वहीं पर बैठे शराब पी रहे थे। जब वीर और अजय उनके करीब गए तो अजय ने अँगुली के इशारे से वीर को बताया कि यह सफ़ेद कमीज़ वाला बन्दा माया के लिए कह रहा था। अजय ने उस सफ़ेद कमीज़ वाले लड़के से कहा कि भाई, एक बार साइड़ में आ, तुझसे कुछ बात करनी है।

"अरे, तू तो जिम में आता है। यहाँ क्या कर रहा है?"

"तुझसे ही मिलने आए है। माया से related बात करनी है।" अजय ने कहा।

"माया को तू भी जानता है क्या? यार भाई, मेरी सेटिंग करवा दे न उससे।"

"देख, ऐसा है कि जिस माया की तू बात कर रहा है न, वो मेरी गर्लफ्रेंड़ है। तो जो भी तूने उसके बारे में कल के लिए या आगे के लिए सोच रखा है, वो तुझे नहीं करना है।" वीर ने कहा।

"ये क्या बात हुई? गर्लफ्रेंड़ तेरी है तो रख न। मुझे कोई तकलीफ़ नहीं है उससे। मैंने तो उसे दो-तीन दिन से देखा है। मस्त माल पटा रखा है तूने। physique तो ग़ज़ब का है यार, लेकिन मैं तो कल उससे बात करने वाला हूँ। साला हमें भी तो फूल का रस चूसने का मौक़ा मिलना चाहिए।" सफ़ेद कमीज़ वाले लड़के ने सीने पर हाथ मलते हुए कहा।

कुछ सेकेंड़ तक सब शान्त रहा। फिर अचानक वीर ने उस बन्दे पर एक झापड़ रख दिया। कंटाप इतनी ज़ोर से था कि साले का सारा नशा वहीं उतर गया। फिर एकदम से ही उन पांचों में झड़प शुरू हो गई। लात-घूंसे लगातार एक-दूसरे पर चल रहे थे। किसी के मुँह पर घूंसे लग रहे थे तो किसी के पेट में जमकर लातें लग रही थीं। कुछ देर तक सब बेसुध होकर एक-दूसरे को मार रहे थे। फिर वो तीनों वहाँ से भागने लगे। जब वीर और अजय उनको पकड़ने के लिए उनके पीछे दौड़े तो एक ने वीर के सिर पर ईंट फेंक कर मारी। वो तीनों वहाँ से भाग गए थे। हालांकि ईंट से वीर के सिर पर ज़्यादा तो नहीं लगी, लेकिन थोड़ा खून निकल आया था।

"चल न, डॉक्टर के चलते हैं।" अजय ने ख़ुद के कपड़ों से धूल झाड़ने के बाद वीर के कपड़ो से धूल झाड़ते हुए कहा।

"ज़्यादा चोट नहीं है। डॉक्टर की ज़रूरत नहीं है। एक काम कर। शहर के बाहर नहर पर चलते हैं। वहाँ जाकर नहाना पड़ेगा क्योंकि ऐसे हालात में घर पर तो जाया नहीं जा सकता है। और वैसे भी मूड़ की तो खुदी पडी है, तो बीयर भी ले लेते हैं, वही नहर पर बैठकर पिँएगे।" वीर ने चोट को पानी से धोते हुए कहा।

"ये मेरे भाई ने बात ठीक कही। भैंचो, खुले में पीने का मज़ा ही कुछ ओर है।" अजय ने बाइक स्टार्ट करते हुए कहा।

दोनों नहर पर नहाने के लिए पहुँच चुके थे। चार बीयर की बोतलें उन्होंने रास्ते में ही ले ली थीं। वीर और अजय पहले नहर में नहाए, फिर वहीं बैठकर बीयर पीने लगे। अजय ने एक

सिगरेट सुलगाई और वीर से कहा कि यार, वो लोग माया की बात कर रहे थे, वो तो ठीक है, लेकिन वो माया के physique पर इतना जोर क्यों डाल रहे थे। माया को तो मैंने भी देखा है, लेकिन उसका physique भी बाक़ी लड़कियों जैसा ही है।

"यार, उन लोगो के तो आँखों की जगह गोटे फिट थे। उन्हे वही दिखा माया में, जैसी उनकी घटिया सोच थी। और वैसे भी प्यार में दिल लड़की के उभारों पर नहीं फिसलता, ब्लकि वो उलझते है उनकी जुल्फ़ों में, अटक जाते है उनके दुपट्टे में और ठहर जाते है उनकी आँखों में।" वीर ने खुले आसमान में तारों को देखते हुए कहा।

"हाँ, यह तो तू ठीक ही कह रहा है। साला मैं तो तुझसे बहुत पीछे हूँ, भाई। इन सबका अहसास तो मुझे आज तक नहीं हुआ है।" अजय ने धुँए के छल्ले बनाकर कहा।

"तुझे जिस दिन प्यार हुआ न तो तू भी ऐसे ही तारों को देखेगा। और उन्हीं तारों के बीच तुझे अपनी प्रेमिका की तस्वीर दिखाई देगी।" वीर ने कहकर बीयर की दूसरी बोतल खोली।

"फिर तो ठीक है, अगर नहीं हुआ है तो। मुझे तेरी तरह इन प्यार टाइप के चुतियापे में नहीं फसना है।" अजय ने हँसकर कहा।

वीर और अजय ने वहाँ कुछ समय बिताया। साथ लाई हुई बीयर को ख़त्म किया और फिर अपने घर के लिए निकल पड़े। रास्ते में अजय ने वीर से कहा कि अगर कल वो लड़के कालेज में कुछ दिक्कत करते है तो फिर क्या करना है? वीर ने कहा कि मुझे नहीं लगता कि वो लोग अब ऐसा कुछ करने की भी सोचेंगे। फिर भी, अगर ऐसा होता है तो फिर रिक्वेस्ट नहीं करेंगे।

अजय ने वीर को उसके घर के बाहर छोड़ा और अपने घर के लिए निकल गया।

दिल को चुराया तूने सनम

रात के 03:00 बज रहे थे। वीर और माया फ़ोन पर बात कर रहे थे। कुछ महीनों के इस रिलेशनशिप ने प्यार का वो ख़ूबसूरत रूप ले लिया था कि दोनों अब एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते थे। वो कालेज में क्या-क्या हुआ उस पर बातें करते थे, घर से related बातें करते थे और अन्त में प्यार की बात न हो, ऐसा तो असम्भव था दोनों के बीच। कभी-कभी तो बातें इतना लम्बी चलती थीं कि दोनों की गुड़-मार्निंग भी फ़ोन पर ही हो जाती थी।

वीर और माया फ़ोन पर बातें करते करते कभी-कभी कुछ देर के लिए शान्त हो जाते थे। ऐसा ही होता है गंभीर प्यार। इंसान प्यार के शुरुआती दिनों में नदी की तरह होता है। जहाँ से शुरुआत होती है वहाँ उथल-पुथल होती है और जैसे-जैसे वो प्रेम के समन्दर की गहराइयों में उतरते जाते है तो शान्त और गंभीर हो जाते है। प्यार भी ऐसा ही होता है, शांत और गंभीर।

माया ने वीर से कहा कि बताओ, तुम मुझसे कितना प्यार करते हो? कितना चाहते हो मुझे? माया की बात सुनकर वीर कुछ सेकेंड तक चुप रहा। फिर उसने माया से कहा कि मैं तुमसे उतना प्यार करता हूँ जितना तुम मुझे करने दोगी। मैं कितना प्यार करता हूँ यह जानने के लिए तुम अपनी बाँहें खोलो, मैं उनमे समा जाऊँगा।

“यह क्या बात हुई? मैंने तुमसे क्या पूछा और तुम क्या बता रहे हो?” माया ने कहा।

“मैं तुम्हें वही बता रहा हूँ जो तुमने पूछा है। हाँ, मुझे ख़ुद भी नहीं पता अपनी दीवानगी के बारे में। मैं तुम्हें कितना चाहता हूँ? यह तो तुम्हें मैं बिल्कुल भी नहीं समझा पाऊँगा।” वीर ने जवाब दिया।

“देखती हूँ, जब मैं तुम्हारी नज़रों से दूर हो जाऊँगी तब भी तुम मुझे इतना ही प्यार करोगे क्या?” माया ने कहा।

“अब ऐसी बात क्यूँ बोल रही है? ये प्यार देखनी की चीज़ नहीं है। महसूस करो इसे तो तुम्हें ख़ुद ही सवालो के जवाब मिल जाएँगे। और यह क्या बात कही तुमने कि नज़रों से दूर चली जाऊँगी?” वीर ने पूछा।

“हम्मम...ऐसा ही होने वाला है। मैं ये कालेज छोड़ रही हूँ। मेरे घरवालों ने दूसरे शहर में कोई कालेज देख लिया है तो अब मैं वही पर पढ़ूंगी।” माया ने कहा।

“ये क्या बकवास कर रही है? दिमाग़ ख़राब है क्या तेरा? कालेज कैसे छोड़ सकती है तू? जैसा तूने मुझे एक बार अप्रैल फूल बनाया था, यह कहकर कि मैं अपनी एक फ्रैंड़ के घर आई हुई हूँ तो मैं सिर्फ़ तुम्हें देखने के लिए उस घर के बाहर घंटों खड़ा रहा था। फिर बाद में तुमने बताया कि तुम अप्रैल फूल बना रही थी। अब ये बिना अप्रैल के महीने के मुझे फूल बना रही हो ना।” वीर ने कहा।

“हाँ, मुझे याद है कि मैंने तुम्हें एक बार अप्रैल फूल बनाया था, लेकिन अब मैं कोई तुम्हें फूल नहीं बना रही हूँ। मैं सच में कालेज छोड़ रही हूँ। आज ही घर पर यह फाइनल हुआ है। बस, मैं केवल परीक्षा तक ही हूँ कालेज में।” माया ने कहा।

“लेकिन ऐसे बीच में कालेज छोड़ना तो ग़लत है ना। तुम्हारा एक साल बर्बाद हो जाएगा। और कम-से-कम मेरा तो सोच। मैं कैसे रह पाऊँगा तुम्हारे बिना? तुम्हें जब तक कालेज में न देखूँ तो लगता है कि अभी तक मेरा दिन तो शुरू ही नहीं हुआ है। और वैसे भी इस कालेज और उस कालेज में फ़र्क थोडे ही है? पढाई तो यहाँ भी हो सकती है।” वीर ने कहा।

“हाँ, पढ़ाई तो यहाँ भी हो सकती है। मैं ख़ुद भी नहीं चाहती थी इस कालेज को छोड़ना, लेकिन अब घर पर फ़ैसला

हो चुका है और वैसे भी मैं ये कालेज छोड़ रही हूँ, तुम्हें नहीं।" माया ने कहा।

"हाँ, वो तो ठीक है, लेकिन अब मिलना कम हो जाएगा न हमारा?" वीर ने माया से पूछा।

"ऐसा बिल्कुल भी नहीं होगा। हम मिलते रहेंगे। अब यह सब छोड़ो । सुबह होने वाली है। अब मैं फ़ोन रखती हूँ। कल बात करेंगे, बाय।" माया ने यह कहकर फ़ोन काट दिया।

माया के फ़ोन रखने के बाद बातों से हो रहे शोर ने कमरे में फैली ख़ामोशी के साथ सन्तुलन बना लिया था। वीर ने मोबाइल को चार्जिंग प्वाइंट में लगाया और बिस्तर पर पसर गया। वह थोड़ी देर सो जाना चाहता था, लेकिन माया के कालेज छोड़ने की बात के कारण नींद उसकी आँखों से ओझल हो गई थी। वह माया के बारे में सोच रहा था। उसकी आँखों के सामने माया को पहली बार देखने से लेकर अब तक के सारे दृश्य घूमने लगे थे। उसे एक-एक घटना, साथ बिताया एक-एक पल बारिकी से नज़र आ रहा था। माया के साथ बिताया हुआ समय चलचित्र बनकर वीर की आँखों के आगे चल रहा था।

वीर का माया को पहली बार देखना, कुछ दिनों तक दोनों का नज़रें चुराकर एक-दूसरे को देखना, माया को प्रपोज़ करना, उसकी कॉल का इन्तज़ार करना, उससे पहली बार सिटी हार्ट रेस्टोरेंट में मिलना, उसी रेस्टोरेंट की फेमस 'कसाटा आईसक्रीम' बार-बार खाना, कालेज में उसकी बॉटनी लैब की attendance प्रॉब्लम को सुलझाना, शहर के बाहर बने मशहूर जल महल को देखना तथा वहाँ बैठकर कुछ समय बिताना, खालडा वाले हनुमान मन्दिर में जाना और वहाँ बाहर सीढ़ियों पर बैठकर बातें करना, उसकी फ्रैंड़ के भाई की शादी में साथ जाना, सुभाष पार्क में पेड़ की छांव में बैठकर वहाँ घंटों तक समय बिताना, माया के हाथ के बढ़े हुए नाखूनों को हर बार काट देना यह कहकर कि मुझे बढ़े हुए नाखून अच्छे नहीं लगते, माया का घर से हलवा बना कर लाना और उसे बिना यह

बताए कि हलवा बहुत कच्चा था और उसमें मिट्टी के कारण किरकिराहट होते हुए भी खा लेना, कालेज से बस स्टैंड तक माया के जाते रहने पर बाइक से उसके पीछे दो-तीन बार चक्कर लगाना, माया को चॉकलेट लाकर देना, माया का वीर के जन्मदिन पर एक ब्राउन रंग की शर्ट ग़िफ्ट करना और माया को यह न बताना कि शर्ट के बाजू काफ़ी छोटे थे, घर का झूठ बोलना, उसी घर पर उन दोनों का मिलना और पहला किस करना, माया का एक बार कालेज में जींस पहन कर आना और उसे बाद में बताना कि जींस उस पर अच्छी नहीं लग रही थी, नीले रंग के सूट में माया का इतना ख़ूबसूरत लगना, उसके होंठों के नीचे के तिल से वीर के सीने का दिल चुराना, रवि को कालेज के बाहर बुलाकर समझाना, कालेज के पीछे खुले मैदान में हुई लडाई, माया को नया मोबाइल और सिम कार्ड देना, घंटों तक रात को माया से बात करना, फ़ोन बिज़ी आने पर घंटों तक इस पर लड़ाई करना, उसका नाराज़ होना, माया का वीर को लव-लैटर देना जिसमें तीन पेज़ पर केवल 'आई लव यू' ही लिखा था और आख़िरी पेज पर हाथ से बनाया हुआ मिकी माउस का कार्टून जिसमें रंग भरे हुए थे और नीचे लिखा था कि आपकी शक्ल बहुत स्वीट है, रात को वीर के कहने पर फ़ोन पर 'दिल को चुराया तूने सनम-पागल बनाया तूने सनम-आवारगी थी रहबर मेरी-जीना सिखाया तूने सनम' गाकर सुनाना, माया को तनुश्री दत्ता कहकर उसे चिढ़ाना, माया की तस्वीरें लेना, वीर की शर्ट पहन कर माया का बिस्तर पर लेट जाना, वीर के करीब आने पर माया का शर्म से वीर से लिपट जाना, वीर का माया के जिस्म पर बने तिलों को गिनना, फ़ोन पर प्यार की बातें करना, अजय से माया के बारे में बातें करना, बीयर और सिगरेट पीना छुपाना, अजय और माधवी का वीर को माया का नाम लेकर छेड़ना।

यह सब कुछ वीर की आँखों के आगे किसी फ़िल्म की तरह चल रहा था। उसे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था कि माया अब कुछ दिनों में कालेज छोड़कर जाने वाली है। अब

उससे मिलना कम हो जाएगा और देखना तो कभी-कभी हो पाएगा। माया ने तो कहा है कि उनका मिलना कभी कम नहीं होगा, लेकिन फिर भी इनसिक्योरिटी बार-बार वीर के दिमाग़ पर हावी हो रही थी।

काफ़ी देर तक माया के बारे में सोचते रहने के कारण वीर का मन तो सोने का बिल्कुल भी नहीं हो रहा था, लेकिन आँखों मे उसे नींद का बोझ-सा महसूस हुआ और वीर वहीं बिस्तर पर आँखें बन्द कर लेट गया।

जब इंसान प्यार में होता है तो वह अपने प्रेमी के अतिरिक्त कुछ सोच ही नहीं पाता है। यह एक प्रकार का जुनून बन जाता है और वह इंसान प्यार और प्रेमी के अलावा किसी अन्य काम पर एकाग्र नहीं हो सकता है।

आजकल की जनरेशन जो व्हाट्सऐप, वीडियो कॉल, चैटिंग, इंस्टाग्राम रिल्स में जूझती हुई प्यार तलाशती है, वो क्या जाने कि मिलने और देखने का जुनून क्या होता है? वो नहीं जान पाते उस समय की घुटन, इन्तज़ार, प्यार और खुशी को, जो बिल्कुल जुनूनी होती थी, जो आज की जनरेशन में ख़त्म होने की दहलीज़ पर है।

बेख़ौफ़-बेपरवाह प्यार

इंसान के बहुत सारे रूप होते हैं। अलग-अलग जगह पर अलग-अलग स्थिति और परिस्थितियों में उसके विभिन्न रूपों को देखा जा सकता है। इंसान किसी स्थिति में सामान्य इंसान की तरह बर्ताव करता है तो किसी परिस्थिति में अन्दर का शैतान बाहर आ जाता है। अक्सर लोगो ने उस रूप के निष्कर्ष को गुस्से या क्रोध का नाम दे रखा है। इस गुस्से की आड़ में इंसान कुछ असामान्य काम करता है।

माया के कालेज छोड़ने के दो महीने बाद वीर और माया मिले। दोनों पार्क में बैठ कर बातें कर रहे थे। माया वीर के लिए चावल के लड्डू लाई थी। वीर ने लड्डू खाए जो काफ़ी अच्छे बने थे। थोड़ी देर तक दोनों आपस में अपने कालेज, घर से संबंधित बातें करते रहे। वीर काफ़ी दिनों के बाद माया से मिल रहा था। वीर ने माया के नज़दीक जाकर उसके हाथों को अपने हाथों में ले लिया। जब वीर ने माया के हाथों को अपने हाथों में लिया तब उसने देखा कि माया ने फिर अपने नाखून बढ़ा लिए थे। वीर कुछ मिनट तक उन बढ़े हुए नाखूनों को देखता रहा और उसके दिमाग़ में यही बात घूम रही थी कि माया को मना करने के बाद भी उसने नाखून कैसे बढ़ा लिए?

इंसान के अन्दर से गुस्सा निकलने के लिए कोई छोटी बात या मामूली-सी दरार की ज़रूरत होती है, जिससे वह गुस्सा बाहर आने का अपना रास्ता बना सके। यही वीर के साथ हो रहा था। उसके गुस्से को निकलने के लिए दरार मिल चुकी थी। वीर ने माया से पूछा कि जब मैंने तुम्हें पहले ही मना किया था कि मुझे तुम्हारे बढ़े हुए नाखून पसन्द नहीं हैं और मैं पहले भी इनको काट चुका हूँ तो यह अब तुम्ने क्यों बढ़ाए? माया अपनी बात रख पाती, इससे पहले ही वीर का गुस्सा तेज़ हो गया और उसने माया को थप्पड़ लगा दिया। थप्पड़ लगने के बाद दोनों के बीच कुछ सेकेंड की ख़ामोशी रही। माया की आँखों से आंसू

निकल रहे थे। वह कुछ भी नहीं बोल रही थी। बस, आँसू उसकी आँखों से बहे जा रहे थे।

वीर वहाँ से खड़ा हुआ और माया से कहा कि तुम यहीं बैठो, मैं अभी आता हूँ। वीर पार्क से बाहर गया और दुकान से एक ब्लेड लेकर आया। जब वह माया के पास आया तो वह रो रही थी। वीर ने बिना कुछ कहे माया के अँगुलियों के बढ़े हुए नाखूनो को एक-एक कर ब्लेड से काट कर छोटे कर दिए। नाखून छोटे करने के बाद वीर ने माया से कहा कि अब आगे से ध्यान रखना, मुझे तुम्हारें हाथों में बढ़े हुए नाखून दोबारा नहीं दिखनें चाहिए। माया वहाँ चुपचाप बैठी थी। वो कुछ भी नहीं बोल रही थी। माया ने अपना हैंड़बैग उठाया और वहाँ से उठ खडी हुई। उसने वीर से कहा कि एक दिन तुमने कहा था कि बात शक़ की नहीं, हक़ की है। तो इस तरह का हक़, तुम मुझ पर जताना चाहते हो? वीर इसके आगे कुछ बोलता, माया वहाँ से चल पड़ी थी।

वीर वहीं बैठा माया के साथ हुई घटना को सोच रहा था। वीर को अब अपने ऊपर गुस्सा आ रहा था। उसे लग रहा था कि उसने माया के साथ ग़लत किया है। उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था, लेकिन वीर को ख़ुद समझ नहीं आ रहा था कि उसे एकदम से इतना गुस्सा कैसे आ गया कि उसने माया के ऊपर हाथ ही उठा दिया। वो माया को समझा भी तो सकता था। वैसे भी माया इतने दिनों के बाद मिली थी और उसने उसके साथ ऐसा कर दिया। वीर को अहसास हुआ कि उसने माया के साथ बहुत ग़लत कर दिया। वीर ने अपने मोबाइल से माया को कॉल किया, लेकिन माया ने फ़ोन काट दिया। वीर ने सोचा कि माया अभी गुस्से में होगी तो बाद में बात करनी चाहिए। वीर ने मोबाइल से माया को 'सॉरी' का मैसेज टाइप करके भेजा, लेकिन माया की तरफ़ से कोई जवाब नहीं मिला। वीर को लगा कि आज उससे अनजाने में बहुत बड़ी ग़लती हो गई है और वीर कुछ देर के लिए वहीं पर बैठा रहा।

वीर दो दिन से माया से 'सॉरी' कह रहा था, तब जाकर माया की नाराज़गी ख़त्म हुई थी। उन दो दिनों में माया से ठीक से बात न होने तथा उसकी नाराज़गी के कारण वीर हज़ार मौतें मरा था। वीर कुछ भी बर्दाश्त कर सकता था, लेकिन माया उससे दूर रहे या माया से बात न हो, यह वीर को कतई मंजूर नहीं था।

रात को जब वीर और माया फ़ोन पर बात कर रहे थे तो माया ने बताया कि कल उसके घरवाले कहीं बाहर जा रहे हैं। तो वीर ने माया से पूछा कि क्या तुम भी जा रही हो उनके साथ? माया ने कहा कि नहीं, मुझे कालेज जाना है तो मैं नहीं जा रही हूँ। वीर ने तब ऐसे ही अचानक से कह दिया कि तो मैं आ जाता हूँ कल तुम्हारे घर पर तुमसे मिलने के लिए।

"नहीं, बिल्कुल भी नहीं।" माया ने कहा।

"अरे,प्लीज़ ना यार। मिलते है ना। अच्छा कम से कम दो दिन पहले जो मैंने ग़लती की है, उसकी तो माफी सही से मांगने दो मिलकर।" वीर ने कहा।

"बस, तुमने माफी मांग ली और मैंने माफ भी कर दिया है।" माया ने कहा।

थोड़ी देर ना करने के बाद माया ने कहा कि ठीक है, आ जाना घर पर। हमारा घर तो ऊपर है, लेकिन नीचे तो मेरे चाचा, चाची और दादी भी रहते है, तो उनसे क्या कहोगे?

"अब यह तो मैं कैसे बताऊँ? तुम ही बताओ कि क्या कहू उन्हें?" वीर ने पूछा।

"उनको हमारे किसी रिलेटिव का नाम ले देना, तो फिर कुछ नहीं पूछेंगे।" माया ने सुझाव दिया।

वीर और अजय, दोनों सुबह माया के घर से एक किलोमीटर दूर थे। वीर अजय को साथ इसलिए लाया था कि अजय को इस तरह का experience पहले भी था और वैसे भी कहीं कोई दिक्कत हो भी जाए तो कम-से-कम मार खाने में

कोई साथ तो रहेगा। मोरल सपोर्ट नाम की भी तो कोई चीज़ होती है। वीर ने माया को फ़ोन कर दिया कि वो घर के बाहर पहुँच गया है। अजय ने वीर को माया के घर के बाहर छोड़ा और ख़ुद खेतों की तरफ़ बाइक लेकर निकल गया।

वीर जैसे ही माया के घर के अन्दर गया तो सामने ही उसकी दादी दिख गई। वीर के दिल में घबराहट ज़रूर थी, लेकिन जैसे-तैसे वीर ने हिम्मत की और दादी को नमस्कार किया। दादी कुछ बोलने को हुई, उससे पहले ही वीर सीधा ऊपर की तरफ़ चला गया। सामने ही कमरे में माया थी तो वीर सीधा वहीं चला गया। अब वहाँ थोड़ी औपचारिकता तो करनी ही थी क्योंकि माया ने नीचे यह बताया कि वीर कोई उनका दूर का रिलेटिव है। थोड़ी देर माया से बात करने के बाद माया ने वीर को अपना कमरा दिखाया और फिर किचन दिखाने के लिए लेकर गई। किचन थोड़ा साईड में अलग बना हुआ था। वीर और माया दोनों किचन के अन्दर गए तो वीर ने अन्दर से किचन का दरवाज़ा बन्द कर दिया और माया को अपने नज़दीक खींचकर गले लगा लिया। वीर अपने होंठ माया के कान के पास लेकर गया और उसे उस दिन के लिए 'सॉरी' कहा। जब माया ने कहा कि उसने उसे माफ कर दिया है तो वीर ने अपने होंठों को माया के होंठो पर रख दिया। पूरे किचन का माहौल रोमांटिक हो गया था। दोनों एक-दूसरे से इस कदर लिपटे रहे थे जैसे सांप चन्दन के पेड़ से लिपट जाता है। दोनों को इस बात का ज़रा भी ड़र नहीं था कि नीचे माया की चाची और दादी है। प्यार ऐसा ही तो होता है बेख़ौफ़, बेपरवाह। ऐसा ही था वीर और माया का भी प्यार, जो बेख़ौफ़ और बेपरवाह होने का उदाहरण प्रस्तुत कर रहा था। जब माया के हाथ से किचन की स्लैब पर रखा एक गिलास नीचे गिरा तब दोनों मदहोशी से होश में आए। दोनों ने अपने कपड़े ठीक किए और फिर दोनों किचन से बाहर कमरे में आ गए। दोनों की शरारत भरी नज़रें एक-दूसरे को देखकर

उठने-गिरने लगीं। दोनों को अपनी इस बेवकूफ़ी पर अन्दर ही अन्दर हँसी आ रही थी।

वीर के फ़ोन की घंटी बजी। उसने फ़ोन देखा तो अजय का फ़ोन आ रहा था। वीर ने घड़ी में टाइम देखा तो काफ़ी समय हो गया था। वीर ने माया से कहा कि बहुत टाइम हो गया है। अजय बाहर मेरा इन्तज़ार कर रहा है, तो मुझे निकलना होगा।

वीर माया के घर से बाहर आया तो अजय गली के बाहर बाइक पर बैठा वीर का इन्तज़ार कर रहा था। अजय ने बाइक स्टार्ट की और दोनों माया के गांव से शहर की तरफ़ निकल पड़े।

वजह तुम हो

समय की सबसे बुरी बात यही है कि समय सिर्फ आगे ही चलता है, पीछे नहीं जाता। हर कोई कभी न कभी यह ज़रुर सोचता होगा कि काश वक़्त कुछ पीछे चला जाए उन यादों में, जिन यादों को याद कर इंसान चेहरे पर एक मुस्कान ले आता है। वहाँ जाकर वह बहुत कुछ बदलना चाहता है, अपनी ग़लतियाँ सुधारना चाहता है, लेकिन ऐसा होता नहीं है। समय अपनी रफ्तार से बस आगे बढ़ता रहता है। समय जिस तेज़ी के साथ आगे बढ़ता चला जा रहा था, उसी तेज़ी के साथ वीर और माया का प्यार भी अपनी रफ़्तार पकड़ रहा था। बीच-बीच में दोनों के प्यार ने बहुत करवटें लीं, अनेकों ऐसी घटनाएं घटी, जिसके कारण उनके प्यार में बहुत उतार-चढ़ाव आए। इन्हीं उतार–चढ़ावों के कारण कभी उनका प्यार उनको गहरा महसूस करवाता था, तो कभी खोखला। लेकिन उनके प्यार की ख़ूबसूरती तो यही थी कि दोनों के रिलेशनशिप के बीच कितने ही उतार-चढ़ाव आए, किंतु उनके प्यार का प्रतिशत कभी नीचे नहीं गिरा।

तीन साल से वीर और माया का प्यार परवान चढ़ रहा था, लेकिन अब माया का बार-बार शादी की ज़िद करना ज़्यादा हो गया था।

“प्लीज़ तुम अपने घर पर बात करलो शादी के बारे में। नहीं तो बहुत दिक्कत हो जाएगी। मेरे घरवाले मेरे लिए लड़का देखने लग गए हैं। कहते हैं कि पढ़ाई पूरी होते ही शादी करवा देंगे, लेकिन मैं सिर्फ तुमसे शादी करना चाहती हूँ। तो तुम अपने घर पर बात कर लो।” माया ने चिन्ता ज़ाहिर की।

“मैं भी तो तुमसे शादी करना चाहता हूँ, लेकिन ये क्या बकवास है कि अभी लड़का देख रहे हैं? यार, अभी तुम उनको मना कर सकती हो कि अभी लड़का ना देखे। अभी हम शादी कैसे कर सकते है? न तो मेरे पास कोई नौकरी है और न ही

अभी मेरी पढ़ाई पूरी हुई है। तो तुम बताओ कैसे होगा यह सब? और वैसे भी मेरे घर पर बताने से क्या होने वाला है? वो थोडे ना मेरी शादी की बात कर रहे है? तुम्हारे घरवाले शादी की बात कर रहे है तो तुम ही उनको समझाओ कि अभी तुम इसके लिए तैयार नहीं हो।" वीर ने कहा।

"लेकिन वो मान नहीं रहे हैं। मैंने तो उन्हे बहुत बार मना किया हैं। एक बार उन्होने मुझे तुमसे बात करते हुए सुन लिया था तो तबसे ही लड़के देख रहे हैं। कहते हैं कि लड़का अभी देखेंगे, तब जाकर कहीं कालेज ख़त्म होते ही शादी करेंगे। अब मैं उनको कैसे समझाऊँ? मुझे तो ख़ुद कुछ समझ नहीं आ रहा है।" माया ने कहा।

"अभी इतना टेंशन लेने की ज़रूरत नहीं है। लड़का देख रहे हैं, देखने दो। अब वो तो अपना काम करेंगे ही। अगर आगे बात बढ़ती है तो फिर देखते है कि क्या करना है? हम एक-दूसरे से प्यार करते है तो किसी से भी शादी कैसे करेंगे? तुम बिल्कुल भी टेंशन मत लो।" वीर ने कहा।

माया और वीर की चिन्ता भी जायज़ थी, लेकिन दोनों के अभी शादी न करना और घर पर नहीं बताना भी अभी समय के हिसाब से जायज़ था।

माया ने वीर को कॉल किया और कहा कि उसके भाई का नारनौल के Polytechnic college में कुछ काम है तो तुम उसे मिल जाना और उसकी मदद कर देना। माया ने अपने भाई को बता दिया था कि नारनौल में उसका एक फ्रेंड़ है तो वहाँ जाकर उसे कॉल कर लेना, वो तुम्हें कालेज ले जाएगा। माया का भाई जब नारनौल आया तब वीर उसे बस-स्टैंड पर मिला और वहाँ से दोनों बाइक पर कालेज गए। उसने वहाँ से एड़मिशन फार्म लिया और फिर वीर ने माया के भाई का सारा काम करवाकर उसे वापिस बस स्टैंड पर छोड़ दिया।

माया शादी को लेकर पहले कभी-कभी कहती थी, लेकिन अब उसका शादी की ज़िद करना हर दूसरे दिन का काम

हो गया था। फ़ोन पर भी शादी की बातें, मिलकर भी शादी की बातें करना। माया और वीर की परेशानी साफ़ ज़ाहिर हो रही थी, लेकिन अभी घर पर शादी की बात करना बिना किसी आधार की बात थी। ऐसा नहीं था कि वीर माया से शादी नहीं करना चाहता था। वीर तो माया से इतना प्यार करता था कि वो उसके बिना रह ही नहीं सकता था, लेकिन दोनों की बार-बार शादी की बात को लेकर झगड़ा इतना बढ़ गया था कि दोनों ने कुछ दिनों तक बात तक नहीं की।

माया जब वीर को बार-बार फ़ोन करती तो वीर नाराज़गी के कारण उसका फ़ोन नहीं उठा रहा था। वीर को माया ने बहुत बार फ़ोन और मैसेज किए, लेकिन वीर की तरफ़ से कोई जवाब नहीं मिला। माया को इनसिक्योरिटी ने घेर लिया था। माया ने फ़ैसला किया कि अगर वीर उसका फ़ोन का जवाब नहीं दे रहा है तो वह उसके घर जाकर ही बात करेगी। माया वीर के घर का पता नहीं जानती थी। वो तो बस उस घर का पता जानती थी जो वीर ने अजय का घर बताया था। वीर के बार-बार फ़ोन काटने के कारण माया को इतना गुस्सा आ रहा था कि वो वीर को बिना मैसेज किए अपनी एक फ्रेंड़ के साथ वीर के घर पर पहुँच गई। माया ने दरवाज़ा खटखटाया और जब दरवाज़ा खुला तो सामने वीर था। दोनों ही एक-दूसरे को देखकर स्तब्ध थे। वीर को इतना गुस्सा आ रहा था कि माया बिना बताए यहाँ क्यूँ आ गई और माया तो इतनी अचंभित थी कि वीर ने माया को अपने घर से संबंधित झूठ कहा कि यह घर अजय का है जबकि वो वीर का ही घर था।

जब माया घर के अन्दर गई तो वीर का पूरा परिवार वहीं मौजूद था और माया ने वीर की बहन को सारी बातें बता दी कि वे दोनों एक-दूसरे को बहुत प्यार करते हैं और दोनों शादी करना चाहते हैं। माया के जाने के बाद वीर के घर पर स्यापा तो ज़रूर हुआ, लेकिन वीर ने जैसे-तैसे घर पर सँभाल लिया। वीर और माया की नाराज़गी अभी भी जारी थी। वीर माया से इसलिए

नाराज़ था कि माया बिना कोई कारण और बिना बताए घर पर आ गई और माया वीर से इसलिए नाराज़ थी कि वीर ने उससे घर का झूठ बोला था।

इस नाराज़गी और दूरी को ख़त्म करने के लिए कुछ दिन बाद वीर ने माया को फ़ोन किया, लेकिन माया वीर से बहुत ज़्यादा नाराज़ थी तो उसने फ़ोन उठाया ही नहीं। तब वीर सीधा माया के कालेज पहुँच गया। वहाँ पहुँचकर वीर ने माया को मैसेज किया कि वह उससे मिलने के लिए उसके कालेज के बाहर खड़ा है। मैसेज पढ़ने के बाद माया ने वीर को कॉल किया कि वह कालेज के पीछे गार्डन मे आए। जब वीर गार्डन मे गया तो माया भी वहाँ आ गई थी। वीर और माया ने एक-दूसरे को देखा और उनकी नाराज़गी एकदम से गायब हो गई। दोनों एक-दूसरे से बहुत कुछ कहना चाहते थे, लेकिन वहाँ माया के कालेज के कुछ लोग आ-जा रहे थे। गार्डन के दाईं तरफ़ कोने में एक 6-7 फुट की आकृति बनी हुई थी, जिसके ऊपर से पानी नीचे बह रहा था। दोनों चुपके-से उसके पीछे चले गए। वहाँ उन दोनों को कोई नहीं देख सकता था।

वीर ने माया से घर के बारे में झूठ बोलने पर माफ़ी मांगी। माया वीर से नाराज जरुर थी, लेकिन वीर ने यहाँ आकर माफ़ी मांगी, इसलिए माया ने भी उसे माफ कर दिया था क्योंकि दूरी और नाराज़गी तो माया को भी मंजूर नहीं थी। दोनों की आँखों में प्यार साफ़ झलक रहा था। जब वीर माया के करीब गया तो उसने माया से कहा कि जब भी तुम मुझसे नाराज होती हो तो पता नही मुझे क्या हो जाता है? ऐसा लगता है कि तुम्हारे बिना मेरी जिंदगी बेरंग हो गई है। जीवन के सारे रंग उड गए है और तुम जब भी मेरे करीब आती हो तो खुशबू में खुशबू घुल जाती है, पूरा वातावरण जैसे सुगंधित हो जाता है। तो देवी जी प्लीज़ मुझसे कभी भी इतना नाराज मत होना कि मेरी जिंदगी पूरी तरह से ही बेरंग हो जाए। माया ने वीर की बात सुनकर कहा कि अब मैं तुमसे कभी भी नाराज नही होऊंगी लेकिन तुम

भी प्लीज़ मुझसे कभी भी झूठ मत बोलना। वीर ने हामी भरी। माया वीर के करीब आई और उसके कान में 'आई लव यू' कहा और दोनों एक-दूसरे से वहीं लिपट गए।

इंसान ऐसे एक पल के सहारे पूरी जिंदगी काट सकता है, जब उसको उसका प्यार गले लगाकर यह बता दे कि आप कितने ख़ूबसूरत है, कितने अलग हैं और कितने अच्छे हैं।

वीर की एक ग़लत आदत दोनों के रिलेशनशिप में जगज़ाहिर हो चुकी थी कि वीर का हाथ बार-बार माया के ऊपर उठ जाता था। माया की कोई भी छोटी-सी ग़लती हो जाने पर वीर माया को थप्पड़ लगा देता था। हालांकि ऐसा करने के बाद वीर को बहुत बुरा लगता था, मगर फिर भी वीर बार-बार अपना सन्तुलन खो देता था। गुस्सा आने पर वह यह भी ध्यान नहीं रखता था कि वो लोग किसी सार्वजनिक जगह पर मिल रहे हैं। बस, माया से छोटी-सी भी ग़लती हुई तो वीर का हाथ उठ जाता था। माया वीर को कई बार कहती भी थी कि यह तुम्हारी आदत बहुत ग़लत है। मैं तुम्हारी यह आदत इसलिए सहन करती हूँ क्योंकि मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ। बस, फ़र्क यह है कि तुम गाल पर निशान देकर खुश हो और मैं जन्म भर की निशानी चाहती हूँ। ऐसी घटना घटने पर दोनों कुछ देर के लिए मौन हो जाते थे। ऐसा ही होता है, जब प्रेम की गंभीरता और गहराई बहुत ज़्यादा हो तो शब्द दुर्बल हो जाते हैं। इस प्यार की मज़बूती के कारण ही दोनों वीर की ग़लत आदत के बाद भी अब तक साथ थे। जीवन छोटा-सा है, परंतु वीर और माया का प्यार बहुत अधिक और गहरा था।

शायद वीर की इसी आदत को बदलने या वीर में बदलाव लाने के लिए एक दिन माया ने उसे गांधी जी की आत्मकथा 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' लाकर दी। वो यही चाहती होगी कि वीर अपनी इस आदत को बदले और किताब पढ़कर अपने अन्दर बदलाव लाए।

वीर के प्रैक्टिकल शुरु होने वाले थे। वीर ने माया को अपनी प्रैक्टिकल की नोटबुक दी और कहा कि दस दिन बाद मेरा प्रैक्टिकल है तो इसको तैयार कर देना। इन दस दिनों में हर रोज़ बात होने पर जब वीर नोटबुक के काम के बारे में पूछता तो माया यही कहती कि लिख रही हूँ। तुम्हारे प्रैक्टिकल से एक दिन पहले लिख कर दे दूँगी। वीर प्रैक्टिकल नोटबुक को लेकर निश्चित था कि नोटबुक माया लिख रही है और चार्ट वगैरह वीर ने अपनी किसी फ्रैंड़ को बनाने के लिए दे दिए थे।

प्रैक्टिकल के एक दिन पहले वीर ने सुबह माया को नोटबुक लौटाने को कहा। माया ने वीर से कहा कि नोटबुक शाम तक शालू (माया की एक फ्रैंड़) के घर से ले लेना। शाम को जब वीर शालू के घर प्रैक्टिकल नोटबुक लेने गया तब उसने देखा कि नोटबुक पूरी ख़ाली है। उसमें कुछ भी नहीं लिखा गया था। वीर शालू के घर से तो वो नोटबुक ले आया था, लेकिन वह रास्ते भर यही सोचता रहा कि माया ने उससे झूठ क्यों बोला? अगर माया को लिखना नहीं था तो मना कर देती। वो तो रोज़ कहती थी कि प्रैक्टिकल लिख रही हूँ। उसने इतना बडा झूठ क्यों बोला? इसी झुँझलाहट में वीर ने माया को कॉल किया तो माया ने कहा कि उसे टाइम नहीं मिला, 'सॉरी'। वीर आगे कुछ कह पाता, इससे पहले ही माया ने फ़ोन काट दिया। वीर इस घटना से बहुत आहत हुआ। माया का इस तरह का व्यवहार वीर ने पहली बार देखा था।

प्रैक्टिकल वाली बात को लेकर कुछ दिनों तक दोनों के बीच काफ़ी झगड़ा हुआ और अन्ततः नतीजा यह निकला कि दोनों ने बात करना ही बन्द कर दिया। माया लगातार वीर को फ़ोन कर रही थी, लेकिन वीर को माया का व्यवहार इतना बुरा लगा था कि वीर ने कुछ दिनों तक माया का फ़ोन उठाया ही नहीं।

कुछ दिनों के लिए वीर रेवाड़ी में था। माया का फ़ोन लगातार आ रहा था तो आख़िरकार वीर ने माया का फ़ोन

उठाया। दोनों प्रेमी युगल कब तक एक-दूसरे के बिना रह सकते थे? माया ने अपने इस झूठ को लेकर वीर से माफ़ी मांगी और वीर ने उसे कालेज बंक कर रेवाड़ी आने को कहा।

माया अगले दिन वीर से मिलने के लिए रेवाड़ी आ गई थी। दोनों कमरे में बैठकर बातें कर रहे थे। माया वीर से अपनी ग़लती की माफ़ी मांग रही थी। वीर भी चाहता था कि अब इस बात को बहुत दिन बीत चुके है तो अब माया को माफ़ कर देना चाहिए। वीर ने माया की तरफ़ देखा और उसका हाथ पकड़कर अपने ऊपर खींच लिया। माया ने वीर को किस किया और कहा कि 'सॉरी', मेरी ग़लती थी और मुझे उसका पछतावा भी है। वीर ने भी माया को किस करके बता दिया कि उसने माया को माफ़ कर दिया है।

ऐसा ही होता है जिंदगी की राहें ज़्यादातर पछतावें से ही खुलती हैं और पछतावें का अहसास भी एक साथ पैदा नहीं होता है, उसमें समय का अन्तराल होता है।

समय तेज़ी से गुज़र रहा था। दोनों के रिलेशनशिप को चार साल से ज़्यादा हो गए थे। इन चार सालों में कभी लड़ाई-झगड़े हुए, तो कभी प्यार हुआ, कभी नाराज़गी रही तो कभी-कभी कुछ दिनों की जुदाई भी दोनों को सहन करनी पड़ी, लेकिन प्यार कभी भी लेशमात्र कम नहीं हुआ। वीर अपनी स्नातकोत्तर पूरी कर चुका था और माया फाइनल ईयर में थी। आदि भी अपने आगे की पढ़ाई के लिए जयपुर चला गया था। नीलेश भी स्नातकोत्तर के लिए जयपुर में ही था। माधवी भी अपनी कालेज की पढाई में व्यस्त थी और माधवी के घरवालों ने उसकी शादी के लिए लड़का पसन्द कर लिया था। अजय ने अपने पिता का काम सँभाल लिया था, लेकिन उसकी मस्ती हमेशा चालू रहती थी। दाऊद का शिखा की स्नातकपूरी होने के बाद कुछ पता नहीं चला। उसने अपना मोबाइल नम्बर तक बदल लिया था। वीर भी आगे की तैयारी के लिए दिल्ली चला गया था। सभी अपने-अपने रास्ते हो लिए थे।

वीर और माया का भी यहाँ पर बुरा दौर चल रहा था। दोनों की लडाइयाँ बहुत ज़्यादा होने लगी थीं। वीर और माया के बीच काफ़ी दूरी हो गई थी, लेकिन फिर भी उनके एक-दूसरे के जितना करीब कोई नहीं था।

जन्नत -2

दिल्ली में रहते हुए वीर को दो महीने हो गए थे। इन दो महीनो में आदि और नीलेश से कोई बात नहीं हुई थी। वो दोनों अपने-अपने रास्तों पर हो लिए थे। माधवी से भी दिल्ली आने के बाद वीर की ज़्यादा बात नहीं हुई थी। अजय अपने पापा के बिज़नेस में बिज़ी हो गया था, लेकिन अजय और वीर की बात अक्सर होती रहती थी। अजय की जब भी वीर से बात होती तो वो हमेशा पूछता था कि माया कैसी है? वीर भी उसे कह देता था कि वह बहुत बढ़िया है। अब वीर अजय को कैसे बताए कि काफ़ी दिनों से माया से बात तक नहीं हुई है।

दिल्ली आने के बाद वीर और माया की फ़ोन पर इतनी बार लड़ाइयाँ हुईं कि दोनों को बीच बात तक होनी बन्द हो गई थी। लड़ाइयों के कारण हमेशा छोटे ही रहे, लेकिन नाराज़गी की अवधि लम्बी। माया वीर से कहती थी कि तूने दिल के बजाय दिमाग़ का इस्तेमाल किया है इस रिलेशनशिप में। अब तू मुझसे बिन वजह लड़ाइयाँ करता है ताकि हम दोनों अलग हो जाएँ, लेकिन ऐसा कुछ नहीं था। कारण हमेशा दोनों के पास होते थे, लेकिन इन कारणों का निष्कर्ष केवल जुदाई निकलती थी।

माया के अजीबो-ग़रीब व्यवहार के कारण वीर उससे नाराज़ रहता था। उसकी बार-बार शादी करने की ज़िद भी उन दोनों की लड़ाई का एक कारण थी। कभी काफ़ी समय ना मिल पाने के कारण दोनों की लड़ाई होती थी, कभी माया कहती थी कि तुम जानबूझ कर मुझे छोड़ना चाहते हो तो यही इल्ज़ाम वीर भी माया पर लगाता था। वीर को भी बुरा लगता था जब माया उसे यह सब कहती थी।

अक्ल का बोझ प्यार उठा नहीं पाता है और उसी बोझ के नीचे प्यार कहीं दब जाता है। भावना, प्रेम और सौंदर्य के उपासक को जब बुद्दि के ताने लगते है तो वह व्यंग्य से उबल

जाता है और यहीं दोनों के बीच कुछ दिनों पहले हुआ था। तब से माया और वीर की कोई भी बात नहीं हुई थी।

दिल्ली में वीर ख़ुद को काफ़ी अकेला महसूस करता था। वहाँ पर वीर के काफ़ी अच्छे दोस्त बन गए थे, लेकिन फिर भी एक अकेलापन हमेशा उस पर सवार रहता था। अन्ततः एक दिन वीर ने माया को कॉल किया।

"मैं नहीं रह सकता यार तुम्हारे बिना। मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ। अब इतने दिनों से तुमसे बात नहीं हुई तो लगता है कि कहीं कुछ ख़ाली है मेरे अन्दर। तुम समझती क्यूँ नहीं हो? क्यूँ नाराज रहती हो मुझसे? प्लीज़ ऐसा मत किया करो। मेरा मरने का दिल करता है फिर।" वीर ने कहा।

"क्यूँ ना रहूँ नाराज? लड़ाई तुमने की, वो भी बिना कोई वजह। मेरी हर बात पर तुम्हें शक हो जाता है। तुम मुझे दूर बैठे-बैठे कण्ट्रोल करना चाहते हो, बस। और अब यह तुम्हारी आदत हो गई है मुझसे झगड़ा करते रहने की। अब तो तुम मुझे धमकियां भी देने लग गए हो। तो फिर तो सही यही है न कि हम अब दूर ही रहें।" माया ने जवाब दिया।

"मैंने पहले ही कहा था कि हमारे बीच मे कुछ भी हो जाए, लेकिन हम कभी भी एक-दूसरे से अलग नहीं होंगे। और ग़लत सिर्फ़ मैं ही नहीं था, तुम्हारी ग़लती भी थी, लेकिन अब यह सब छोड़ो। मुझे मिलना है तुमसे। यहीं आ जाओ दिल्ली, प्लीज़।" वीर ने कहा।

"मैं दिल्ली कैसे आ सकती हूँ? मैं क्या बहाना बनाऊँगी दिल्ली आने का, यह भी तो सोचो।" माया ने अपनी चिन्ता जाहिर की।

"नहीं, मैं कुछ नहीं जानता। बस, तुम आ जाओ वरना, मैं तुम्हारे बिना मर जाऊँगा।" वीर ने कहा।

"जब इतने दिनों से मुझसे बात नहीं की तो तुम तब नहीं मरे तो अब अगर मै ना मिली तो कैसे मर जाओगे? यह सब

बकवास है तुम्हारे लिए प्यार, शादी, मरना।" माया ने कहा।

वीर ने इतना सुनते ही फ़ोन काट दिया। उसे पता था कि माया से ऐसा ही जवाब मिलेगा, क्योंकि ग़लती भी उसकी ही थी कि इतने दिनों से माया के पास फ़ोन नहीं किया था। और वैसे भी अब वीर माया के इस प्रकार के व्यवहार और जवाब का धीरे-धीरे अभ्यस्त होता जा रहा था।

अगले दिन माया का मैसेज आया कि वो कल दिल्ली आ रही है। उसने घर पर किसी फ्रेंड़ की शादी का बहाना बना दिया है तो बता देना कि कहाँ पर आना है। वीर ने मैसेज पढकर तुरंत माया को मैसेज किया कि गुड़गांव के एम.जी. रोड़ मेट्रो स्टेशन पर आ जाना। मैं वही पर आ जाऊँगा तुम्हें लेने के लिए।

अगली सुबह माया 10:00 बजे एम.जी. रोड़ मेट्रो स्टेशन पर पहुँच चुकी थी। वीर भी पन्द्रह मिनट बाद वहाँ पहुँच गया था। माया मेट्रो स्टेशन की सीढ़ियों के पास खड़ी थी। वीर ने जब उसे दूर से देखा तो उसे महसूस हुआ कि सारी ग़लती उसकी ही थी और उसे माया के साथ झगड़ा नहीं करना चाहिए था। जब वीर माया के करीब गया तो दोनों कुछ देर के लिए वही पर खड़े रहे।

"तो बताओ मुझसे हमेशा लड़ाई क्यूँ करते रहते हो? हमेशा मुझे परेशान करते रहते हो।" माया ने पूछा।

"मैं जानबूझ कर नहीं करता। बस, हो जाता है। मुझे एकदम से बहुत तेज़ गुस्सा आ जाता है और फिर वो गुस्सा तुम पर निकल जाता है।" वीर ने जवाब दिया।

"वाह! कल तक तुम नाराज थे। मुझसे लड़ाई कर रहे थे। और कह रहे थे कि लड़ाई का कारण मेरी ग़लती थी। मुझे धमका रहे थे और आज यह कह रहे हो कि ग़लती तुम्हारी थी।" माया ने कहा।

"बस, क्या करू? तुम्हें देखते ही सब कुछ भूल जाता हूँ और ना देखूँ तो पागल-सा हो जाता हूँ। और वैसे भी जब जब

तुम यह नीला रंग का सूट पहन कर आती हो ना तो यह नाराज़गी ग़ायब सी हो जाती है।" वीर ने माया का हाथ पकड़कर कहा।

दोनों मेट्रो से वीर के कमरे पर पहुँच गए थे। माया वीर के करीब आई और उसके सीने पर अपना चेहरा टिका दिया। वीर के दिल की धड़कन और माया के आँसुओं ने पुरानी बातों को झटक दिया और दोनों एक-दूसरे को महसूस होने लगे। यही तो प्रेम और प्रेमी की ख़ूबसूरती होती है.

"प्लीज़ वीर, मुझसे ऐसे मत किया करो। मैं नहीं रह सकती हूँ तुम्हारे बिना।" माया ने अपना चेहरा सीने से हटाकर सामने लाकर कहा।

"अब क्या करूँ? प्यार भी इतना है कि नाराज़गी भी ज़्यादा ही होती है, लेकिन हमेशा हमारा प्यार जीत जाता है। आई लव यू, माया।" वीर ने माया के होंठों पर अँगुलियाँ घुमाईं।

"अब देखो, तुम्हारी आँखों मे मेरे लिए कितना प्यार झलक रहा है और जब लड़ाई करते हो तो बातें भी उतना ही कड़वी करते हो।" माया ने कहा।

वीर ने कुछ देर तक माया को देखा और उसके चेहरे को अपनी अँगुलियों से छुआ। माया की आँखें बन्द थीं, लेकिन उनमें से आँसू की बूँद चेहरे के रास्ते लुढ़ककर नीचे फर्श पर बिखर गई। चाहे कितनी भी नाराज़गी हो, ये एक आंसू की बूँद हर बार काम करती है। दो प्रेमी एक-दूसरे को जितना प्यार दे सकते है, कोई भी प्यार उसका मुकाबला नहीं कर सकता है।

वीर ने पुरानी सारी बातो को ख़त्म कर माया की आँखों से आँसू सुखाने के लिए उसकी पलकों पर अपने होंठ रख दिए। ऐसी स्थिति में लड़का किसी लड़की से सहानुभूति रखता है। वीर ने माया को अपनी ओर करीब खींचकर अपनी बाँहों में भर लिया।

कुछ घंटे दोनों ने साथ कमरे में बिताए। उसके बाद वीर ने माया से कहा कि चलो, फ़िल्म देख कर आते हैं। दोनों फिर पास के सिनेमाघर में 'जन्नत-2' फिल्म देखने चले गए। फ़िल्म ख़त्म होने के बाद रात को दोनों ने बाहर डिनर किया और फिर वापस कमरे पर आ गए।

यह रात आज क़यामत ढाने वाली थी। यह पहला ऐसा मौक़ा था जब दोनों रात को साथ रुकने वाले थे। यह रात दोनों के लिए बहुत ख़ास थी। नींद तो दोनों की आँखों से ओझल थी।

माया बिस्तर पर बैठी हुई थी। वीर सामने दीवार के पास खड़ा माया को लगातार देखे जा रहा था। वीर की आँखों में प्यार साफ़ झलक रहा था। माया भी वीर की तरफ़ उन्हीं नज़रों से देख रही थी। दोनों एक-दूसरे में खोए हुए थे। वीर माया के करीब गया और बिस्तर पर लिटाकर उसे कसकर बाँहों में भर लिया।

माधवी की शादी को कुछ ही दिन बचे थे। वीर और अजय, दोनों ने तय किया कि माधवी को शादी में स्कूटी गिफ़्ट करेंगे। दस दिन के अन्दर स्कूटी ख़रीदनी थी। उसके लिए तकरीबन सत्तर हज़ार रूपए की ज़रूरत थी। दोनों के पास इतने पैसे नहीं थे, फिर भी दोनों पैसे जुगाड़ करने की अपनी पूरी कोशिश कर रहे थे। अजय ने आधे पैसों का इंतज़ाम कर लिया था और वीर के पास भी बीस हज़ार रूपए हो गए थे, लेकिन वीर के पास अभी पन्द्रह हज़ार रूपए कम पड़ रहे थे।

वीर की माया से एक हफ्ते से ठीक से बात नहीं हो पाई थी। जब भी वीर माया को कॉल करता तो माया कहती कि वो बिज़ी है, बाद में बात करेगी। वीर ने माया को फिर कॉल किया।

"कहाँ बिजी रहती है, यार? हमारी बात भी नहीं हो पा रही है।" वीर ने झुंझलाहट से कहा।

"कुछ ख़ास नहीं। बस, घर के काम और कालेज में प्रैक्टिकल के कारण बिज़ी थी।" माया ने जवाब दिया।

"अच्छा सुन, मुझे कुछ पैसों की ज़रूरत है। तुम्हारे पास से जुगाड़ हो सकता है क्या?" वीर ने लड़खड़ाती जुबान से पूछा।

"कितने चाहिए?"

"चाहिए तो पन्द्रह हज़ार लेकिन जितने हो सके, उतने कर देना।" वीर ने कहा।

"ठीक है, मैं करती हूं कुछ। सुन, मुझे तुझसे कुछ urgent बात करनी है।" माया ने कहा।

"हाँ, बोल ना?"

"नहीं फ़ोन पर नहीं। मैं दिल्ली आती हूँ, फिर बताऊँगी।" माया ने कहा।

"ठीक है दिल्ली तो आ जा, लेकिन घर पर क्या कहेगी?" वीर ने पूछा।

"वो मेरे रोहतक में पेपर है तो चार दिन रोहतक में ही रहना है, तो सोच रही हूँ कि दिल्ली होकर तुमसे मिलते हुए चली जाऊँ।" माया ने कहा।

"ठीक है, तो आजा दिल्ली फिर।" वीर ने कहा।

माया सुबह गुड़गांव के एम.जी. रोड़ मेट्रो स्टेशन पर पहुँच चुकी थी। वहाँ से दोनों मेट्रो से वीर के कमरे पर जाने के लिए निकल पड़े। रास्ते में माया ने वीर से कहा कि उसे फ़िल्म देखनी है। दोनों मेट्रो से उतरे और सीधे सिनेमाघर में पहुँच गए। वहाँ देखा कि 'बर्फी' फ़िल्म सिनेमाघरों में लगी हुई थी। वीर ने टिकट काउंटर से फ़िल्म की टिकट ली और दोनों सिनेमाघर के अन्दर चले गए।

फिल्म ख़त्म होने के बाद दोनों वीर के कमरे पर चले गए। माया ने वहाँ जाने के बाद अपने हैंड़बैग से 11,000 रूपए निकालकर वीर को दिए और कहा कि बस इतने ही पैसों का बन्दोबस्त हो पाया। वीर ने पैसे लिए और 'थैंक्स' कहा।

वीर ने माया से पूछा कि कल पेपर कितने बजे है? माया ने बताया कि पेपर सुबह 10:00 बजे है तो कल हमें सुबह जल्दी ही निकलना पडेगा।

"कुछ बात करनी थी न तुम्हें बता, क्या बात है? जो फ़ोन पर नहीं बता रही थी।" वीर ने पूछा।

"नहीं, कोई urgent बात नहीं है। बाद में बताती हूँ।" माया ने कहा।

"अरे बता न। अब इतना suspense क्यों बना रही है?" वीर ने फिर पूछा।

"नहीं, बाद में बता दूंगी।" माया ने अपना सिर वीर की गोद में रखते हुए कहा।

"ठीक है, जब मन करे तब बता देना।" वीर ने माया के चेहरे पर आए बालों को ठीक करते हुए कहा।

वीर और माया, दोनों ने सुबह कश्मीरी गेट से रोहतक के लिए बस पकड़ी। रास्ते में वीर ने अपनी एक फ्रेंड़ को फ़ोन कर दिया था कि वो एम.डी.यू. यूनिवर्सिटी के मेन गेट पर मिले। वीर को उसकी स्कूटी चाहिए थी ताकि माया को परीक्षा केन्द्र तक छोड़ कर आ सके। दो घंटे के बाद दोनों रोहतक पहुँच चुके थे। वहाँ से वीर यूनिवर्सिटी तक गया और स्कूटी पर माया को परीक्षा केन्द्र पर छोड़ दिया। थोड़ी देर बाद वीर वापिस यूनिवर्सिटी आया और अपनी फ्रेंड़ को स्कूटी रिटर्न कर वापिस दिल्ली आ गया था।

माया चार दिन के बाद परीक्षाएं देकर दिल्ली वापिस आई। रात को वीर और माया ने एक साथ खाना बनाया। माया ने वीर के लिए रोटियाँ सेंकीं तो वीर ने भी माया के लिए अंडा करी की सब्जी बनाई। दोनों एक-दूसरे का साथ पाकर बहुत खुश थे। वीर ने बताया कि परसों माधवी की शादी है तो उसे भी कल नारनौल जाना है। माया ने कहा कि यह तो बहुत अच्छा है, दोनों साथ ही चलते हैं। थोड़ा तुम्हारा साथ और मिल जाएगा मुझे। वीर ने माया के हाथों को अपने हाथ मे लिया और उसके नाखूनों को देखा। माया के नाखून छोटे थे। यह देखकर वीर और माया, दोनों हँसने लगे। वीर ने माया को अपने करीब खींचा और पूछा कि यह नाखून क्यों नहीं बढा रही हो? तब माया ने कहा कि तुम्हें पसन्द नहीं है न, इसलिए। तुम्हें जो पसन्द नहीं है वो मैं कभी नहीं कर सकती। यह सुनते ही वीर ने माया को अपनी बाँहों में ले लिया। दोनों अपलक एक-दूसरे को देखे जा रहे थे। दोनों ने एक-दूसरे को महसूस करना शुरू किया और अपनी ही कल्पना में खो गए। वीर ने अपने हाथ की अँगुलियाँ माया के चेहरे पर घुमाईं और उसके होंठों के नीचे तिल के पास ले जाकर रोक दिया।

"तुम्हारा तिल कितना ख़ूबसूरत है, माया? दिल करता है इसे चूम लूँ।" वीर ने शरारती लहजे में कहा।

"अच्छा! कितनी बार चूमोगे इसे?"

"अनगिनत बार, जब तक मेरे सीने में दिल धड़कता रहेगा तब तक तुम्हें, तुम्हारे तिल, होंठ, जिस्म सभी को चूमता रहूँगा।" वीर ने माया के कान में धीरे से कहा।

"बस-बस हो गया तुम्हारा मक्खन लगाना। अब छोड़ो मुझे, कल घर भी जाना है।" माया ने वीर की मजबूत बाँहों की जकड़ से छुड़ाने की कोशिश करते हुए कहा।

"नहीं, प्लीज़ अब यह दूरी बर्दाश्त के बाहर है।" वीर ने उसे अपने ओर करीब लाकर कहा।

"बर्दाश्त के बाहर तो मेरे भी है, मगर समझा करो।" माया ने कहा।

लेकिन वीर उसे छोड़ना नहीं चाहता था। वो चाहता था कि माया उसकी बाँहों में जीवन भर ऐसे ही रहे। वो बस उसे देखता रहे, महसूस करता रहे, प्यार करता रहें।

"माया, तुम बहुत ख़ूबसूरत हो। दिल करता है, तुम हमेशा मेरी बाँहों में ऐसे ही रहो। ऐसे ही हम एक-दूसरे को देखते रहें। डर लगता है यह सोचकर कि अगर मैंने पकड़ ढीली की तो तुम दूर न हो जाओ मुझसे और मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ। आई लव यू यार, माया।" वीर ने अपना हाथ माया की कमर से नीचे ले जाते हुए कहा।

"आई लव यू टू बाबा, पर अब छोड़ो मुझे....."

लेकिन माया अपनी बात पूरी कह पाती, उससे पहले ही वीर ने अपने होंठों से माया के होंठो को सिल दिया। माया अब वीर की बांहो में पिघल रही थी। वीर का स्पर्श माया को बहका रहा था। दोनों एक-दूसरे को किस करते हुए बिस्तर तक जा पहुंचे। अब बिस्तर पर सिलवटें पड़ रही थीं और कमरे में पिन ड्रॉप ख़ामोशी ने अपने पैर पसार लिए थे।

सुबह 07:00 बजे सराय रोहिल्ला रेलवे स्टेशन से ट्रेन थी। वीर और माया जब रेलवे स्टेशन पहुंचे तब ट्रेन ने पहली सीटी मार दी थी। तब वीर और माया, दोनों ट्रेन की तरफ़ दौड़े और ट्रेन में चढ गए। लेट होने के कारण वीर टिकट नहीं ले पाया था। बिना टिकट ट्रेन का सफर करना, यह दोनों के लिए एक नया experience था।

"टिकट तो ली नहीं है। अब अगर टिकट चेक करने आ गए तो क्या करेंगे?" माया ने अपना हैंड़बैग सीट पर रखकर कहा।

"अब लेट हो गए थे तो क्या कर सकते हैं? अब कोई जानबूझ कर तो टिकट ली नहीं है। देखते हैं, अगर कोई आता है तो। वैसे इस ट्रेन के जनरल डिब्बे में टिकट कम ही चेक होती है।" वीर ने कहा।

"अब अपनी यह मजबूरी तो वो समझेंगे नहीं।" माया ने कहा।

"टेंशन मत ले। मैं हूँ ना।" कहकर वीर ने पानी की बोतल बैग से निकाली।

हालांकि दोनों 09:00 बजे रेवाड़ी पहुँच चुके थे। उस दिन टिकट चेक नहीं हुई थी तो दोनों बच गए थे। उसके बाद वीर और माया ने रेवाड़ी से नारनौल के लिए बस पकडी। एक घंटे के बाद दोनों नारनौल पहुँच गए थे। दोनों ने वहाँ पहुँचकर जूस पिया और माया बस से अपने घर के लिए निकल गई।

माया के जाने के बाद वीर ने अजय को कॉल किया। जब अजय आया तो वीर ने उसे तीस हज़ार रूपए दिए और कहा कि बस, इतने का ही जुगाड़ हो पाया है बाकी के तुम adjust कर लेना और स्कूटी ख़रीद लेना। अजय ने वीर के कंधे पर हाथ रखा और कहा कि बेटा, स्कूटी ख़रीदने के लिए तुझे भी साथ चलना पडेगा। अजय ने बाइक स्टार्ट की और वीर ने पीछे बैठते हुए अजय से कहा कि यार, मेरा जाने का मन

नहीं है तो तू मुझे घर पर छोड़ दे। अजय ने वीर को घर पर छोड़ा और कहा कि ठीक है, स्कूटी तो मैं खरीद कर ले आऊँगा। बस, तू कल शादी में जाने के लिए टाइम पर तैयार रहना। वीर ने हामी भरी और अजय वहां से निकल गया।

अगले दिन माया का वीर के पास कॉल आया। माया ने कहा कि तुमसे कुछ ज़रूरी बात करनी है।

"बात तो तुम्हें दिल्ली भी करनी थी, लेकिन वहाँ तुमने कुछ बताया ही नहीं।" वीर ने कहा।

"हाँ, बस तब मैं नहीं बता पाई। पहले सोचा था कि तुम्हें मिल कर बताऊँगी, लेकिन मिलने पर हिम्मत ही नहीं हुई तुमसे कहने की।" माया ने कहा।

"तो अब बता दो। ऐसी भी क्या बात है, जो हिम्मत ही नहीं हो पा रही।" वीर ने गंभीरता से पूछा।

"वो मैं तुमसे दिल्ली मिलने आई थी तब उससे पहले एक हफ़्ते बिज़ी थी। मैं बिजी इसलिए थी कि मेरी engagement हो गई है।" माया ने लड़खड़ाती जुबान से कहा।

"वेरी गुड़.....मैं ही मिलता हूँ तुम्हें फूल बनाने के लिए? सही है।" वीर ने हँसते हुए कहा।

"मज़ाक़ नहीं है ये और न ही मैं कोई तुमको इस बार फूल बना रही हूँ। तुम्हारी क़सम, यही सच है कि मेरी engagement हो गई है और कुछ महीनों के बाद शादी भी है।" माया ने कहा।

फ़ोन पर ख़ामोशी छा गई। जब माया ने चुप्पी तोड़ते हुए 'हैलो' कहा तब वीर ने फ़ोन काट दिया। वीर ने सोचा कि अगर माया ने क़सम खाकर बात कही है तो वो झूठ नहीं हो सकती है। वीर के पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई थी। वीर ने जैसे ही माया की बात सुनी, वह एकाएक सुन्न पड़ गया था और नसों में बहता रक्त जम-सा गया था। उसे महसूस हुआ कि आस-पास

सब कुछ थम-सा गया था, उसे ऐसा लगा कि जैसे किसी ने उसे ऊँचे पहाड़ से नीचे धकेल दिया हो और जिस्म के सैकड़ों टुकडे हो गए हों। वीर कमरे में वहीं नीचे बैठ गया। उसके दिमाग़ ने काम करना बन्द कर दिया था। दिल तो बुरी तरह घायल ही हो गया था। वह बस बार-बार यही सोच रहा था कि यह एकदम से उसके रिश्ते में कैसी प्रलय आई है? यह किस तरह का प्यार माया ने उसके साथ किया है, जो उसे बताना तक जरुरी नहीं समझा। माया के इस तरह के व्यवहार के कारण वीर को बहुत गुस्सा आ रहा था। उसे माया से ऐसी उम्मीद बिलकुल भी नहीं थी।

रात अपनी दस्तक दे चुकी थी। कमरे में अँधेरा बिखर चुका था, लेकिन वीर काफ़ी देर से वहीं गुमसुम बैठा था। चुपचाप अकेला। उसे पता नहीं क्यूँ यक़ीन नहीं हो रहा था, लेकिन कुछ अजीब-सा ज़रूर लग रहा था जो उसे ख़ुद समझ नहीं आ रहा था कि माया उसके साथ ऐसा कैसे कर सकती है?

शाम को अजय ने वीर के कमरे की लाइट जलाईं तो उसने देखा कि वीर वहीं नीचे बैठा था और पसीने से तर-ब-तर था।

"भैंचो, यहां अँधेरे में अकेले क्या कर रहा है? चल, हाथ दिखा अपना।" अजय ने वीर के करीब आकर कहा।

वीर ने अजय की तरफ़ देखा और कुछ नहीं कहा।

"चल, खड़ा हो न। शादी में नहीं चलना क्या?" अजय ने वीर के कंधे को हिलाकर कहा।

"तू चल। मैं थोड़ी देर में आता हूँ।" वीर ने कमरे से बाहर निकलते हुए कहा।

अजय के जाने के बाद वीर नीचे आया और बिना तैयार हुए घर से निकलकर सीधा राधा-कृष्ण मंदिर पहुँचकर बाहर सीढ़ियों पर बैठ गया। अजय बार-बार वीर के पास फ़ोन कर रहा था, लेकिन वीर किसी का भी फ़ोन उठाने की स्थिति में

नहीं था। इसी बीच दो बार माधवी का भी फ़ोन आया, लेकिन वीर ने उसका भी फ़ोन नहीं उठाया।

रात के 03:00 बज रहे थे। वीर वहीं पर बैठा माया के बारे में सोच रहा था। उसे अब पक्का यक़ीन हो गया था कि माया ने यह जानबूझ ही किया है क्योंकि माया से दिन में बात न हो तो चल जाता था, लेकिन माया रात को जरुर फ़ोन करती थी। लेकिन आज माया का फ़ोन नहीं आया था।

वीर के पास अजय का फ़ोन आया। वीर ने फ़ोन उठाया तो अजय ने पहले उसे दो-चार गालियाँ दी और पूछा कि कहाँ पर है? वीर ने बताया कि वो शाम से ही यहीं मंदिर के बाहर बैठा है। इतना कहकर वीर ने फ़ोन काट दिया।

थोड़ी ही देर में अजय वीर के पास पंहुच गया था। वीर ने जब अजय को देखा तो सीढ़ियों से उठकर सीधा उसके गले लग गया। वीर की आँखों से आंसू गिर रहे थे।

"अबे, क्या हुआ? क्या बात है? बोल ना, भाई" अजय ने पूछा।

"लुट गए, भाई। अब कुछ नहीं बचा मेरी लाइफ़ में। सब कुछ ख़त्म हो गया है।" वीर ने आँसू पोंछते हुए कहा।

"अब बताएगा भी कि क्या हुआ?" अजय ने गुस्से से पूछा।

"माया ने engagement कर ली है। अब सब ख़त्म हो गया है।" वीर ने कहा।

"यार, कौन से ग्रह से आते हो तुम दोनों? दो दिन पहले तुझसे बात हुई तो तूने कहा था कि माया तेरे साथ दिल्ली में है और आज तू कह रहा है कि उसने engagement कर ली है। जब उसने engagement कर ली है तो वो तेरे पास क्या कर रही थी?" अजय ने सिगरेट सुलगाकर कहा।

"ये तो मुझे भी समझ में नहीं आ रहा है कि उसने प्यार दिल से किया था या सगाई अपनी मर्ज़ी से की है? साला एक

हफ्ते में दो बार दिल्ली आकर मिल चुकी है। पूरी रात मेरे साथ बिताई है। वहाँ उसके चेहरे पर ऐसे भाव ही नहीं थे कि वो ऐसा कांड़ कर के बैठी है।" वीर ने सिगरेट अजय से लेकर कहा।

"अब जो हो गया हैं, वो तो हो गया। छोड़ न उसे अब। मैंने कहीं पढ़ा है कि पुरुषों में अनेक दोष होते है, लेकिन लड़कियों में केवल दो, जो भी वो कहती हैं और जो भी वो करती हैं। मैंने तो तुझे पहले ही कहा था कि वो तेरे लिए सही नहीं है, तेरे प्यार के लायक नहीं थीं वो। और एक बात बता कि तेरा प्यार हमारी दोस्ती से भी बड़ा हो गया जो तू माधवी की शादी में भी नहीं आया?" अजय ने कहा।

"हाँ, मेरा प्यार सबसे बड़ा है।" वीर ने कहा।

"'है' मत कह अब 'था' हो गया है और वैसे भी हर चूतिए की लाइफ़ में एक ऐसा समय आता है कि उसे अपने किए हुए चुतियापे का अहसास होने लगता है। तू भी अभी अहसास करले तो अच्छा रहेगा वरना आगे इससे भी ज़्यादा पछताएगा। जिस मंदिर के बाहर बैठा है ना इन्हें ही अपना प्रेम नसीब नहीं हुआ तो तू क्या है बे? साला एक टुच्ची-सी लड़की के चक्कर में देवदास बनकर बैठा है। काट गई तेरा, समझा?" अजय ने गुस्से से कहा।

"चल जा यहाँ से तू। नहीं तो क़सम से कुछ ग़लत हो जाएगा मुझसे। निकल यहाँ से।" वीर ने अजय पर चिल्ला कर हाथ से जाने का इशारा करते हुए कहा।

अजय वहाँ से चला गया था। वीर वहीं पर बैठा रहा। उसे लगा, जैसे माया के जाने से अब उसके पास कुछ नहीं बचा है। वह मर जाना चाहता था, लेकिन जिस प्रकार का वीर का व्यवहार था, अपना जवाब लिये बिना तो वो मरने वाला भी नहीं था।

सुबह से वीर लगातार माया को कॉल किए जा रहा था, लेकिन माया फ़ोन नहीं उठा रही थी। वीर ने माया को मैसेज भी किए, लेकिन माया से किसी भी मैसेज का जवाब नहीं आया।

वीर का गुस्सा तेज़ हो रहा था। वीर ने अजय को कॉल किया, लेकिन कल की नाराज़गी के कारण अजय ने भी फ़ोन नहीं उठाया। तब वीर सीधा माया के कालेज पहुँच गया। कालेज के बाहर से वीर ने माया को मैसेज किया कि वो उसके कालेज के बाहर है और वो आकर उससे मिले, लेकिन माया ने कोई जवाब नहीं दिया। वीर लगातार माया को फ़ोन किए जा रहा था। काफ़ी देर बाद माया ने परेशान होकर वीर को मैसेज किया कि वो कालेज के बाहर कोई सीन क्रिएट नहीं करना चाहती, इसलिए वो वहाँ से चला जाए। वीर को माया के इस तरह के व्यवहार पर गुस्सा आ रहा था। वीर ने भी पक्का सोच लिया था कि आज माया से मिलकर अपना जवाब लेकर ही जाना है। वीर वहीं कालेज के बाहर बैठकर माया के बाहर आने का इन्तज़ार करने लगा।

चार घंटे के बाद माया कालेज से बाहर आई और उसने वहाँ वीर को देखा। वीर को देखते ही माया का चेहरा सफ़ेद पड़ गया था। उसे बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी कि वीर अभी तक बाहर ही होगा। वीर ने माया को देखा और सीधा उसके पास आया और माया से कहा कि कुछ बात करनी है। माया ने वीर की तरफ़ देखा, जिसमें गुस्से का ज्वालामुखी दहक रहा था। माया ने वीर से कहा कि यहाँ बात नहीं कर सकते है। तुम मेरे साथ चलो। दोनों बस में बैठकर माया के घर की तरफ़ निकल गए। दोनों माया के घर से एक किलोमीटर दूर उतरे और वहाँ से पैदल घर की तरफ़ चल पडे।

रास्ते में वीर ने माया से पूछा कि तुमने ऐसा क्यों किया? लेकिन माया बिना कोई जवाब दिए चलती ही जा रही थी। वो शायद यही सोच रही थी कि जल्द ही उसका घर आ जाएगा और वीर वहाँ से चला जाएगा।

“मैंने तो तुम्हें बहुत बार शादी के लिए कहा था, लेकिन तुम तो सुनते ही नहीं थे। शायद तुम्हें शादी करनी ही नहीं थी। अब मेरे घरवाले तो मुझे घर पर बैठाकर नहीं रख सकते हैं।

उन्हे तो वैसे ही मुझपर शक़ हो गया था कि मैं रात भर तुमसे बात करती हूँ तो जो भी उन्हे मिला, बस उससे मेरी engagement कर दी।" माया ने कहा।

"क्या यही प्यार था हमारे बीच? इस धोखे की उम्मीद नहीं थी तुमसे। मैंने कभी भी शादी के लिए तुम्हें मना नहीं किया। बस, यही कहता था कि अभी शादी नहीं कर सकते है, लेकिन तुमने तो मेरे प्यार की बलि चढ़ा दी और engagement ही कर ली। वैसे चिल्लाती रहती थी कि शादी करनी है तो जब लड़का फाइनल हुआ और सगाई हुई तब क्यूँ नहीं बताया मुझे? तब मैं ज़रुर कुछ करता। तू एक कदम तो बढ़ती मै दौड कर सब कुछ ठीक कर देता, लेकिन तुमने तो बात छुपाई और मुझे बताना तक ज़रूरी नहीं समझा।" वीर ने गुस्से से कहा।

"अब जैसा तुम्हें समझना है, वो समझ लो, लेकिन अब मेरा पीछा छोड़ो। घर नज़दीक है मेरा।" माया ने झुंझलाकर कहा।

यह सुनकर वीर का गुस्सा तेज़ हो गया और उसने वहीं पर माया को थप्पड़ लगा दिया और कहा कि तू बहुत बडी धोखेबाज़ है। जब तेरी engagement ही हो गई थी तो मेरे पास दिल्ली क्यूँ आई? वहाँ तो प्यार की बड़ी-बड़ी बातें कर रही थी, लेकिन वो तो सब तेरे लिए ड्रामा था ना?

"मैं तो अब भी तुमसे ही प्यार करती हूँ और हमेशा करती रहूँगी, लेकिन तुम मेरे प्यार को समझ ही नहीं सकते।" माया ने कहा।

"हाँ, सही कहा। मैं नहीं समझ सकता। साला तेरा प्यार तो उर्दू की लिखावट-सा निकला मुझे तो वाक़ई में देर से समझ में आया।" वीर ने कहा।

वीर के गुस्से की आग इतनी तेज़ थी कि आज कोई भी सामने होता तो शायद जल ही जाता। वीर का गुस्से और दिमाग़ ख़राब का ऐसा मिश्रण हुआ कि उसने फिर माया के दो-तीन

थप्पड़ लगा दिए और कहा कि आज तेरे घर पर ही चल और अपने घरवालों से कह कि तू मुझसे प्यार करती है और उससे शादी नहीं कर सकती।

वीर माया के साथ उसके घर पर चला गया। वहाँ ऊपर माया की माँ और भाई थे। वहाँ पहुँचकर माया ने अपनी माँ से कहा कि वो यह engagement तोड़ना चाहती है और वीर से प्यार करती है। माया की माँ ने वीर की तरफ़ देखा और माया को थप्पड़ लगा दिया। अब वहाँ कुछ ही देर में स्थिती गंभीर हो गई थी। माया की माँ वीर को धमकी भरे डायलॉग फेंक रही थी। वीर ने माया की तरफ़ देखा, जिसकी आँखों से आंसुँओं की धार बह रही थी। माया ने वीर की तरफ़ देखा और उसे वहाँ से जाने का इशारा किया। माया की आंखों में आँसू देखकर वीर थोड़ा शान्त हो गया और वहाँ से चुपचाप निकल आया।

वीर के दिल को बहुत बड़ा धक्का लगा था। उसने कभी भी माया से इस तरह का धोखा मिलने का कभी सपने में भी expect नहीं किया था। वह गंभीर और शान्त हो गया था। वीर ने सोच लिया था कि वह अब कभी भी माया से बात नहीं करेगा और न ही उसके रास्ते मे कभी आएगा। जब माया ने ख़ुद उसे इतना बड़ा दर्द दिया है तो आगे अब किस चीज की उम्मीद की जा सकती थी?

भुला देंगे तुमको सनम धीरे-धीरे

दिल जब टूट जाता है तो विरह की एक लम्बी अवधि बीत जाने पर भी पहले जैसा नहीं हो पाता। दिल एक सजीव पदार्थ है, क्षण में उसकी परिणति होती है और क्षण में ही परिवर्तन। वीर के भी दिल में अब दरारें पड़ चुकी थी। माया के द्वारा किया गया इस प्रकार का धोखा वीर की सहनशक्ति से आगे निकल चुका था। वीर का मन अब किसी चीज़ में नहीं लग रहा था। वह पागल-सा होता जा रहा था। माधवी का वीर को बहुत बार फ़ोन आया लेकिन, उसकी शादी के बाद वीर ने उससे बात तक नहीं की थी। आदि और नीलेश भी कभी-कभी बात करने के लिए फ़ोन करते थे, लेकिन वीर ने उनका फ़ोन भी उठाना बन्द कर दिया था। अजय से तो वीर की बातें होती रहती थीं, लेकिन अब वीर उससे भी थोड़ा-सा कटने लग गया था। वीर अब कुछ ज़्यादा ही सिगरेट पीने लग गया था। बीयर की जगह शराब ने ले ली थी।

वीर दिल्ली में था। अजय भी दो दिनों के लिए दिल्ली आया हुआ था। दोनों शराब पीने लग रहे थे।

"भाई, इतनी शराब ठीक नहीं है। कभी-कभी चल जाती है, लेकिन तेरा तो अब रोज़ का हो गया है। कल आदि का भी फ़ोन आया था। कह रहा था कि वीर फ़ोन नहीं उठाता है। कहाँ पर है वो? कैसा है वो? अब उसे तेरे हालात तो नहीं बता सकता न। अब माया को छोड़ ना यार, भूल जा उसको। जैसा करेगी वैसा भरेगी वो।" अजय ने कहा।

"दिन तो बुरे निकल ही रहे हैं, लेकिन रात इस शराब की वजह से मेहरबान हो जाती है मुझ पर। बेहोश होकर कम से कम सो तो जाता हूँ। माया के बारे में जब भी सोचता हूं तो ख़ुद पर हँसी आती है। उसके कहे एक-एक शब्द मुझे कांच की तरह चुभते हैं। ऐसा लगता है जैसे कि मेरा ख़ुद का खंजर आकर मुझे ख़ुद चुभा है। आंख बन्द करता हूँ तो उसका चेहरा नज़र

आता है। इतना दुखता है न अन्दर से कि प्राण भी दर्द से बाहर आने के लिए दिल की दीवारों को खोदता है। मैं उसके बिना नहीं रह सकता हूँ, अजय मेरे भाई। मर जाऊँगा मैं उसके बिना।" वीर ने रोते हुए अपना एक पैग बनाया।

वीर वही बातें रोज़ शाम होते ही शुरू कर देता था। बातों के साथ-साथ शराब भी ज़्यादा हो जाती थी। वीर माया के दु:ख से उभर नहीं पा रहा था। अजय दोस्ती में बस बैठा सुनता रहता था और वीर को हमेशा की तरह समझाने की नाकाम कोशिश करता रहता था।

शराब पीने के बाद अजय खाना लेने के लिए नीचे गया हुआ था। तब वीर के पास माया का कॉल आया। वीर ने फ़ोन नहीं उठाया। माया ने वीर के पास मैसेज किया कि बहुत urgent काम है, प्लीज़ फ़ोन पिक करो। माया का जब दोबारा कॉल आया तो वीर ने फ़ोन उठाया।

"फ़ोन क्यूँ नहीं उठा रहा? कहाँ पर है?" माया ने पूछा।

"क्यों? तुझे क्या करना है? बता किस लिए फ़ोन किया है?" वीर ने पूछा।

"क्यूँ फ़ोन नहीं कर सकती क्या मैं?" माया ने कहा।

"एक हफ्ते से तो तूने मेरा हाल तक नहीं जाना और कह रही है कि फ़ोन नहीं कर सकती क्या? बता किसलिए फ़ोन किया है? नहीं तो मैं फ़ोन रख दूंगा।" वीर ने गुस्से से कहा।

"मैं Pregnant हूँ। कुछ दिन पहले जब दिल्ली मिले थे शायद तभी हुआ यह सब। अब बता क्या करना है?" माया ने कहा।

"मुझसे क्या पूछ रही है? Engagement करी जब मुझसे पूछा था या बताया था? धोखेबाज है तू समझी ना? दोस्त हमेशा कहते थे कि तेरा प्यार में कटेगा, लेकिन मैं मानता ही नहीं था और देख, तूने आखिरकार वो कर दिया जो वो कहते थे।" वीर ने सिगरेट जलाकर कहा।

"बकवास न कर। बता क्या करना है Pregnancy का? मैं कोई बच्चा नहीं चाहती। बहुत दिक्कत हो जाएगी अगर किसी को पता चल जाएगा तो।" माया ने कहा।

"तो मैं क्या करूं? गिरा दे बच्चे को। कम से कम तेरी लाइफ़ में तो आगे कोई प्रॉब्लम नहीं होगी।" वीर ने कहा।

"तो मुझे गोली लाकर दे बच्चा गिराने की और तुझसे मिलना भी है। प्लीज़ मना मत करना, तुझे मेरी क़सम है।" माया ने कहा।

"ये क़सम का ड्रामा मत कर। तुझे इन सब से कोई घंटा फर्क नहीं पड़ता है, समझी ना। और मैं क्यूँ लाकर दू तुझे गोली? अपने नए आशिक से मंगवा ले, जिसके साथ घर बसाने के सपने बुन रही है।" वीर ने कहा।

"तुझे तो पड़ता है ना फर्क, तो मान जा मेरी बात, एक बार मिल ले।" माया ने कहा।

वीर ने आगे बिना कुछ कहें फ़ोन काट दिया। वीर ने बोतल मे बची शराब को गिलास में डाला और पी गया। वीर चुपचाप बैठा था। उसका चेहरा भावहीन था, लेकिन उसके दिल किस स्थिति से गुजर रहा था वो ख़ुद ही जानता था। अजय जब खाना लेकर आया तो वीर ने अजय से कहा कि तेरे एक दोस्त की मेडिकल शॉप है न, उससे बच्चा गिराने की पिल चाहिए कल।

"अबे, तुझे क्या करना है उसका?" अजय ने पूछा।

"वो माया का कॉल आया था। जब कुछ दिन पहले हम दिल्ली मिले थे तो उसे अब पता चला है कि वो Pregnant हो गई है। अब उसे बच्चा गिराने की गोली चाहिए।" वीर ने कहा।

"और तू क्या चाहता है?" अजय ने पूछा।

"मेरे चाहने और न चाहने से क्या होता है? मैं तो माया को भी चाहता हूं, लेकिन क्या हुआ? अब माया जब यह सब

पहले से ही तय कर चुकी है तो यही ठीक रहेगा उसके लिए।" वीर ने कहा।

"भैंचो, हद है यार तुम्हारी भी। कोई शर्म ही नहीं है तुम दोनों को। ये साला रण्डी रोने के चक्कर में मारी जा रही है तेरी और तू हँस कर मरवाए जा रहा है।" अजय ने गुस्से से कहा।

"अब ज्ञान मत पेल। दवाई लाकर देगा या नहीं, बस ये बता।" वीर ने पूछा।

"मिल जाएगी। अब मरा साले अपनी।" अजय ने सिगरेट सुलगाते हुए कहा।

वीर ने माया को मैसेज किया कि कल **10:00** बजे नारनौल आ जाना।

अगले दिन सुबह वीर माया से मिलने के लिए नारनौल चला गया। वीर बस-स्टैण्ड पर माया का इन्तज़ार कर रहा था। जब माया आई तो वीर ने उसके आते ही दवाई दी और वहाँ से जाने के लिए मुडा।

"सुनो, कुछ बात करनी है।" माया ने पीछे से आवाज़ दी।

"लेकिन मुझे कोई बात नहीं करनी।" वीर ने कहा।

"प्लीज़ थोड़ी देर, कुछ **urgent** काम है।" माया ने कहा।

"इस **urgent** बात से मुझे इतना ड़र लगने लग गया है कि अब तो तुझ पर भरोसा भी नहीं है। और वैसे भी अब कहाँ इतनी हिम्मत है कि तेरी कोई **urgent** बात सहन कर सकूं? ख़ैर, अब तुम्हारी जुदाई से बड़ी क्या बात हो सकती है? चल, वो भी बता अब।" वीर ने कहा।

"यहाँ नहीं। कहीं बाहर चलते है।" माया ने चलते हुए कहा।

वीर और माया, दोनों सुभाष पार्क के पीछे बने रास्ते पर खड़े थे। वीर ने माया से कहा कि अब बताओ क्या बात है?

"मैंने तुम्हें अब तक जो भी दिया है वो वापिस चाहिए।" माया ने कहा।

"क्या वापिस चाहिए, मैं समझा नहीं?" वीर ने अचंभे से कहा।

माया की बात सुनकर वीर थोड़ा असहज और अचंभित हुआ। वह सोच रहा था कि माया के पास इतना दिल कहाँ से आया होगा जो वो मुझसे सब लौटाने को कह रही है। वीर ने माया की तरफ़ देखा और उसे वो सब लौटाने से मना कर दिया, जो माया वीर से लौटाने को कह रही थी।

"प्लीज़, वीर मुझे वो सब वापिस चाहिए जो मैंने तुम्हें दिया था।" माया ने गुस्से से कहा।

"वो सब क्या, क्या दिया है तुमने मुझे? मेरे पास तो तुम्हारा केवल प्यार है और वो भी अब मुझसे दूर जा रहा है जानबूझ कर। कहाँ है तुम्हारा प्यार, जो मैं तुम्हारी आँखों में देख नहीं पा रहा हूँ? कहीं खो गया है या तुमने ही उसे बाहर निकाल कर फेंक दिया है? कहाँ निकाल कर फेंक दिया किसी कचरे के ड़ब्बे में या अपने पैरो से रौंद दिया? ज़रा दिखाओं तो अपने कठोर पैर, जिनसे तुमने मेरे नाजुक प्यार को चींटी की तरह मसल कर रख दिया।" वीर ने माया की आखों में अपने उस खोए हुए प्यार को ढूंढ़ते हुए कहा।

वीर अब थोड़ा भावुक हो चला था।

"मुझे तुम्हारी कोई बकवास नहीं सुननी। मैं इसके लिए तुमसे मिलने नहीं आई हूँ, मुझे वो सब वापिस चाहिए, बस।"

"अपने पाँच साल के रिलेशन में तुम्हारी यादें हैं केवल मेरे पास, तुम्हारा स्पर्श है, तुम्हारी ख़ुशबू है और तुम्हारे अनगिनत किस हैं, अगर इन्हें मेरे से जुदा कर सकती हो तो ले जाओ, लेकिन तुम इन सब यादों और पलों को मुझसे छीनकर क्या करोगी? फिर इन्हें भी रौंद दोगी तुम।"

"वीर, प्लीज़ मुझे ज़्यादा गुस्सा मत दिलाओ। ये यादें, पल और किस तुम अपने पास रखो, मुझे इनमें से कुछ भी नहीं चाहिए। मुझे अपनी तस्वीरें, लव लैटर और गिफ़्ट चाहिए, जो मैंने तुम्हें इन पाँच सालों में दिए हैं। मैं तुम्हारे पास अपना कुछ भी नहीं छोड़ना चाहती, कुछ भी नहीं।" माया ने अपनी आवाज़ को थोड़ा तेज़ करते हुए कहा।

"नहीं, वो सब तो मैं तुम्हें नहीं दे सकता। इन सब पर तो केवल मेरा ही हक़ है। यहीं कहा था न तुमने जब मुझे यह सब दिया था। फिर आज तुम क्यों इन्हे मुझसे वापस करने को कह रही हो?" वीर ने सड़क की दूसरी तरफ़ देखते हुए कहा।

दोनों सड़क के एक तरफ़ खडे होकर कभी धीमे तो कभी चिल्लाकर बातें कर रहे थे। वीर से बार-बार न सुनने पर माया का गुस्सा तेज़ होता जा रहा था और उसने अचानक वीर का कॉलर पकड़ लिया।

"मुझे अपना सब कुछ वापिस चाहिए, बस। मुझे तुम पर अब बिल्कुल भी यक़ीन नहीं है। मेरी आगे की जिंदगी में तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं है और उसे तुम बर्बाद कर सकते हो। वो सब मुझे लौटा दो, नहीं तो मैं कुछ भी कर सकती हूँ।" माया का गुस्सा अब अपनी पराकाष्ठा पर था।

वीर माया को अचंभित होकर देख रहा था। उसे बिल्कुल भी यक़ीन नहीं हो रहा था कि माया उसके साथ इस तरह का बर्ताव करेगी। उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। अब वीर को भी गुस्सा आने लगा था, लेकिन उसने अपने गुस्से पर कण्ट्रोल किया। वीर ने माया का हाथ अपने कॉलर से हटाया और अपनी कमर के दोनों तरफ़ हाथ रखकर सड़क की दूसरी तरफ़ किनारे पर लगे पेड़ को देखने लगा, जिसके सुखे पत्ते पेड़ से अलग होकर नीचे ज़मीन पर गिर रहे थे। वो सोच रहा था कि इस पेड़ और उन पत्तों को भी तकलीफ़ होती होगी जो एक-दूसरे से जुदा हो रहे है।

कुछ सोचने के बाद वीर ने माया की तरफ़ देखा और वो सब कुछ देने से मना कर दिया, जिसके लिए माया उससे मिलने आई थी। माया ने गुस्से से वीर की तरफ़ देखा और कहा कि ठीक है, रखो तुम अपने पास उन्हे, लेकिन अब जो होगा, उसके ज़िम्मेदार तुम ख़ुद होगे। इतना कहते ही माया वहाँ से जाने लगी।

माया जब भी मुलाकात के बाद बस स्टॉप तक जाती थी तो वीर हमेशा उसके साथ जाता था, लेकिन आज वो नहीं गया और न ही उसने जाती हुई माया को देखना चाहा। वीर माया को रोक लेना चाहता था। वो उसे कह देना चाहता था कि मत जाओ, मेरी धड़कन हो तुम, लेकिन अब उसे ये नहीं मालूम था कि वो माया को किस हक़ से रोकता? वो सड़क के दूसरे किनारे लगे उस पेड़ के पास गया और उसने ज़मीन पर गिरा एक सूखा पत्ता उठाया और पेड़ की तरफ़ देखने लगा। प्रेमी जब दिल तोड़कर जा रहा होता है तो उसे रोकना नहीं चाहिए क्योंकि जब वह जा रहा होता है तो दरअसल दिल से प्रेम पहले ही जा चुका होता है।

तू बेवफ़ा है

हम जिससे भी प्यार करते हैं, जिसको भी दिल में ख़ास जगह देते हैं, वो धीरे-धीरे हमारा एक अंग बन जाता है। जब भी हम अपने प्यार से घृणा दर्शाते हैं तो उनके साथ-साथ हम ख़ुद को भी प्रताड़ित करते हैं। जितनी तकलीफ़ हमें अपना प्यार देता है, उससे कहीं ज़्यादा तकलीफ़ उसी प्यार के कारण हम ख़ुद को भी देते हैं।

ऐसी ही तकलीफ़ जो वीर को माया से मिली थी, उससे कहीं ज़्यादा वीर ख़ुद को दे रहा था। माया और वीर की बातें बिल्कुल बन्द हो चुकी थीं। दोनों एक-दूसरे से जुदा हो गए थे। वीर को माया से बात किए हुए आठ महीने हो चुके थे। इतने लम्बे समय तक कभी भी दोनों एक-दूसरे से दूर नहीं रहे थे, लेकिन अब कारण ही ऐसा था कि माया वीर से बात नहीं करना चाहती थी और वीर के पास माया से बात करने का कोई हक़ ही नहीं बचा था।

वीर आठ महीनें से अपने घर भी नहीं गया था। अजय वीर से मिलने के लिए दिल्ली आता रहता था। वीर पूरी तरह से टूट चुका था। उसके आँसू सूख चुके थे। अब जब भी वह रोना चाहता था तो अन्दर से सिर्फ़ उसका दिल रोता था, आँसू बाहर नहीं निकलते थे। माया पर वीर का गर्व और विश्वास टूट चुका था। माया से मिले धोखे ने उसे पूरी तरह से बिखराकर रख दिया था। वीर हर पल माया के बारे में सोचता रहता था। न चाहते हुए भी माया का चेहरा, उसके साथ बिताए हुए पल वीर की आँखों के सामने आते रहते थे। माया के द्वारा किए गए विश्वासघात ने वीर को अन्दर तक झकझोर कर रख दिया था।

अविश्वास की रंग इतना गहरा हो चुका था कि प्यार मृतप्राय हो गया था। वीर हमेशा सोचता था कि उसे माया कभी दिखी ही क्यों? क्यों उसने माया को प्रपोज़ किया और क्यों उसने माया को इतना ज़्यादा प्यार किया? इस 'प्यार' के नाम से

ही वीर नफ़रत करने लग गया था। कई बार वीर मरने की सोचता और मर भी जाता अगर अजय उसके साथ नहीं होता तो। नफ़रत ही अब वीर और माया के प्यार की पहचान बन चुकी थी। नफ़रत में प्रेमी पहले ख़ुद को प्रताड़ित, अपमानित और दंशित करता है, फिर उस नफ़रत को बढ़ाने के लिए अपनी पुरानी यादों की खाद से उसे सींचता है और फिर प्यार में की गई बेइंतहा नफ़रत से प्रेमी मौन हो जाता है।

नशे में जब माया की यादें वीर पर हावी होतीं तो बेहोश होने की स्थिति तक वह पीता रहता था। उसे माया का याद आना, किस करना, 'आई लव यू' बोलना प्रताड़ित कर रहा था। जब भी माया द्वारा कहा हुआ 'आई लव यू' वीर को याद आता तो अचानक ही वीर के मुंह से 'आई लव यू टू' निकल जाता। जब वीर ऐसा बार-बार करता तो वह ख़ुद को यक़ीन दिलाना चाहता था कि वाक़ई में प्यार है, लेकिन वह सच नहीं होता था। सच तो यह था कि माया अब खुश थी और वीर उसकी खुशी के लिए हर पल ख़ुद को प्रताड़ित कर रहा था। वीर का मन और आँसू सूख चुके थे। इंसान के मन और आँसू सूख जाने के लिए मौसम के बदलने की दरकार नहीं होती। किसी अपने का साथ छूट जाना ही काफ़ी होता है।

रात के 11:00 बज रहे थे। वीर और अजय, दोनों छत पर बैठे थे। दोनों एक बोतल पूरी ख़ाली कर चुके थे। अजय अपने मोबाइल में कुछ देख रहा था और वीर आसमान में शून्य की तरफ़ लगातार देख रहा था। वीर के फ़ोन की घंटी बजी। वीर ने देखा कि माया का कॉल आ रहा था। वीर ने फ़ोन काट दिया। अजय ने वीर से कहा कि उठा लेता उस बेदर्दी का फ़ोन, शायद तुझे अभी और दर्द देना बाक़ी हो। वीर ने कुछ नहीं कहा और लगातार शून्य में ही ताकता रहा। दोबारा फ़ोन की घंटी बजी तो अजय ने वीर की तरफ़ इशारा किया कि उठा ले। वीर ने फ़ोन उठाया।

"कैसे हो?" माया ने पूछा।

"ठीक हूँ।" वीर ने जवाब दिया।

"कहाँ पर हो?" माया ने फिर पूछा।

"क्यों तुम्हें क्या करना है? तुम्हें तो अब इस बात से कोई मतलब नहीं होना चाहिए।" वीर ने बेरुखी से कहा।

"परसो मेरी शादी है। तो सोचा कि तुमसे एक बार बात कर लूं।" माया ने कहा।

यह सुनने के बाद वीर कुछ नहीं बोला। दोनों के बीच फ़ोन पर कुछ देर तक चुप्पी रही और फिर अचानक वीर फूट-फूटकर रो पड़ा। वो लड़का जो आज तक किसी बड़ी से बड़ी बात पर भी नहीं रोया, जब वह रो देता है अपने प्यार के दूर जाने पर, तब ख़ुद भगवान भी रो देता है और आ जाती है उसके आँसुओं से बाढ़।

"प्लीज़ मत कर तू ऐसा। मैं मर जाऊँगा तेरे बिन। ये शादी मत कर। मैं नहीं रह पाऊँगा तुझसे अलग होकर। और मैं जानता हूँ कि तू भी नहीं रह पाएगी।" वीर ने रोते हुए कहा।

"यह अब नहीं हो सकता। मैंने तुम्हें कितनी बार शादी के लिए कहा। कितनी बार कहा तुम्हें कि घर पर बात कर लो। वो लड़का देख रहे हैं, लेकिन तुम तो यही कहते रहे कि कुछ नही होने वाला। बाद में देखेंगे। तो अब देख लो बाद में देखने का नतीज़ा।" माया ने गुस्से से कहा।

"हाँ, कहता था कि बाद में देखेंगे। कभी यह तो नहीं कहा न कि नहीं देखेंगे। और तुम साला बहुत बडी कपटी निकली। जब लड़का फ़ाइनल किया और Engagement की, तब मुझसे बात छुपाई। बता, कौन हुआ धोखेबाज अब?" वीर ने कहा।

"अगर तुझे मेरी मजबूरी समझ में नहीं आती तो फिर मान ले मुझे धोखेबाज़, लेकिन एक बात मत भूलना कभी कि प्यार सिर्फ़ तुझसे किया है और आगे भी तुझसे ही रहेगा। अगर तुझसे प्यार नहीं होता न तो उस थर्ड क्लास लड़के से शादी के

लिए 'हाँ' नहीं करती। छोड़, तूने आज तक मुझे समझने की कोशिश ही नहीं कि तो आज क्या समझेगा?" माया ने कहा।

"भैंचो, क्या है तू? मैंने क्या नहीं समझा तुझे? आज तो अच्छी तरह से समझ चुका हूँ। बेवफ़ा है तू, समझी बेवफ़ा।" वीर ने चिल्लाकर कहा।

"मैं बेवफ़ा नहीं हूँ और सुन कुत्ते, मुझे आज के बाद कभी बेवफ़ा मत कहना। यह देखना कि मैं आगे भी अपना प्यार निभाउँगी और तू मुझे आगे से कभी भी फ़ोन करने की कोशिश मत करना।" माया ने भी चिल्लाकर कहा और फ़ोन काट दिया।

वीर को माया की बातों पर इतना गुस्सा आया कि उसने अपना फ़ोन छत से नीचे फेंक दिया। लड़ाई प्रेम की आख़िरी हद होती है। इंसान इस झुंझलाहट में लड़ता है कि आप जिसे अपना मानते हैं, जिसे प्रेम करते हैं, जिसके लिए जीते हैं, मरते हैं, वह आपका क्यूँ नहीं है?

मेहँदी लगे हाथ

वीर और अजय, दोनों घर पर आ गए थे। आज वो दिन था जिस दिन की कल्पना वीर ने कभी भी नहीं की थी। वीर सुबह से ही अपने कमरे के अन्दर था। वीर ने माया के दिए हुए गिफ़्ट्स, तस्वीरें, लव-लैटर, उसकी बालों की क्लिप आदि सब कुछ निकालकर बैड़ पर रखा हुआ था। वीर उनको छूकर देख रहा था। उसकी आँखों से आँसू लगातार निकल रहे थे। वह अचानक ही बोल पड़ता कि माया तुम सिर्फ़ मेरी हो। प्लीज़, ऐसा मत करो, लेकिन वहाँ उसे ना कोई सुनने वाला था और ना ही कोई सँभालने वाला।

जब वीर के आँसू सूख गए तब वह मौन होकर कमरे में बैठा रहा। शाम को अजय वीर के पास आया तो उसने उसे उसका मोबाइल ठीक करवाकर दिया, जो छत से फेंकने के कारण टूट गया था। अजय ने देखा कि कमरे में माया की यादे बिखरी पड़ी थी और वीर बस बैठा उन्हें देखे जा रहा था। अजय को महसूस हुआ कि आज अगर वीर को अकेला छोड़ा तो जरुर कुछ गड़बड़ हो सकती है।

अजय वीर को थोड़ी देर के लिए बाहर ले गया। रास्ते में वीर ने कहा कि आज दारू पीते हैं। दोनों बोतल लेकर शाम को उसी रास्ते पर पहुँच गए जहाँ वीर ने माया को प्रपोज़ किया था। हल्का अँधेरा बिखर रहा था। आधी बोतल ख़ाली करने के बाद वीर ने अपना मोबाइल चालू किया। मोबाइल चालू होते ही उस पर माया का मैसेज आया जो एक दिन पहले का था। मैसेज में लिखा था कि वो वीर के साथ घर छोड़कर चलना चाहती है, वह उस लड़के से शादी नहीं करना चाहती। जो कुछ भी हो रहा है वो मजबूरी में कर रही है। वीर ने मैसेज अजय को दिखाया।

“अबे नहीं, यार। प्लीज़ अब मत शुरू करो यार तुम लोग। तेरे चक्कर में एक तो मैं वैसे ही ज़्यादा पीने लग गया हूँ

और ऊपर से साला तुम लोगो का चुतियापा ही ख़त्म नहीं होता है।" अजय ने झुंझलाकर कहा।

"यार, अब तू देख। तुझे तो सब बात पता ही है। माया मुझसे बहुत प्यार करती है। उसकी मजबूरी थी क्योंकि वो जब भी मुझसे शादी की कहती तो मैं यह कहता कि हाँ करेंगे, लेकिन कभी भी उसे सही जवाब नहीं दिया। यार, वो बहुत नादान है। फँस जाएगी किसी ग़लत बन्दे के साथ।" वीर ने कहा।

"पागल हो गया है क्या तू? वो कहीं प्यार-व्यार नहीं करती तुझसे, समझा? अगर करती तो अपने घरवालों से झगड़ा तो करती कि उसे शादी अभी नहीं करनी या तुझसे करनी है, लेकिन उसने 'हाँ' कर दी और तुझे बताया तक नहीं। नादान तो वो बिल्कुल भी नहीं है बहुत चालू है, समझा? अपनी आंखों से ये इश्क़ का पर्दा हटा और सच्चाई देख।" अजय ने सिगरेट का कश लगाते हुए कहा।

"नहीं, ऐसा नहीं है। यह मैसेज देखा न तूने? वो मेरे बिना नहीं रह सकती है। बुला रही है वो मुझे।" वीर ने कहा।

"अब मैसेज दिखा रहा है कि वो बुला रही है। और परसो तुझको गाली दे रही थी और कह रही थी कि आगे से कभी फ़ोन मत करना।" अजय ने कहा।

"भाई, वो कभी-कभी गुस्सा होती है तो कुछ भी बोल देती है। कभी-कभी वो चण्डी का रूप ले लेती है, लेकिन छोड़ यह सब अब चलते है और तेरी भाभी को लेकर आते है।" वीर ने कहा।

"अबे, चण्डी नहीं रण्डी है वो, समझा। तुझे चूतिया बना रही है वो शुरुआत से। मैंने तो तुझे पहले भी कहा था।" अजय ने गुस्से से चिल्लाकर कहा।

अजय की बात सुनकर वीर को गुस्सा आ गया। उसने अजय का कॉलर पकड़ लिया और कहा कि कभी भी यह बात

माया के लिए मत बोलना, नहीं तो मार दूंगा, समझा?

"भाई सॉरी, यार। मुझसे तेरी यह तड़प देखी नहीं जाती और इससे पहले मैंने तुझे कभी इतना कमज़ोर बनते नहीं देखा।" अजय ने कहा।

"चल तो। आज माया के घर चलते हैं और उसे लेकर आते हैं।" वीर ने कहा।

"साला, क्या-क्या करना पड़ेगा तेरे प्यार के चक्कर में? कह रहा है कि किसी ग़लत बन्दे के साथ फँस जाएगी, मुझे तो अभी तू ही ग़लत बन्दा लग रहा है।" अजय ने बाइक पर बैठते हुए कहा।

अजय ने बाइक स्टार्ट की और विक्की के घर की तरफ़ निकल गए। विक्की अजय का दोस्त था जो बदमाशों का बदमाश था। विक्की को इस तरह के काम का पहले भी Experience था। वो ख़ुद दो बार लड़की को घर से भगाकर ले जा चुका था। इसलिए अजय ने विक्की को साथ ले जाना ही ठीक समझा। विक्की ने दो बेसबॉल के बल्ले बाइक में लगाए और तीनों ने माया के घर की तरफ़ रफ़्तार पकड़ ली।

तीनों एक घंटे के बाद माया के घर के पास पहुंचे। तीनों ने माया के घर से 500 मीटर दूर बाइक खड़ी की। विक्की ने वीर और अजय से कहा कि भाई, पहले तुम दोनों जाकर रेकी कर आओ और वीर अपनी बन्दी से बात कर लेगा। अगर वो 'हाँ' करती है तो फिर तीनों उसको प्लानिंग के साथ लेकर आएंगे, क्योंकि ऐसे मामलों में प्लानिंग ही सब कुछ होता है। नहीं तो गड़बड़ भी हो सकती है। मेरा नाम इसलिए ही तो ख़राब है कि दो बार लड़की को घर से लेकर भाग गया, अब कोई यह नहीं बताता कि एक ही लड़की को दो बार लेकर भागा हूँ क्योंकि पहली बार में प्लानिंग नहीं की थी तो सब गड़बड़ हो गया था, इसलिए दोस्तों, इस चीज़ में प्लानिंग ही सब कुछ है।

वीर और अजय, दोनों माया के घर की तरफ़ चल पड़े। माया के घर के मेन गेट के पास ही शादी का स्टेज बना हुआ

था। वीर और अजय जब मेन गेट के पास पहुँचे तो वीर ने स्टेज पर माया को देखा। वो मुस्कुरा रही थी। वीर ने माया को मुस्कुराते हुए देखा और वहीं पर रुक गया। वीर की आँखों से आँसू लुढ़ककर नीचे गिर गए। अजय ने वीर से कहा कि भाई, ये तो खुश है इस शादी से। इसे देखकर तो बिल्कुल भी नहीं लगता कि वो शादी नहीं करना चाहती। तो उसने वो मैसेज वैसे ही मज़ाक़ में कर दिया था क्या?

वीर वहाँ से मुडा और दीवार के साथ लगकर खड़ा हो गया। उसने अपनी आँखें बन्द की और कुछ सेकेंड़ के बाद वीर ने आँखें खोली और वहाँ से वापिस चल दिया। उसके पीछे-पीछे अजय भी वापिस चल दिया। वीर विक्की के पास पहुंचा और रोड़ के साइड़ में खेत में जाकर पसर गया और रोने लगा। विक्की ने अजय से पूछा कि क्या हुआ?

"भैंचो, जब इंसान के नीचे का Testesterone Hormone दिमाग़ में चढ़ जाता है ना, तो इसके जैसे चूतिए आशिक़ पैदा होते हैं जो सही और ग़लत में पहचान ही नहीं कर पाते। वफ़ाएं तक लौटकर नहीं आती आज के टाइम में और इसे बेवफ़ा के लौटकर आने की उम्मीद थी। अभी इसको रो ही लेने दो। जब इसके अन्दर का गुबार बाहर निकल जाएगा न, तब ही चलेंगे यहाँ से।" अजय ने अपनी पॉकेट से सिगरेट का पैकेट निकालते हुए कहा।

थोड़ी देर बाद विक्की और अजय वीर के पास गए, जिसके रोने में जुदाई का दर्द और तड़प थी।

"भाई, चल न अब यहाँ से। ख़त्म कर यह सब अब। मैंने तो तुझे पहले ही कहा था कि यहाँ मत आ। तुझसे यह सब सहन नहीं होगा। माया पर तू विश्वास कर रहा था और उसकी सच्चाई तो तूने यहाँ देख ही ली।" अजय ने वीर के पास नीचे बैठकर कहा।

"भाई, यह तो सब जीवन में चलता ही रहता है। अपना प्यार खोया है तूने। मानता हूँ कि दर्द होता है कहीं जो चुभता

रहता है जीवनभर, लेकिन आगे तेरे पूरी लाइफ़ पड़ी है और तुझे बहुत कुछ करना है।" विक्की ने कहा।

"मुझे यहाँ नहीं आना चाहिए था। मैंने वो देखा जो मुझे कभी भी इस तरह नहीं देखना था। मैंने माया को शादी के जोड़े में देखा और वो भी किसी और के लिए। ये सहन ही नहीं हो रहा है मुझसे। और वो वहाँ मुस्कुरा रही थी। उसकी मुस्कुराहट ने मेरा दिल चीर दिया। माना कि आगे भी शायद कर लूँगा जीवन में कुछ, लेकिन जीवनभर मुझे ये चुभता रहेगा कि माया के मेहँदी लगे हाथ मेरे नहीं हो पाए।" वीर ने दोनों की तरफ़ देखकर आंसू पोंछते हुए कहा।

अजय ने वीर को खड़ा किया और कहा कि अब यह प्यार की रट लगाना छोड़ और याद रख, फ़रेब नाम भी प्यार की एक खोज है। मैं थोड़ी देर में आता हूं और फिर यहाँ से निकलते है। अजय के वापिस आने के बाद तीनों वहाँ से अपने घर की तरफ़ चल दिए। उन्होंने विक्की को उसके घर पर छोड़ा और वो दोनों आधी बची शराब की बोतल को ख़ाली करने के लिए बैठ गए।

यह रात वीर के लिए एक भयानक रात थी। इस रात को सहन करने के लिए किसी प्रेमी में कलेजा होना बहुत ज़रूरी है। वीर ने आज रात वो देखा था जो हर किसी प्रेमी के देखने की बस की बात नहीं होती है। ऐसी स्थिति में प्रेम कहीं छूट जाता है और प्रेमी टूटकर बिखर जाता है।

शुक्रिया-शुक्रिया दर्द जो तुमने दिया

माया की शादी के बाद वीर पूरी तरह टूट कर बिखर चुका था। वीर का होश में रहना और बेहोश रहना सब एक जैसा था। वीर अभी भी माया को भूल नहीं पा रहा था। वह जब भी अपने प्यार के बारे में सोचता तो उसे लगता कि हमारा प्यार सिर्फ़ एक तरफा प्यार ही था। माया ने तो उसे आज तक शायद प्यार किया ही नहीं। माया के बारे में अजय जो भी कहता था, शायद अब वो वीर को सच लगने लगा था। वीर हमेशा सोचता था कि क्या माया अब भी उसे याद करती होगी? क्या अब भी हमारे साथ बिताए पलों को याद कर तकिए में चेहरा छुपाकर रोती होगी? क्या अब भी वो नीले रंग का सूट पहनती होगी और अगर पहनती भी होगी तो क्या वो रंग माया को मेरी याद नहीं दिलाता होगा? क्या वो भी मेरी तरह बात करने के लिए फ़ोन में नम्बर डायल करती होगी, लेकिन मिलाती नहीं होगी ?

अजय हमेशा कहता था कि अगर माया ने तुझसे ज़रा-सा भी प्यार किया होगा न तो वो तुझे फ़ोन जरुर करेगी, लेकिन आज देखो उसकी शादी के छह महीने हो चुके है, लेकिन उसने कभी कॉल तक नहीं किया। शायद, वो प्यार ही नहीं करती थी। वीर जब भी ख़ुद को आईने में देखता तो हल्का-सा मुस्कुरा देता और कहता कि माया, देखो मैं तुम्हारे प्यार में तबाह हो गया हूँ और मुझे इस बात का मलाल तक नहीं है। लेकिन वीर की हँसी में वो दर्द, वो तड़प साफ़ नज़र आती थी, वो दर्द जो अन्दर से चीख़ रहे थे। वीर लुट चुका था उस दिन आई आंधी में, जिसमें माया ने किसी ओर का हाथ थाम लिया था।

वीर छह महीने से दिल्ली में था। उसे अपने शहर में जाने से इतनी नफ़रत हो गई थी कि वो माया की शादी के बाद अपने घर ही नहीं गया था। अजय जब भी उसे आने की कहता तो वीर यहीं कहता कि वो वहाँ अभी नहीं आ पाएगा, क्योंकिं वहां

कदम रखते ही शहर के हर कौने में माया के साथ बिताए पल, उसके साथ घूमना, उसकी यादें बसी हुई हैं। यही कारण था कि वीर ना तो अपने घर गया था और ना ही किसी से बात की थी।

आदि और नीलेश से तो बात करना अब बन्द ही हो चुका था। माधवी का एक-दो बार वीर को कॉल आया, लेकिन वीर ने कोई जवाब नहीं दिया। केवल अजय से वीर की बातें होती रहती थीं।

अजय बार-बार वीर को कॉल कर रहा था, लेकिन वीर फ़ोन नहीं उठा रहा था। अजय परेशान हो गया था कि वह इतनी बार वीर को कॉल कर चुका है, लेकिन वीर है कि जवाब तक नहीं दे रहा है। वीर ने पहले कभी ऐसा नहीं किया था। अजय की दो-तीन कॉल्स के बाद वो फ़ोन उठा लेता था, लेकिन आज अजय ने वीर के पास 35 से ज़्यादा बार कॉल किया था, लेकिन वीर ने फ़ोन नहीं उठाया था। यह बात अजय को थोड़ी अजीब-सी लगी और वह सीधा दिल्ली वीर के कमरे पर पहुँच गया।

कमरे पर बहुत देर तक अजय दरवाज़ा खटखटाता रहा। बहुत देर के बाद वीर ने कमरे का दरवाज़ा खोला। अजय ने वीर को देखते ही कहा कि क्या कर रहा था जो न फ़ोन उठा रहा है और न ही दरवाजा खोलता है?

"सो रहा था, इसलिए फ़ोन का पता नहीं चला।" वीर ने कहा।

"अबे, क्या 20 घंटे सोता है? और इतनी देर से दरवाज़ा पीट रहा हूँ, सुनाई नहीं देता क्या ?" अजय ने झुंझलाकर कहा।

अजय कमरे के अन्दर आया तो उसने देखा कि वीर के बिस्तर के पास काफ़ी सारे खाली इंजेक्शन पड़े हुए थे और एक तरफ़ ड्रग्स का एक पैकेट पडा हुआ था। कमरे में चारों तरफ़ शराब की ख़ाली बोतलें पड़ी हुई थीं। अजय ने वीर की तरफ़ देखा, जो पहले से बहुत कमजोर हो गया था। वीर की आँखें लाल हो रखी थी और आँखों के नीचे काले निशान पड़ गए थे।

वीर के बांए हाथ पर नसों में इंजेक्शन लगाने के बहुत सारे निशान थे। अजय ने वीर और कमरे के हालात देखे और वीर से लिपटकर रोने लगा।

"भाई, यह सब क्या कर रहा है तू? यह ड्रग्स, दारू यह सब क्या है? हालात देख तू अपने। मर जाएगा साले एक दिन तू अगर यही करता रहा तो। मत कर, मेरे यार। ये सब क्यों? सिर्फ़ उस माया के लिए? अबे, नहीं थी वो तेरे लायक और जा चुकी है वो। प्लीज़, मेरे दोस्त भूल जा उसे। मत कर अपने साथ यह सब। साला प्यार बहुत कुत्ती चीज है। देख, आज क्या हालात है तेरे?" अजय ने रोते हुए कहा।

"पीछे हट ना। क्या लड़कियों की तरह रो रहा है? यहाँ रोने के लिए आया है क्या? माया को मैं भूल चुका हूँ। बस, अब ख़ुद को भूलने की जद्दोजहद में हूँ।" वीर ने कहा।

"तू आज के बाद यह सब नहीं करेगा, तुझे मेरी क़सम है। यह ड्रग्स, दारू सब छोड़ देगा, समझा?" अजय ने कहा।

"हाँ छोड़ दूंगा, लेकिन आज तो पी सकते हैं। आज तो तू बहुत दिनों के बाद मिला है।" वीर ने कपडे पहनते हुए कहा।

वीर और अजय, दोनों बाजार जाकर दारू लेकर आए और फिर पीने बैठ गए। काफ़ी महीनों के बाद दोनों दोस्त मिले थे, तो दारू तो बनती थी।

"यार, माधवी ने तेरे पास कितने फ़ोन किए? उठाता क्यूँ नहीं है? वो मेरे से पूछ रही थी कि वीर का क्या सीन चल रहा है? तो मैंने उसे कह दिया कि माया की शादी हो चुकी है और वीर दिल्ली में है। इसके आगे मैंने उसे कुछ नहीं बताया, नहीं तो वो भी परेशान होती जैसे तूने मुझे परेशान किया हुआ है।" अजय ने दारू गिलास में डालते हुए कहा।

"मेरा माधवी से बात करने का मन नहीं करता। सोचता हूँ कि क्या सोचेगी वो मेरे और माया के बारे में? पहले तो मैं उसके सामने बड़ी-बड़ी फेंकता था। अब वो सोचेगी की हमारा

प्यार तो खोखला निकला। बस, इसलिए ही मैं उसका फ़ोन नहीं उठाता हूँ और तूने भी सही किया कि उसे ज़्यादा नहीं बताया। एक तो मैं उसकी शादी में भी नहीं आ पाया, इसके लिए भी मुझे सुनाती वो।" वीर ने कहा।

'हाँ, इसके लिए तो ज़रूर सुनाती। चल छोड़ और बता क्या चल रहा है तेरी लाइफ़ में?" अजय ने पूछा।

"लाइफ़ मस्त चल रही है।" वीर ने सीधा जवाब दिया।

"हाँ, वो तो मैं देख ही रहा हूँ कि कितनी मस्त चल रही है? तू तो बेहोश ही रहता है ज़्यादातर, ये ड्रग्स लेकर।" अजय ने कहा।

"अच्छा चल, तुझे एक कविता सुनाता हूँ, मैंने लिखी है।" वीर ने कहा।

"क्या बात है! चल, सुना।" अजय ने कहा।

"उसका चेहरा क्यूँ मुझको अब भी दिखता है,
न चाहते हुए भी क्यूँ आँखों में आँसू-सा झलकता है,
माना कर बैठा यह बेदर्द इश्क़ का इल्म,
फिर भी पता नहीं क्यूँ उसके लिए दिल धड़कता है।
उसकी सूरत को ज़माने तक देखने की ख्वाईश है,
चूम लूँ उसके जिस्म को यही प्यार की गर्माइश है,
प्यार तो होता है एक सागर से भी गहरा,
उसका प्यार मगर सिर्फ़ दिल की नुमाइश है।
बस अब हो गया है बहुत, शाखों से पत्ते टूट चुके हैं,
रो लिए हैं बहुत और बहुत त़ड़प चुके हैं,
अब न देखेंगे उसको एक नज़र भर कर भी कभी,
उसके लिए अपने दिल के हाथों बहुत लुट चुके हैं।

"ओ तेरी, तू तो पूरा अल्ताफ़ राजा बनता जा रहा है।" अजय ने अगला पैग बनाते हुए कहा।

वीर कुछ नहीं बोला। वह थोड़ी देर चुप रहा। वीर का फ़ोन बज रहा था। वीर ने फ़ोन देखा और साइड़ में रख दिया। दोबारा फ़ोन बजा तो अजय ने देखा कि किसी प्रियंका का कॉल आ रहा था।

"ये प्रियंका कौन है? नई गर्लफ्रेंड़, क्या बात है? लाइन पर आ रहा है लड़के।" अजय ने उत्साहित होकर कहा।

"ये कोई गर्लफ्रेंड़ नहीं है। बस, फ्रेंड़ है भी और नहीं भी। बस, मेरी पीछे पड़ी हुई है। कितनी बार मना कर चुका हूँ लेकिन फ़ोन करती रहती है और यहाँ भी मिलने आ जाती है।" वीर ने सिगरेट सुलगाकर कहा।

"हाँ, तो ठीक है ना। क्या दिक्कत है? अगर गर्लफ्रेंड़ नही है तो बना ले उसे।" अजय ने कहा।

"भाई, मेरा कोई Intrest नहीं है उसे गर्लफ्रेंड़ बनाने में।" वीर ने सिगरेट अजय को पास की।

"वैसे मुलाकात कैसे हुई प्रियंका से?" अजय ने पूछा।

"अरे, छोड़ न यार। उसकी क्या बात करनी?" वीर ने कहा।

"बता ना? आज मुझे पुराने वाले वीर की वाइब्स आ रही है। चल, बता।" अजय ने पैग बनाते हुए कहा।

"तो हुआ यूं कि मैं एक दिन साइबर कैफे में बैठकर अपना आधार अपडेट करवा रहा था। तो वहाँ प्रियंका आई, जिसे कोई फार्म भरना था। जब कैफे वाले ने उस लड़की को कहा कि आप एक पेपर पर अपनी Details लिख लें, तब तक वो यह काम ख़त्म कर देता है। अब वो पेन लेकर नहीं आई थी तो उसने मुझसे पेन मांगा और मैंने उसे पेन दे दिया। मेरा आधार अपडेट होने के बाद मैं वहाँ से चला आया।

अगले दिन मेरे पास प्रियंका का कॉल आया और कहा कि मेरा पेन वापिस करना चाहती है। पहले तो मैं उसकी बात सुनकर चौका और पूछा कि मेरा नम्बर कहाँ से मिला? उसने

बताया कि आपका मोबाइल नम्बर साइबर कैफे से लिया है और उन्होने ही बताया कि आप सामने गली में ही रहते हो। तो आप आ जाओ और अपना पेन वापिस ले जाओ।

मैंने उसे मना किया कि केवल पेन की ही बात है तो लौटाने की कोई ज़रूरत नहीं है। अब वो लड़की बार-बार फ़ोन करने लगी कि पेन तो आपको वापिस लेना ही पडेगा। तंग आकर मैंने उसे नीचे पार्क में बुलाया। जब मैंने उससे पेन मांगा तो इधर-उधर की बातें करने लगी। मैंने जब उससे दोबारा पेन मांगा तो बोली की आपसे मिलने की Excitement में पेन लाना ही भूल गई। मैं इतना सुनते ही वहाँ से वापिस लौट आया। प्रियंका ने रात को फिर कॉल किया कि आप सुबह वहीं पर मिलना, मैं आपका पेन इस बार लौटा दूंगी। मैनें उसे मना किया कि मुझे अब पेन वापिस नही चाहिए, लेकिन वो अपनी बात पर अड़ी रही। उसने कहा कि अगर नीचे आकर पेन नहीं लिया तो फिर मै कमरे में आकर पेन दे जाऊँगी। तो मैनें तंग आकर कहा कि ठीक है कल नीचे मिलता हूं।

अगले दिन जब वो मुझसे मिली तो उसने पेन तो लौटा दिया, लेकिन फिर धीरे-धीरे मेरे पास फ़ोन और मैसेज करने लग गई। मैंने कुछ दिन उससे बात भी कि ताकि माया को भूलने में थोड़ी आसानी हो, लेकिन माया को भूलने में मैं नाकाम रहा तो मैंने प्रियंका से भी अब बात करनी बन्द कर दी। तब से बार-बार कॉल करती रहती है कि मिलना है। जब मैं उससे पूछता हूँ कि क्यों मिलना है तो कहती है कि मुझे देखते ही प्यार हो गया। अब साला प्यार के नाम से तो मुझे वैसे ही नफ़रत हो गई है कि किसी से बात तक करने का मन नहीं करता।" वीर ने पूरी कहानी बताई।

"सही है, भाई। यह प्रियंका तो लट्टू हो गई है तुझ पर। मिल ले न फिर उससे। मिलने में क्या हर्ज है? कम से कम तेरा दर्द तो थोड़ा कम हो जाएगा।" अजय ने अपना तर्क दिया।

"नहीं, मुझे इस दलदल में दोबारा नहीं उतरना। वो दूर ही अच्छी है। मुझे उससे कोई Contact नहीं रखना।" वीर ने कहकर गिलास में बची दारू को गले में उड़ेला।

"कोई दलदल नहीं है ये। तुझे कौन-सा उससे प्यार होने वाला है? मोहब्बत बदल कर तो देख, सुकून मिलेगा तुझे।" अजय ने वीर के कंधे पर हाथ रखकर कहा।

"जिस इंसान की अंदर तक खुदी पडी हो, उसके लिए क्या मोहब्बत, क्या गर्लफ्रेंड़? बर्बाद पहले भी हो चुका हूँ और बर्बाद यहाँ भी हो जाऊँगा। और साले, मोहब्बत कोई कैलेंडर है क्या जो तेरी तरह हर महीने बदलती रहे? वैसे भी मैंने अपनी मोहब्बत के सुकून को दर्द बनते देखा है तो यह तो मुझसे नहीं होगा।" वीर ने कहा।

"मैं तो बस यही कहूँगा कि अब तेरे पास यही रास्ता है। अगर माया को तू भूलना चाहता है तो कोशिश करने में क्या हर्ज है?" अजय ने आख़िरी पैग लगाकर कहा।

अजय के दिल्ली से जाने के बाद वीर दो दिन तक अजय की बातों को सोचता रहा। आख़िरकार उसने यही सोचा कि जब माया उसके साथ धोखा कर सकती है तो वो भी तो अब आगे बढ़ सकता है। यही सब विचार करने के बाद वीर ने प्रियंका को कॉल किया और शाम को मिलने के लिए कहा।

शाम को प्रियंका वीर से मिलने के लिए पार्क में आई। दोनों ने वहाँ पर कुछ समय साथ बिताया। वीर ने प्रियंका से कहा कि अगर तुम Comfortable हो तो आज रात मेरे पास ही रुक जाओ। प्रियंका यह सुनकर वीर की तरफ़ देखती ही रह गई। प्रियंका वीर की तरफ़ देखकर मुस्कुराई और कहा कि हाँ, माना कि मैं तुमसे प्यार करती हूँ, लेकिन पहली मुलाक़ात में ऐसे कौन रुकने को बोलता है? प्रियंका की इस बात को सुनकर वीर ने ना समझा और वहाँ से जाने लगा तो प्रियंका ने पीछे से आवाज दी और कहा कि वैसे मैंने मना भी नहीं किया रुकने के लिए। वीर यह सुनकर पीछे मुड़ा तो प्रियंका

वीर के नजदीक आई और उसने वीर के हाथों की अँगुलियों में अपनी अँगुलियाँ फँसा दी और कहा कि अब ले चलो, जहाँ ले जाना चाहते हो।

रात को बाहर डिनर करने के बाद वीर प्रियंका के साथ कमरे पर आ गया। वीर को प्रियंका का साथ अच्छा लग रहा था। डिनर करते समय ही वीर ने प्रियंका को पहले ही माया के बारे में बता दिया था और यह भी बता दिया था कि वह प्रियंका से कोई प्यार-व्यार नहीं करता है। प्रियंका ने वहाँ कुछ भी नहीं बोला, लेकिन कमरे पर आकर वीर से लिपट गई।

"जानती हूँ कि तुम मुझसे प्यार नहीं करते, लेकिन मैं तो तुमसे प्यार करती हूँ।" प्रियंका ने कहा।

"मत करो यह प्यार, बहुत तकलीफ़ देता है। इससे तुम्हें कुछ भी हासिल नहीं होगा अन्त में ख़ाली हाथ ही रहोगी।" वीर ने अपने हाथ की रेखाओं को देखकर कहा।

"वो प्यार ही क्या जो यह सोचकर किया जाए कि क्या हाथ आएगा और क्या नहीं? पता है ना कि प्यार अन्धा होता है, लेकिन कितना अन्धा होता है, यह तो तभी पता चलता है जब यह मालूम हो कि आपके हाथ कुछ नहीं आएगा और आप पाने की उम्मीद को छोड़कर बस प्यार करते है।" प्रियंका ने वीर की आंखों में देखकर कहा।

वीर को कुछ अजीब-सा लग रहा था। उसने प्रियंका को ख़ुद से अलग किया और टेबल के पास जाकर एक इंजेक्शन उठाया और अपनी नसों में दौड़ा दिया। कुछ ही मिनट में वीर की आँखों में नशा छाने लगा था। वीर ने प्रियंका को अपने करीब खींचा और उसके गले को चूम लिया। प्रियंका ने भी अपना चेहरा वीर के सीने पर टिका दिया।

वीर की नसों में पागलपन दौड़ रहा था। वो क्या करने जा रहा था, उसे शायद ख़ुद को भी नहीं मालूम था? वीर जानता था कि अगर प्रियंका के नज़दीक जाना है तो फिलहाल माया को दिल से भूलना पड़ेगा। क्योंकि होश में माया को

भूलना नामुमकिन है तो नशे में होना वीर के लिए उस समय की ज़रूरत थी। प्रियंका वीर से दूर हटी और उसने अपने पूरे कपड़े उतारकर बिस्तर पर फेंक दिए और टेबल का सहारा लेकर खड़ी हो गई। वीर दूर से ही प्रियंका को देख रहा था। वीर ने अपनी शर्ट उतारी और प्रियंका के करीब गया। जैसे ही वीर ने प्रियंका को किस करने के लिए अपनी आँखें बन्द की, वीर को माया का चेहरा दिखा। वीर अचानक से प्रियंका से दूर हटा और उसने अपनी आँखों को दोबारा जोर से भींचा, लेकिन फिर वही माया का चेहरा उसकी आँखों के सामने आ गया। वीर वहीं नीचे जमीन पर बैठ गया।

"क्या हुआ ? कोई प्रॉब्लम है क्या ?" प्रियंका ने पूछा।

"नहीं। तुम अपने कपड़े पहन लो। मैं ये सब नहीं कर पाऊँगा।" वीर ने कहा।

"तुम ऐसे मेरे प्यार को बेइज़्ज़त नहीं कर सकते। यह ठीक नहीं है।" प्रियंका ने थोड़ा आगे आकर कहा।

"मैं कोई बेइज़्ज़त नहीं कर रहा हूँ और प्लीज़ तुम अपने कपड़े पहनकर जाओ यहाँ से।" वीर ने अपनी शर्ट पहनते हुए कहा।

प्रियंका को गुस्सा आ रहा था। वह वीर पर चिल्ला रही थी कि जब ऐसे ही करना था तो मुझे यहाँ क्यों लेकर आए हो? प्रियंका ने अपने कपड़े पहने और दरवाज़े की तरफ़ जाने लगी। बाहर जाने से पहले प्रियंका ने वीर से कहा कि तुम पागल हो। तुम्हारा कोई कैसे भरोसा कर सकता है? वीर ने प्रियंका की तरफ़ देखा भी नहीं और प्रियंका वहाँ से चली गई। प्रियंका के भरोसे की बात सुनकर वीर को हँसी आ गई और वह कमरे में चिल्ला पड़ा कि उसे भी किसी भरोसे ने ही पागल बनाया है।

वीर को आज पहली बार अहसास हुआ कि वो माया से कितना प्यार करता है? अगर ऐसी स्थिति में प्रेमी को अपनी प्रेमिका का अहसास होने लगे तो ऐसा प्यार किसी इबादत से

कम नहीं होता है। ऐसा प्यार एक-दूसरे के लिए इतना क़ीमती होता है कि उसके आगे दुनिया की हर चीज़ मामूली लगती है और यही वीर के साथ हुआ था कि माया के प्यार और दिखने के भ्रम के आगे उसे प्रियंका का प्यार मामूली लगा।

वीर के हालात अब यह हो गए थे कि न तो उसे शराब चढ़ती थी, न ही नसों में दौड़ती ड्रग्स माया को भूलने में मदद करती थी और अब तो किसी लड़की का जिस्म भी उसे उत्तेजित नहीं करता था। प्रेमी ऐसी स्थिति में स्पष्ट तौर पर क्या सोचता है, यह बताना तो बहुत मुश्किल है, लेकिन हाँ, इतना तो स्पष्ट है कि उसका सम्पूर्ण ह्द्य किसी एक दिशा में प्रवाहित होता है।

वीर को आज माया के अलावा अपने पुराने दिन के हमसफ़र रेडियो की याद आ गई। एक रेडियो हमेशा वीर के पास रहता था। आज मोबाइल में एस.डी. कार्ड लगाकर उसमें गाने भरकर सुन सकते है लेकिन वीर को रेडियो पर गाने सुनना हमेशा से उत्साहित करता था। लेकिन एक साल से वीर ने अपना रेडियो देखा तक नहीं था कि वो कहाँ पर रखा हुआ है?

वीर बिस्तर से उठा और उसने अपना रेडियो ढूंढ़कर साफ किया। वह नीचे दुकान पर जाकर तीन सेल लेकर आया और रेडियो में डालकर उसे चालू किया, लेकिन रेडियो चालू नहीं हुआ। वीर ने रेडियो के आगे-पीछे हाथ से हल्का-सा मारा, लेकिन वह फिर भी नहीं चला। वीर को लगा कि शायद रेडियो के अन्दर कोई दिक्कत है तो उसने अपना रेडियो खोला और उसे ठीक करने में लग गया।

वीर का मोबाइल बज रहा था। उसने फ़ोन उठाकर देखा तो कोई नए नम्बर से फ़ोन आ रहा था।

"हैल्लो।" वीर ने फ़ोन उठाकर कहा।

"वीर बात कर रहा है क्या?"

"हाँ, आप कौन?" वीर ने पूछा।

"मैं मनीष बोल रहा हूँ।"

"कौन मनीष?" वीर ने दिमाग़ पर जोर डालते हुए पूछा।

"ये सब छोड़। यह बता कि तेरा माया के साथ क्या रिश्ता है?"

"भैंचो, है कौन तू? और माया के साथ मेरा क्या रिश्ता है, इससे तेरे को क्या मतलब?" वीर ने ऊँची आवाज में कहा।

"मैं माया का हसबैंड़ हूँ। तेरा और माया का रिश्ता तो था, लेकिन मैं सिर्फ़ इतना जानना चाहता हूँ कि किस हद तक

था?" मनीष ने पूछा।

वीर यह सुनकर चुप रहा। उसके दिमाग़ में यही चल रहा था कि इसको मेरा नम्बर किसने दिया? कहीं माया ने तो मेरा नम्बर इसको नहीं दिया है? माया तो किसी प्रॉब्लम में नहीं है? वीर का दिमाग़ काम ही नहीं कर रहा था।

"अरे, बोल। मुझे सिर्फ यह बता कि तुम दोनों का क्या रिश्ता था?" मनीष ने फिर पूछा।

"तुझे मेरे नम्बर किसने दिए?" वीर ने पूछा।

"बस, कहीं से मिल गए।"

"जिसने भी मेरे नम्बर दिए हैं, उसी से पूछ ले। वो ही बता देगी कि क्या रिश्ता है? वो तो तेरे पास ही होगी।" वीर ने कहा।

"उससे तो मैं पूछूँगा ही, लेकिन आख़िरी बार तुझसे पूछ रहा हूँ। नहीं तो तुम दोनों के लिए ठीक नहीं होगा।" मनीष ने धमकी दी।

"अबे सुन। मेरे तो तू झाँट तक नहीं उखाड़ सकता और माया को तूने कुछ किया ना तो क़सम से तेरे झाँट तक भी नहीं बचेंगे।" वीर ने भी धमकी का जवाब धमकी से दिया।

"अच्छा, ऐसा है क्या? तो मुझे जवाब मिल गया है।"

"जवाब मिल गया है तो ठीक है, लेकिन फिर भी बता देता हूँ कि हम सिर्फ़ दोस्त थे और अब तो शायद वो भी नहीं है।" वीर ने कहा।

"सिर्फ़ दोस्त। उससे आगे क्या?"

"उसके आगे क्या? यह तो ख़ुद भगवान भी आकर मेरे अन्दर दफ़न राज को बाहर नहीं निकाल सकता, तो तू क्या चीज़ है?" वीर ने तेज़ आवाज़ में कहा।

मनीष ने फ़ोन काट दिया। वीर ने फ़ोन रखने के बाद काफ़ी देर और दूर तक अपने दिमाग़ के घोड़े दौड़ाए, लेकिन

फिर भी उसे यह समझ नहीं आया कि उसके नम्बर मनीष को किसने दिए और अगर माया ने दिए हैं तो उसने क्यूँ दिए? कहीं वो किसी परेशानी में ना हो। वीर काफ़ी देर तक इस जद्दोजहद में लगा रहा।

वीर का मोबाइल दोबारा बजा। उसने देखा कि माया का कॉल आ रहा था। वीर ने फ़ोन उठाया।

"तुम मेरा और कितना जीना हराम करोगे? मुझे चैन से जीने क्यूँ नहीं देते? क्या बिगाडा है मैंने तुम्हारा?" माया ने चिल्लाकर कहा।

"लेकिन, मैंने क्या किया है?" वीर ने पूछा।

"तुमने ही सब कुछ किया है। तुमने मनीष से बात क्यूँ की? उसके पास क्यूँ फ़ोन किया? मेरा घर बर्बाद करना चाहते हो क्या?" माया ने कहा।

"पहली बात तो यह है कि मैंने उसके पास कोई फ़ोन नहीं किया। उसने ख़ुद मेरे पास फ़ोन किया था और दूसरा यह कि मुझे ख़ुद भी नहीं पता कि मेरे नम्बर उसके पास कैसे आए तो मुझ पर चिल्लाना बन्द कर और मुझे तुम्हारा घर बर्बाद नहीं करना है।" वीर ने कहा।

"तुमने ही फ़ोन किया था। एक नई प्रॉब्लम तूने फिर खड़ी कर दी है मेरी लाइफ़ में। और जब कुछ करना ही है तो पूरा कर। उसे सब कुछ पूरा बता। मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।" माया ने गुस्से से कहा।

"फ़र्क तो हर किसी को पड़ता है, लेकिन मैंने कह दिया है कि मैंने उसके पास फ़ोन नहीं किया था। मैं तो यह सोच रहा था कि शायद तूने ही नम्बर दिए हैं।" वीर ने कहा।

माया ने बिना जवाब दिए ही फ़ोन रख दिया। माया के फ़ोन रखने के बाद वीर यही सोच रहा था कि मनीष को अगर माया ने नम्बर नहीं दिए तो फिर उसे किसने नम्बर दिए? वीर ने

एक सिगरेट सुलगाई और बालकनी में आकर खड़ा हो गया। कुछ देर बाद वीर ने अजय को फ़ोन किया।

"यार, आज माया का फ़ोन आया था। उसकी आवाज़ सुनते ही साला जिस्म में सिहरन-सी दौड़ गई। जब उससे बात हुई तो पता चला कि वो अब मेरी नहीं रही। बहुत बार हमारे झगड़े हुए, वो नाराज़ भी रही, बहुत बार मुझे सुनाती भी थी, लेकिन फिर भी उसकी आवाज़ में हमेशा मेरे लिए एक अपनापन होता था, लेकिन आज वो आवाज ही अलग थी। उसकी आवाज़ सिर्फ़ मेरे कानों तक ही रही, दिल में नहीं उतरी। बदल गई है भाई वो।" वीर ने कहा।

"बदलना तो था ही उसे। उसके बदलाव तो मुझे पहले ही पता थे, लेकिन तुझे आज समझ आए है। वैसे किसलिए फ़ोन किया था आज उसने?" अजय ने पूछा।

"उसके हसबैंड़ का फ़ोन आया था। पूछ रहा था कि हमारे बीच में क्या रिश्ता था? लेकिन एक बात समझ में नहीं आ रही कि उसको मेरे नम्बर किसने दिए? पहले मैं सोच रहा था कि माया ने दिए होंगे, लेकिन माया ने तो मना किया है कि उसने नम्बर नहीं दिए और माया को वो कह रहा है कि मैंने उसके पास कॉल किया था। इसके तो यही स्पष्ट होता है कि माया ने नम्बर नहीं दिए। फिर साला उसके पास मेरे नम्बर कहाँ से आए और किसने उसे हमारे रिश्ते के बारे में अधूरा बताया? अब बताना ही था तो पूरा बताना था ना, यही समझ नहीं आ रहा।" वीर ने कहा।

"वीर, मेरे दोस्त। माया के हसबैंड़ को तेरे नम्बर मैंने दिए है।" अजय ने लड़खड़ाती आवाज से कहा।

"तूने नम्बर क्यों दिए हैं? पागल है क्या तू भैंचो?" वीर ने अचंभित होकर ऊँची आवाज़ में कहा।

"मेरे से तेरी यह तड़प, प्यार और तेरी बर्बादी देखी नहीं जाती। मुझे पता है कि तू कभी भी उसे भूल नहीं पाएगा और भूलना तो छोड़, तू Move On भी नहीं कर पाएगा। तो मुझे

लगा कि उसके हसबैंड़ को तेरे नम्बर भेज देता हूँ बाक़ी तो वो समझ ही जाएगा। फिर हो सकता है कि माया तेरे पास वापिस लौट आए। बस, इसलिए ही मैंने ये कांड़ कर दिया।" अजय ने अपनी बात रखी।

"बहुत ग़लत किया तूने। अबे उसकी पूरी लाइफ़ ख़राब हो जाएगी इस तेरी एक ग़लती से। तुझे मालूम है न कि माया किस टाइप की लड़की है? वो ग़लत कारणों से कभी भी लौट कर नहीं आएगी। मेरे से बिना पूछे तूने उसे नम्बर ही क्यूँ दिए, भसड़ हो जाएगी अब? और उस मनीष के नम्बर तेरे पास कहाँ से आए?" वीर ने गुस्से से कहा।

"जब उसकी शादी में गए थे तो मैं थोडी देर के लिए वापिस गया था ना। तब किसी से उसके नम्बर लिये थे। वही सोच लिया था कि एक दिन उस माया की वॉट ज़रूर लगाऊंगा, जिसने तेरे साथ ऐसा किया है।" अजय ने कहा।

वीर ने इतना सुनते ही फ़ोन रख दिया। अजय ने वीर के पास दो बार वापिस कॉल किया, लेकिन वीर ने फ़ोन नहीं उठाया। वीर को अजय पर बहुत तेज़ गुस्सा आ रहा था। अजय ने तो वीर का सोच कर यह कांड़ कर दिया, लेकिन किया तो ग़लत ही। अब तो माया के हसबैंड़ को सब पता चल चुका था। अब माया किस प्रॉब्लम में होगी? वो मेरे बारे में क्या सोच रही होगी? बहुत ग़लत कर दिया है अजय ने। वीर यही सोच-सोचकर परेशान हो रहा था।

दो दिन बाद मनीष ने दोबारा वीर के पास कॉल किया। वीर को लगा कि उसका फ़ोन ना उठाए, लेकिन फिर भी वीर ने स्थिति को जानने के लिए फ़ोन उठा लिया।

"हैल्लो।" वीर ने कहा।

"तू मुझे अब भी बता रहा है या कुछ करना ही पड़ेगा।" मनीष ने कहा।

"मैं तो पहले ही बता चुका हूँ जो था। बाक़ी तेरे को अगर लगता है कि तू कुछ मेरा कर भी सकता है तो कोशिश कर ले।" वीर ने कहा।

"मुझे तुम लोगो के रिश्ते के बारे में सब कुछ मालूम हो गया है। तुम्हारा रिलेशनशिप किस हद तक और कितना गहरा था, ये मालूम हो गया है मुझे। इसलिए मैंने तुम दोनों को सबक सिखाने का फैसला ले लिया है।" मनीष ने कहा।

"और वो क्या लिया है?" वीर ने पूछा।

"मैं माया को छोड़ रहा हूँ। वो तेरे साथ ही खुश रहेगी। उसको तू ही रखना अब। मेरा उससे कोई मतलब नहीं है।" मनीष ने कहा।

"सुन बे लक्कड़बग्घे। मुझसे तो तू कभी भी टकराने की कोशिश मत करना। मैं टूटा हुआ हूँ। चुभ जाऊँगा तुझे। और रही बात माया को छोड़ने की, तो अगर तूने ऐसा किया तो तुझे मालूम हो ही चुका हमारे रिलेशनशिप के बारे में तो माया की क़सम तुझे घर में घुस कर मार डालूंगा। ऐसा करना तो छोड़, अगर ऐसा सोचा भी तो फिर बचेगा नहीं तू, समझा?" वीर ने चिल्लाकर कहा।

"तेरी हिम्मत कैसे हुई माया की क़सम लेने की? और मैं कुछ भी सोचूँ और कँरूं, जीतूंगा तो मैं ही।" मनीष ने कहा।

"हिम्मत....क्या बात है? मैंने उसे अपना बनाकर छोड़ा है, उसे हासिल करने वाले तुझे तेरी जीत मुबारक हो। चल तो फिर कर के देख लेना एक बार।" वीर ने कहा।

"ठीक है, तो दिखाता हूँ तुझे।" मनीष ने कहकर फ़ोन काट दिया।

फ़ोन रखने के बाद वीर का अजय पर गुस्सा और तेज़ हो गया। वो माया के बारे में सोचने लगा कि माया के साथ कहीं ग़लत हो रहा है, लेकिन वीर अब इसमें कुछ नहीं कर सकता था। वीर को मालूम था कि उस लक्कड़बग्घे में इतना गूदा नहीं

है कि वो जो बोल रहा है, वो कर भी सके और माया में इतनी हिम्मत है कि वो ख़ुद पर कुछ भी ग़लत सहन नहीं करेगी। लेकिन फिर भी वीर को माया की चिंता हो रही थी। वीर ने आज पहली बार माया के दिल में ख़ुद के लिए इतनी कड़वाहट देखी थी, जो उसे सहन ही नहीं हो रही थी। वीर ने उनकी बातो को साइड़ में किया और अपना रेडियो हाथ में लेकर एक सिगरेट सुलगा ली।

पहले प्यार की दूसरी पारी

किसी अपने के चले जाने के बाद उसकी छुअन का अनकहा-सा दर्द रह जाता है और रह जाती है एक अदृश्य छुरी, जिसकी हर पल, हर समय हमेशा चुभन महसूस होती रहती है। यही चुभन और अनकहा दर्द अब वीर का जीवन बन गया था। वीर अपनी लाइफ़ में आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा था, लेकिन माया की यादें उसका पीछा ही नहीं छोड़ती थी। आज वीर को माया की आवाज तक सुने दो साल से ज़्यादा हो गए थे। माया ने वीर के जन्मदिन पर फ़ोन जरुर किए थे, लेकिन बस कुछ मिनट के लिए। वो कुछ मिनट भी उनकी ख़ामोशी ही खा गई थी। वीर माया की यादों से बाहर निकल ही नहीं पाया था।

यादें पवित्र होती हैं। हर याद की आहट अलग होती है, इसलिए माया की हर याद वीर के सीने पर टिकी रह गई थी। यही यादें वीर की ताक़त भी थी और कमज़ोरी भी थी। वीर ने माया के बिना जीने की कभी कल्पना तक नहीं की थी और आज माया के बग़ैर उसने इतने साल निकाल दिए थे। वीर ने बहुत बार मरने का भी सोचा, लेकिन जो नहीं फेंक पाते ख़ुद को किसी ऊँची इमारत से, जो नहीं लेट पाते रेल की पटरियों पर, जो नहीं छू पाते बिजली की नंगी तारो को, वो मरने का सबसे आसान तरीका चुनते है, वे जीना चुनते हैं। यही जीना वीर ने भी चुन लिया था, लेकिन फिर भी माया की याद वीर के दिल में हमेशा एक खनक करती थी।

वीर अब यही चाहता था कि अब माया की यादों का बोझ बहुत ढो लिया है, अब उसकी याद ना आए, और ना ही याद आए उसके साथ बिताए हुए वो एक-एक पल, ना दिखे माया उसे हर बार जब भी वह अपनी आँखें बन्द करता है। सौंदर्य और प्रेम का याद न आना ही प्रेमी को सरल बना सकता है, लेकिन ऐसा संभव बहुत कम हो पाता है। वीर के मन ही

मन में कुछ अरमान करवट लेते थे, इच्छाएं आती थी और चली जाती थीं। माया का चेहरा वीर की स्मृति में उलझा रह गया था, जो न घटता था और न ही बढ़ता था। बस, दाग़ की तरह वीर के दिल पर नक़्श हो गया था।

प्रेम में टूटा हुआ वीर प्रेम से भागता तो ज़रूर था, लेकिन पैरों में प्रेम की ज़ंजीर पहनकर। वह ख़ुद को भ्रम में रखता था कि वह प्रेम और माया की यादों से भाग रहा है, लेकिन कहीं न कहीं उसे उम्मीद रहती थी माया के फिर से लौट आने की, लेकिन वो उम्मीद ही क्या जो पूरी हो जाए? उम्मीदें जड़ों की तरह नीचे-नीचे फैलती रहती हैं। वो घटती नहीं है, बस बढ़ती ही रहती हैं। अगर चाहकर भी उस उम्मीद का गला घोंट दिया जाए तो एक नई ही उम्मीद पैदा होकर साँस लेने लगती थी। यही वीर के साथ हो रहा था। वो हर रात माया से उम्मीद तोड़कर सोता था, लेकिन हर सुबह माया की एक नई उम्मीद पनप जाती थी।

वीर पर माया की यादें और उम्मीदें हावी होने लगती थीं तब वीर माया की तस्वीरें और ख़त निकाल लेता था। वह माया की तस्वीरों को चूमता था और दु:खी हो जाता था। वीर ने तस्वीरें और ख़त बचा लिए थे, लेकिन प्यार नहीं बचा पाया था। वीर माया की तस्वीरों और ख़तों को जलाने की नाकाम कोशिश बहुत बार करता था। वो ख़ुद से कहता था कि आज से माया की यादों को जला दूँगा, उन्हें मिटा दूँगा, प्यार ख़त्म कर दूँगा, लेकिन वो ये भूल जाता था कि प्रेम की केवल एक ही दिशा, एक ही छोर होता है। प्रेम प्रारंभ तो होता है, लेकिन कभी समाप्त नहीं होता।

माया को याद कर वीर की आंखों से आँसू लुढ़क जाते थे। एक हाफ पीने के बाद वह माया की तस्वीर बनाने लगता था। वह तीन महीने से माया की तस्वीर बनाने लग रहा था। उसे उम्मीद थी कि उसका प्यार एक दिन उसकी याद में फिर लौटेगा, जैसे मौसम लौट कर आते है। फिर वीर यह तस्वीर

माया को देगा और कहेगा कि इस तस्वीर को उसने बनाया नहीं बल्कि जीया है।

वीर जब माया की आधी बनी तस्वीर को दीवार के सहारे खड़ा होकर देख रहा था तो वीर का फ़ोन बजा। वीर ने देखा कि अंजान नम्बर से फ़ोन आ रहा था।

"हैल्लो।" वीर ने कहा।

'कैसे हो?" माया ने पूछा।

माया की दो साल बाद आवाज सुनकर वीर एकदम चुप हो गया। वो कुछ भी नहीं बोल रहा था। फ़ोन पर कुछ सेकेंड के लिए ख़ामोशी छा गई थी।

"क्या हुआ? बात नहीं करोगे क्या?" माया ने पूछा।

"आज कैसे फ़ोन किया?" वीर ने अपना दर्द छुपाते हुए पूछा।

"क्यों? नहीं कर सकती क्या ?"

"कर तो सकती हो, लेकिन आज क्यों? इन दो सालों में तुमने मुझे न जिए में याद किया ना मरने में याद किया, तो फिर आज क्यों?" वीर ने बेरुखी से कहा।

"इन दो सालों में मैंने तुम्हें हर पल याद किया है। बस तुम्हें फ़ोन नहीं कर पाई, क्योंकि मेरी मजबूरियाँ ही ऐसी थीं। मैं कुछ समय तक यही सोचती थी कि तुम्हें भूल जाऊँ, लेकिन तुम मुझसे भुलाए नहीं गए तो आज इन मजबूरियों को पीछे छोड़कर अपने दिल के हाथों मजबूर होकर मैंने तुम्हें फ़ोन किया है, लेकिन लगता है कि तुम मुझे भूल गए हो जो इतनी बेरुख़ी से बात कर रहे हो।" माया ने कहा।

"तुम मेरे दिल से निकल जाओ, यह तो असंभव है। मुझे ही पता है कि मैं तुम्हारी यादों के सहारे किस तरह रहा हूँ? किस तरह यह ज़हर मैं रोज़ पीता हूँ कि तुम मेरी नहीं हो। तुम्हारे बिना एक-एक क्षण मुझे तुम्हें खोने की ग़लती का अहसास कराता रहा है।" वीर ने कहा।

"मैं तुमसे ज़्यादा देर बात नहीं कर पाऊँगी। मैं कल तुमसे मिलना चाहती हूँ। आ सकते हो क्या मिलने?" माया ने पूछा।

"तुम कैसे मिल सकती हो मुझसे ? तुम्हारे लाइफ़ में फिर से कोई न कोई प्रॉब्लम खड़ी हो जाएगी।" वीर ने ना चाहते हुए भी यह कहा।

"तुम्हारी ग़ैर मौजूदगी से जो इतने साल तक मेरे दिल में प्रॉब्लम हुई उसका क्या? मैं यहाँ भिवाड़ी में रहती हूँ। यहाँ पर एक कालेज में पढ़ाती हूँ। मनीष शाम को 07:00 बजे तक घर आता है। मैं दोपहर के बाद फ्री हो जाती हूँ तो तुम कल मेरे घर पर आ जाना। मैं तुम्हें पता भेज दूंगी।" माया ने कहा।

"हाँ, आ जाऊँगा।" वीर ने जवाब दिया।

माया के फ़ोन रखने के बाद वीर खिड़की से बाहर की तरफ़ देखने लगा। वीर माया से इतना प्यार करता था कि सही और ग़लत में फैसला करना उसे उचित ही नहीं लगता था। वह अपने दिल के हाथों मजबूर था। वीर ने फ़ैसला कर लिया था कि वह कल माया से मिलने जाएगा।

अगले दिन वीर माया से मिलने के लिए निकल गया। वीर को माया की तरफ़ बढ़ते हुए अपने कदम ऐसे लग रहे थे, जैसे बरसों से वीर को जिस मंज़िल की तलाश थी, वो अब चन्द कदम ही दूर थी। वीर ने भिवाड़ी पहुँचकर माया के फ़्लैट की डोरबेल बजाई। दरवाज़ा खुला तो सामने माया थी। माया ने आज फिर नीले रंग का सूट पहना हुआ था। वीर अन्दर आया और माया दरवाजा बन्द कर किचन में चली गई। वीर भी माया के पास किचन में स्लैब का सहारा लेकर खड़ा हो गया, जहाँ माया खाना बना रही थी।

"नीले रंग का सूट तुमने जानबूझ कर पहना है ना?" वीर ने कहा।

"हाँ, जानबूझ ही सही, लेकिन तुम्हारे लिए ही पहना है। जब हमेशा ही यह रंग केवल तुम्हारे लिए था तो आज भी यह तुम्हारा ही है। वैसे तुम बहुत बदल गए हो।" माया ने वीर की तरफ़ देखकर कहा।

"हाँ, बदल गया हूँ। अब टूटे हुए पत्ते रंग तो बदलेंगे ही।" वीर ने कहा।

माया ने वीर की बात सुनकर अपनी नज़रें नीची कर लीं और खाना बनाने में लग गई।

"खाना तो खाया नहीं होगा तुमने?" माया ने रोटी सेंकतें हुए कहा।

"हाँ, नहीं खाया। तुमसे मिलने की उत्सुकता ही इतनी थी कि बस भूखा ही चला आया।" वीर ने कहा।

"ठीक है, तो नीचे जाओ और दही ले आओ। फिर खाना खा लेना।" माया ने कहा।

वीर नीचे दही लेने चला गया। वीर ने आते वक़्त यही सोचा था कि आज माया को अपनी सारी शिकायतें बताऊँगा कि कैसे उसने धोखा देकर क्या कर दिया है? वीर जब दही लेकर आया तो माया ने वीर को खाना परोस दिया। वीर वहीं किचन में माया के पास खड़ा होकर खाना खा रहा था और माया को देख रहा था। इस तरह माया को देखने की आरजू वीर की कब से थी, लेकिन अपने घर के किचन में।

वीर माया से बहुत कुछ कहने की सोच रहा था, लेकिन माया को देखकर वो पुराने वाला वीर फिर से जाग उठा था। वीर ने खाना खाने के बाद माया के हाथ को पकड़ा और उसे चूम लिया। जब वीर ने माया के हाथ को चूमा तो माया ने वीर की तरफ़ देखा और कुछ पल के लिए वीर को लगातार देखती रही और फिर माया वीर के करीब आकर उससे लिपट गई।

"तुम मेरे क्यों नहीं हो पाए, वीर? मैं तुमसे अब भी बहुत प्यार करती हूँ। शायद तुम मुझे अब उतना प्यार नहीं करते।"

माया ने रोते हुए कहा।

वीर कुछ देर तक शान्त खड़ा रहा। माया वीर से लिपट कर रो रही थी। कभी-कभी जिंदगी भर की धूल सिर्फ़ एक मूसलाधार बारिश से धुल जाती है। वीर अपनी बहुत सारी शिकायतें लेकर आया था, लेकिन माया और उसके आँसुओं को देखकर उससे कुछ कहना ही नहीं चाहता था। वीर ने अपनी चुप्पी को तोड़ते हुए माया की ठोढ़ी को पकड़कर उसके चेहरे को ऊपर किया। वीर ने माया की आंखों में देखा और कहा कि जितना मुझे तुम्हें अपना ना बनाने का मलाल है ना, उतना तो शायद कृष्ण को राधा का भी नहीं रहा होगा। मैंने तुम्हें उस दिन से भी ज़्यादा चाहा है जब मुझे मालूम हुआ कि तुम मेरी नहीं हो पाओगी। यह सुनते ही माया की आंखों से दोबारा आंसू निकल पड़े। वीर माया को दोबारा इतने करीब पाकर धीरे-धीरे होश खो रहा था। माया के चेहरे पर आँख से लुढ़क कर आए आँसुओं को वीर ने अपने होंठों से पी लिया और दोनों फिर वही किचन में ही किस करने लग गए। वीर को माया के जिस्म की वही खुशबू फिर महसूस हुई जो उसे पागल बना देती थी। वीर फिर से उसी मैदान में दौड़ना चाहता था। फिर से वीर एक लंबी पारी खेलना चाहता था, अपने पहले प्यार की दूसरी पारी। वीर ने माया को अपनी बाँहों में उठा लिया और बिस्तर तक ले गया। वीर और माया कुछ समय के लिए एक-दूसरे में खो गए थे।

शाम को वीर माया के फ़लैट से वापिस दिल्ली आ रहा था। रास्ते भर वह माया के बारे में सोच रहा था कि क्या दोनों का फिर से मिलना, फिर से वही सब करना सही था या ग़लत? लेकिन अब वीर को इसकी परवाह नहीं थी। उसे अपना खोया हुआ प्यार दोबारा से मिला था। दोबारा से जिंदगी ने उसे जीने का रास्ता दिया था तो वह तो बस उस रास्ते पर ही चलना चाहता था।

'V' silent

वीर माया की तस्वीर बना रहा था। वह जल्द से जल्द इसे पूरा करके माया को देना चाहता था। वीर ने माया को कभी कुछ नहीं दिया था, लेकिन वीर इस तस्वीर के रूप में माया को एक क़ीमती याद देना चाहता था। माया से मिलकर आने के बाद वीर ने अपना पूरा ध्यान तस्वीर बनाने पर लगा दिया था। तस्वीर भी लगभग पूरी हो चुकी थी।

वीर ने ब्रश टेबल पर रखा और थोड़ा पीछे हटकर माया की तस्वीर को देखने लगा। तस्वीर में माया इतनी ज़्यादा ख़ूबसूरत लग रही थी कि वीर को माया के साथ बिताए अपने रूमानियत भरे पल याद आ गए। वीर ने एक सिगरेट सुलगाई और सोचने लगा कि माया से दोबारा इस तरह छुप-छुपकर मिलना कहीं एक दिन माया के लिए कोई मुसीबत न बन जाए। वैसे भी माया के साथ अब क्या रिश्ता है मेरा? ये छुपकर मिलना, कभी-कभी फ़ोन पर बात करना, अब तो मैं माया को अपना भी नहीं कह सकता। माया के साथ रिश्ते का अब क्या नाम था? हर इंसान के जीवन में कुछ ऐसे रिश्ते होते हैं, जिन्हे वो समझते तो है लेकिन समझना नहीं चाहते। वीर भी जानता था कि इस रिश्ते का क्या अंत होना है, लेकिन समझना नहीं चाहता था।

जब माया से मुलाक़ात हुई थी तब उसने बताया था कि उसकी एक बेटी भी है। उसका नाम काव्या है। आज सोचता हूँ कि साला जिसकी वजह से वो इस नशे के अंधे कुएँ में गिरा, वो किसी ओर की वजह से खट्टा खा रही थी, लेकिन कुछ भी हो, अब हम ग़लत कर रहे थे।

वीर का माया के साथ रिश्ता अब Affair से Extramaritial affair की कैटेगरी में तब्दील हो गया था, लेकिन वीर जब भी माया को अपने नजदीक पाता था तो सब कुछ भूल जाता था। वो यह सोच ही नहीं पाता था कि क्या

सही है और क्या ग़लत? वीर और माया का रिश्ता अब एक बेनामी रूप ले चुका था, जिसकी आगे ना कोई मंजिल थी और ना ही कोई ख़ूबसूरत अंत। बस, थी तो केवल पुराने प्यार की गहरी खाई, जिसमें दोनों डूब रहे थे। ऐसे रिश्ते को क्या कहा जाए, जिसमें दोनों समाज से छुप के अपने प्यार की उपस्थिति दर्ज कराते थे। वैसे भी जिन रिश्तों का नाम नहीं होता है, उनका रंग बहुत गाढ़ा होता है, जो आसानी से नहीं छूटता है और जब छूटता है तो जिंदगी को बहुत बेरंग कर देता है। वीर ने अपना ध्यान इन सब बातों से हटाया और माया की तस्वीर को फाइनल टच देने में लग गया।

वीर और माया इतने साल के बाद धीरे-धीरे अपनी पुरानी जिंदगी में कदम रख रहे थे। वीर माया से दोबारा मिलने की कह रहा था, लेकिन माया मिलने के लिए मना कर रही थी क्योंकि माया अपने घर पर आई हुई थी। माया कहती थी कि यहाँ तुम आ नहीं सकते हो और तुम्हारे पास आने के लिए मुझे काव्या को घर पर अकेले छोड़ना पडेगा। लेकिन वीर के बार-बार कहने पर माया ने मिलने के लिए हामी भर दी।

माया ने घर पर किसी फ्रेंड़ की शादी का झूठ बोला और दो दिन के बाद माया काव्या के साथ दिल्ली पहुँच गई थी। माया और काव्या को वीर मेट्रो स्टेशन से अपने फ़्लैट पर ले आया था। वीर ने काव्या को देखा और माया से कहा कि ये तो बिल्कुल तुम्हारी ही कॉपी है, बहुत स्वीट है। माया ने वीर की टी-शर्ट और लॉवर पहन लिया था। वीर और माया, दोनों काव्या के साथ टाइम स्पैंड कर रहे थे। दोनों काव्या के साथ मस्ती कर रहे थे, उसे कभी-कभी तंग भी कर रहे थे। वीर ने माया की कमर में हाथ डाला तो काव्या ने वीर का हाथ हटा दिया और माया से लिपट गई। बच्चे ऐसे ही होते हैं, वो अपनी चीज़ों पर अपना पूरा हक़ समझते है। माया यह देखकर खूब हँस रही थी।

शाम को तीनों बाजार में घूमने के लिए चले गए। माया बाज़ार में अपनी हील्स पहन कर नहीं जाना चाहती थी तो वीर सामने फ़्लैट में रह रही फैमिली की एक लेडीज़ चप्पल बिना बताए बाहर से उठा कर ले आया और माया को पहनने के लिए दे दिए। बाज़ार में वीर ने काव्या को एक ड्रेस दिलवाई और पेस्ट्री भी खिलाई। माया ने भी अपने लिए एक सूट ख़रीद लिया था। वहाँ वीर ने माया से कहा कि यहाँ किसी रेस्टोरेंट से खाना पैक करा लेते है, फिर फ़्लैट पर चल कर खा लेंगे, लेकिन माया ने ये कहकर मना कर दिया कि वो खाना ख़ुद वीर के लिए बनाएगी।

रात को माया किचन में खाना बना रही थी। शायद माया ने वीर के दिल की आवाज़ सुन ली थी। वीर ने कभी यह सोचा था कि माया उसके घर के किचन में उसके लिए खाना बनाए। हमेशा के लिए तो नहीं, पर हाँ एक बार के लिए तो माया ने वीर की यह हसरत पूरी कर दी थी। वीर ने अपनी इस ख़्वाहिश में एक और ख़्वाहिश पूरी कर ली थी। वीर खाना बनाती हुई माया के पास गया और माया को पीछे से बाँहों में ले लिया और फिर वीर ने माया की गर्दन से बाल हटाए और चूम लिया।

रात को काव्या दूध पीकर सो गई थी। वीर और माया एक-दूसरे के पास बैठें थे।

“मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ माया। प्लीज़ तुम वापिस मेरे पास लौट आओ ना।” वीर ने माया के हाथों को अपने हाथों में लेकर कहा।

“प्यार तो मैं भी तुमसे बहुत करती हूँ, लेकिन लौट कर आना समाज की नज़र में ठीक नहीं होगा। मैं भी तुम्हारे पास आना चाहती हूँ, लेकिन अब ऐसा करना काव्या के लिए ग़लत होगा।” माया ने कहा।

“तो क्या हम ऐसे ही छुप-छुपकर मिलते रहेंगे? वो भी कभी मौका मिला तो मिलेंगे नहीं तो फिर मौके का इन्तज़ार करते रहो।” वीर ने कहा।

"हाँ, शायद ऐसा ही होगा। हमें अब अपने प्यार को ऐसे ही जिन्दा रखना होगा। बस हमें अब नदी के उन दो किनारों की तरह प्यार करना होगा जो जानते हैं कि कभी एक नहीं हो पाएँगे, लेकिन फिर भी ताउम्र साथ चलते हैं एक-दूसरे के।" माया ने कहा।

"तुम बहुत बदल गई हो। पहले तुममे हिम्मत थी कि तुम मेरे साथ अपना रिलेशनशिप बताने से पीछे नहीं हटती थी और आज कह रही हो कि ऐसे ही मिलना होगा।" वीर ने कहा।

"हाँ, शायद मैं बदल गई हूँ। अब शादी और काव्या के बाद मेरी लाइफ़ बदल चुकी है, लेकिन मेरा प्यार हमेशा तुम ही रहोगे, वो नहीं बदलेगा कभी। जिस तरह Pneumonia में 'P' silent होता है, Ptyalin में 'P'silent होता है, ठीक वैसे ही मेरी लाइफ़ में 'V' silent है, लेकिन है ज़रूर। इस 'V' के बिना तो मेरे जीवन का आधार भी नहीं है।" माया ने कहा।

"लेकिन मैं तुम्हारी लाइफ़ में Silent Role नहीं निभाना चाहता हूँ।" वीर ने माया के चेहरे को दोनों हाथों से पकड़कर कहा।

"तो क्या Silent से Violent होना है? इससे तो मेरी लाइफ़ में तूफ़ान आ सकता है। इससे पहले भी आंधी तो आ ही चुकी है, जिसके कारण मैं काफ़ी दिनों तक परेशान रही थी, यही चाहते हो क्या तुम?" माया ने कहा।

वीर को अजय की ग़लती का अहसास हुआ और उसने अपनी नज़रें फेर लीं।

"मैंने कब चाहा कि तुम्हारी लाइफ़ में कोई तूफ़ान आए और तबाही मचा दे? मैं तो हर पल तुम्हें खुश देखना चाहता हूँ। हाँ, Violent तो नहीं, पर Wild होना चाहता हूँ।" वीर ने शरारती लहजे में टॉपिक बदला।

Wild शब्द सुनते ही माया ने वीर की तरफ़ देखा और फिर ख़ुद को वीर के सीने में छुपा लिया और धीरे से कहा 'हाँ, Wild तो ठीक है'। यह सुनने के बाद वीर ने माया से शरारती लहजे में कहा कि अरे, दोबारा बोलो। मैंने सुना नहीं क्या कहा तुमने? माया ने अपनी नज़रें उठाईं और वीर की आँखों में देखा और मुस्कुराकर दोबारा वीर के सीने पर अपना सिर टिका दिया।

माया जब वीर के फ़्लैट पर आई थी तो वीर ने माया की तस्वीर को छुपा दिया था। वीर माया की तस्वीर पूरी करने के बाद उसे Surprise देना चाहता था, इसलिए वीर ने माया को तस्वीर के बारे में बताया भी नहीं था। अब वो तस्वीर बनकर पूरी तैयार हो चुकी थी। वीर माया को यह कीमती तोहफ़ा मिलकर देना चाहता था। अगले दिन माया दिल्ली से अपने घर जा चुकी थी।

कुछ दिन बाद वीर माया से मिलने के लिए नारनौल आया। वह माया को वो तस्वीर देना चाहता था। उससे पहले वीर ने माया की बनाई तस्वीर को फ्रेम करवाया और माया से मिलने के लिए चला गया। दोनों एक रेस्टोरेंट में बैठे थे। वीर ने माया को वो तस्वीर दिखाई और बताया कि यह उसने अपने हाथों से बनाई है। माया वीर के इस Surprise से काफ़ी खुश थी। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि वीर कभी उसे ऐसा Surprise देगा। वीर ने माया से कहा कि मैं तुम्हें कुछ भी दे सकता था, लेकिन यह तस्वीर मेरे दिल के बहुत करीब है और यह तस्वीर इसलिए देनी थी कि तुम इसे अपने कमरे में लगाओ और तुम यह हमेशा याद रखो कि वीर तुम्हारे लिए और तुम्हारे साथ हमेशा है। माया बहुत खुश दिख रही थी। वो बस वीर की बातें सुन रही थी और मुस्कुरा रही थी।

ज़माने का ड़र

जब चीज़ें आँखों के बिल्कुल पास होती हैं तो अक्सर धुंधली हो जाती हैं फिर जब दूर होती हैं तब साफ़ दिखने लगती हैं, लेकिन अगर बहुत दूर हो जाएँ तो दिखना बन्द हो जाती है। यह ड़र अब वीर और माया, दोनों को सताता था कि कहीं अब एक-दूसरे से इतना दूर न हो जाए कि एक-दूसरे को देख पाना भी दूभर हो जाए। यह दूरी और दर्द दोनों पहले भी महसूस कर चुके थे और मालूम था कि एक-दूसरे के बिना जीना कितना दर्द पहुँचाता है।

वीर और माया की अक्सर फ़ोन पर बातें होने लगी थी। वीर दो-तीन बार माया के घर जाकर उससे मिल चुका था, लेकिन फिर भी एक ग़लानि उसके मन में हमेशा रहती थी। उसे हमेशा महसूस होता था कि जिस अधिकार को एक बार त्याग चुका है, उसे बार-बार बनाए रखने के प्रयत्न से बढ़कर विड़म्बना और क्या होगी, लेकिन फिर भी वीर हर बार माया के पास पहुँच जाता था।

माया का वीर के साथ फिर से एक-दो बार झगड़ा हुआ क्योंकि माया ने वीर से एक घड़ी मंगवाई थी, लेकिन वीर बार-बार भूल जाता था। इसी बात को लेकर फिर से दोनों के बीच लड़ाई हुई थी। वीर को बार-बार इस रिश्ते का अन्त नजर आता था और वो हर बार ख़ुद को महीनों तक तैयार करता था कि जब माया उसे मिलने बुलाएगी, तो वह माया की बात को अनसुना कर देगा और उसे मिलने से मना कर देगा, लेकिन हर बार यह व्यर्थ ही जाता था। यह कैसा प्रेम था उनके बीच, जो उनका आत्मसम्मान तक निगल चुका था? जब आत्मसम्मान घट जाता है तब ग़लत और सही भी दिखाई नहीं देता है और उसकी ग़लानि भी नहीं होती है।

वीर और माया अब अपने पुराने प्यार की दूसरी पारी खेल रहे थे। वीर अब वही पुराना वीर था, जिसमें केवल माया

के लिए प्यार था तो कुछ वीर में कमी भी थी। माया वीर से मिलना चाहती थी। माया ने वीर से कहा कि वह उससे कल मिलने के लिए आए, लेकिन वीर का कल सरकारी नौकरी के लिए इंटरव्यु था। वीर ने माया को मना किया कि वह कल नहीं मिल सकता, लेकिन माया वीर से कल ही मिलना चाहती थी। माया ने कहा कि उसके पास कल ही मिलने का मौक़ा है उसके बाद वह कुछ महीनों तक नहीं मिल पाएगी।

वीर यही सोचता रहा कि वह कल माया से मिलने जाए या नहीं? वह माया को फिर से खोना नहीं चाहता था। प्रेम जब सारी सीमाएं तोड़कर आगे निकल जाए तब सही और ग़लत के बारे में सोचना बेमानी-सा लगता है। वीर ने भी यही फ़ैसला किया कि वह कल माया से मिलने के लिए जाएगा।

अगले दिन माया ने बताया कि वह कालेज में है और उसे वहीं आना है। वीर माया के कालेज के पास पहुँच चुका था, जहाँ से दोनों को माया के फ़्लैट पर जाना था। माया ने वीर को 10 मिनट इन्तज़ार करने के लिए कहा। काफ़ी देर इन्तज़ार करने के बाद वीर ने माया को फ़ोन किया, लेकिन माया ने फ़ोन नहीं उठाया। वीर बार-बार माया को फ़ोन कर रहा था, लेकिन माया फ़ोन नहीं उठा रही थी। वीर को माया पर गुस्सा आ रहा था। उसे लग रहा था कि अगर माया को ऐसा ही करना था तो उसे मिलने के लिए बुलाया ही क्यों? वीर अपना इंटरव्यु तक माया के लिए छोड़ कर आया था। वीर को माया के ऊपर बहुत ज़्यादा गुस्सा आ रहा था।

“सुन, मैं फ़्लैट पर आ गई हूँ, तो तू भी यही आ जा अब।” माया ने कुछ देर बाद फ़ोन पर कहा।

“यार, हद होती है। जब वही मिलना था तो सीधा वही बुलाती ना, यहाँ क्यों बैठा रखा है मुझे?” वीर ने झुंझलाकर कहा।

“मैंने सोचा तो यही था कि यहीं से साथ निकलेंगे, लेकिन यहाँ मुझे काफ़ी लोग जानते है तो बस इसलिए मैं वहाँ

से निकल आई और घर आकर तुझे फ़ोन किया है।" माया ने जवाब दिया।

"तो फ़ोन तो कर सकती थी कि मैं निकल रही हूँ। तूने तो घर जाकर मुझे याद किया है कोई तेरे इन्तज़ार में बैठा भी है।" वीर ने इतना कहकर फ़ोन रख दिया।

वीर को माया पर गुस्सा आ रहा था। वीर कालेज से सीधा माया के फ़्लैट पर पहुँच गया। माया ने दरवाज़ा खोला तो वह नहाकर आई थी। माया ने दरवाज़ा बन्द किया और बालकनी में जाकर बालों को सुखाने लगी। वीर को अगर गुस्सा नहीं आ रहा होता तो वह वही बालकनी में जाकर माया को सुखाते बालों को देखकर वही उसे बाँहो में भर लेता, लेकिन वीर का गुस्सा इतनी जल्दी शान्त होने वाला नहीं था। वीर बालकनी में गया और माया का हाथ पकड़कर उसे कमरे में ले आया। वीर ने माया से कहा कि अगर तुझे यहाँ मिलना था तो मुझे कालेज क्यों बुलाया और अगर तुझे वहाँ से अकेले आना था तो कम से कम वहाँ से निकलने से पहले फ़ोन कर देती, लेकिन तुमने यहाँ आने के बाद फ़ोन किया। माया कुछ कह पाती, उससे पहले ही वीर ने माया के गाल पर एक ज़ोरदार तमाचा मार दिया। थप्पड़ इतनी ज़ोर से लगा कि कमरे में आवाज गूँज गई और माया की चीख़ निकल गई। वीर को भी अन्दाजा नहीं था कि उससे इतनी ज़ोर से थप्पड़ लग जाएगा। वीर माया पर फिर से अपना हक़ समझने लगा था। उसे लगा था कि वह जैसे चाहे माया के साथ बर्ताव कर सकता था। उसे पहले की तरह पीट भी सकता था, लेकिन माया वो माया नहीं थी अब। आज पहली बार माया की आंखों से आँसू नहीं निकले बल्कि माया को भी गुस्सा आ गया। माया ने वीर का कॉलर पकडा और वीर से कहा कि मैंने सोचा था कि तू बदल गया है, लेकिन तू अब भी पहले जैसा ही है। तूने पहले भी कभी मेरी मजबूरियाँ नहीं समझीं और आज भी नहीं समझी। मैंने सोचा था कि शायद अब तुम मुझे समझोगे, लेकिन मेरा ऐसा यक़ीन

करना सब व्यर्थ था। अब आगे से तुझसे मिलना तो छोड़, बात तक भी नहीं करूँगी। माया ने वीर को कॉलर से पकड़े हुए ही घर से बाहर निकाल दिया।

वीर नीचे पार्किंग में गया और उसने अपनी कमीज़ ठीक की। वीर को अहसास हुआ कि उसने बहुत बड़ी ग़लती कर दी है। वह हर बार ऐसी गलतियाँ कैसे कर सकता है, लेकिन अब ग़लती फिर से दोहराई जा चुकी थी। माया से माफ़ी मांगने के लिए वीर ने बहुत बार फ़ोन किया, 'सॉरी' लिखकर मैसेज किया, लेकिन माया ने कोई जवाब नहीं दिया। वीर झुंझलाकर माया के फ़्लैट पर गया और दरवाज़ा पीटने लगा। काफ़ी देर दरवाज़ा खटखटाने और डोरबेल बजाने के बाद भी माया की तरफ़ से कोई जवाब नहीं आया। अंत में वीर वहाँ से निराश होकर दिल्ली लौट आया।

ग्रीटिंग कार्ड और घड़ी

इंसान के किए हुए कर्म-कांड़ और ग़लतियों के अलावा उसकी वर्तमान स्थिति का कोई ज़िम्मेदार नहीं होता है। वीर भी अपनी ग़लतियों का स्वंय ज़िम्मेदार था। माया ने उस घटना के बाद वीर से बात तक नहीं की थी। अब एक महीना हो गया था। वीर फिर से उन्हीं परिस्थितियों में पहुँच गया था, जहाँ से वापिस लौट आने की उसे उम्मीद अब कम ही थी। वीर ने माया को अनगिनत बार फ़ोन किए, लेकिन माया ने जवाब तक नहीं दिया था। माया के थप्पड़ गाल पर जरूर लगा था, लेकिन चोट उसके दिल पर लगी थी। वीर को अपनी बिन वजह की हुई इस ग़लती का अहसास था, लेकिन अब माया यह सब मानने को तैयार नहीं थी। वीर का जन्मदिन भी जा चुका था, लेकिन माया जो हर बार वीर को इस दिन फ़ोन ज़रूर करती थी, उसने इस बार वीर को फ़ोन भी नहीं किया। वीर को इस बात से माया की नाराज़गी का अन्दाजा हो गया था। वीर फिर से धीरे-धीरे शराब और ड्रग्स में डूब रहा था।

वीर के घरवालों ने वीर का शादी को लेकर वैसे ही उसे परेशान कर रखा था। वे चाहते थे कि वीर अब जल्द से जल्द शादी कर ले, लेकिन वीर उनकी बात सुनता तक नहीं था। उन्होने वीर के लिए एक लड़की पसन्द कर रखी थी, बस, उन्हें वीर की 'हाँ' का इन्तज़ार था। अजय ने कई बार वीर को समझाया और शादी करने पर ज़ोर डाला, लेकिन सब व्यर्थ गया।

वीर फिर से माया की यादों में डूब रहा था। वह रोज़ अपनी ग़लती का अहसास करता था और आईने के सामने खड़े होकर माफ़ी मांगता था, लेकिन उसकी आवाज़ अब माया तक पहुँचने वाली नहीं थी।

वीर ने सोच लिया था कि एक बार माया से मिलकर अपनी ग़लती की माफ़ी जरुर मांगेगा और उसे कह देगा कि ये

वीर तेरे बिना अधूरा है। यही विचार करते हुए वीर को ख़्याल आया कि माया को एक घड़ी चाहिए थी, जो अब तक वीर ने उसे लाकर नहीं दी थी। वीर ख़ुद पर गुस्सा हुआ कि वो बार-बार ग़लती कैसे कर सकता है? वीर तुरंत बाजार गया और माया के लिए एक घड़ी खरीदकर लाया। अजय ने वीर को हिदायत दी कि माया को एक ग्रीटिंग कार्ड भी दे। जिसमें 'सॉरी' लिखा होना चाहिए तो शायद हो सकता है कि माया तुझे माफ़ कर दे, लेकिन इसकी उम्मीद कम है तेरी ग़लती को देखते हुए। दोनों बाज़ार जाकर एक ग्रीटिंग कार्ड खरीद कर लाए और उसमें वीर ने अपनी ग़लती मानी और 'सॉरी' लिखा।

वीर और अजय अगले दिन माया के कालेज जाने के लिए निकल चुके थे। हालांकि अजय ने कहा था कि वीर अकेला ही जाए, लेकिन वीर ने कहा कि तुझे भी साथ चलना पडेगा क्योंकि जब तू वोट में साथ देता है तो चोट में भी देना पड़ेगा। इसलिए अजय भी वीर के कहने पर माया के कालेज जाने के लिए साथ निकल चुका था।

"अबे, तू यह कैसे कर लेता है कि अपनी गर्लफ्रेंड पर ही हाथ उठा देता है? लड़कियाँ कोमल होती है। उन्हे प्यार की ज़रूरत होती है इसलिए उन्हें प्यार से ही रखा जाता है। वो गाना नहीं सुना क्या 'प्यार दो, प्यार लो'। प्रेमियों का प्यार पारस्परिक होता है। अगर प्यार देगा तो प्यार ही मिलेगा और ग़लती करेगा तो ये तुझसे बेहतर कौन जान सकता है कि फिर नाराज़गी ही मिलेगी।" अजय ने वीर पर तंज कसा।

"मुझसे कण्ट्रोल नहीं हुआ और बस यह ग़लती कर बैठा। मैं तो यह सोचता हूँ कि मेरे हाथ क्यूँ नहीं कांपे जब मैंने यह जघन्य अपराध किया।" वीर ने कहा।

"साले, पहले यह हरकत करता तो ठीक था जब वो तेरी ही थी, लेकिन अब उसके साथ ऐसा करना ठीक नहीं है। वैसे भी मैंने कहीं सुना है कि औरत को पैरों के नीचे रखने वाले

अक्सर प्यार करते हुए उनके पैरों को भी चूमते हैं।" अजय ने कहा।

"बस, पता नहीं जब भी माया का नाम आता है तो बस लगता है कि वो मेरी ही है, किसी ओर की नहीं। माया किसी ओर की हो चुकी है, मैं इस बात को अभी तक स्वीकार ही नहीं कर पाया हूँ। और मैंने कब उसे पैरों के नीचे रखा, इस बात का मुझसे क्या संबंध है? माया पैरों के नीचे नहीं दिल में वहाँ रहती है जहाँ उसकी जगह हमेशा रहेगी।" वीर ने कहा।

"हाँ, वो तो पता है, लेकिन ये हाथ उठाना जैसी बेवकूफी भरी हरकत मत किया कर। इन चीज़ों की प्यार में कोई जगह नहीं होनी चाहिए।" अजय ने चलती बाइक पर सिगरेट सुलगाकर कहा।

"हाँ, जानता हूँ, लेकिन ग़लती हो जाती है। इसलिए तो माफ़ी मांगने जा रहा हूँ।" वीर ने सिगरेट पास करने का इशारा करते हुए कहा।

वीर और अजय, दोनों माया के कालेज के बाहर पहुँच चुके थे। कालेज के बाहर से वीर ने माया को बहुत बार फ़ोन किया, लेकिन माया बार-बार फ़ोन काट रही थी। फिर वीर ने माया को मैसेज किया कि वो उसके कालेज के बाहर है और मिलकर उसे कुछ देना चाहता है। माया का कुछ सेकेंड के बाद मैसेज आया कि उसे नहीं मिलना है और न ही उसे कुछ लेना है और बार-बार फ़ोन करने की भी कोई ज़रूरत नहीं है। वीर ने फिर से माया को दो-तीन मैसेज और किए, लेकिन माया ने उन मैसेज का जवाब नहीं दिया।

कुछ देर बाद वीर ने माया को मैसेज किया कि अगर वो बाहर आकर नहीं मिलती है तो वो कालेज के अन्दर आ जाएगा। माया ने मैसेज पढ़ने के बाद वीर को फ़ोन किया और कहा कि वो यहाँ से चला जाए, इस कालेज में वो पढाती है और कोई सीन क्रिएट नहीं करना चाहती है। वीर ने उससे फ़ोन पर अपनी ग़लती का माफ़ी मांगी और कहा कि अगर मिलना

नहीं है तो जो तुम्हारे लिए लाया हूँ, वो आकर ले जाओ । माया ने कहा कि वह मिलना ही नहीं चाहती और ना ही उस इंसान का चेहरा देखना चाहती है, जो उस पर हाथ उठाता है। इतना कहकर माया ने फ़ोन काट दिया।

वीर ने फिर से माया को फ़ोन किया और कहा कि अगर तुम बाहर नहीं आती हो तो ठीक है, मैं ही अन्दर आ रहा हूँ। वीर ने इतना कहकर फ़ोन रख दिया। तुरंत माया को मैसेज आया जिसमें लिखा था कि उसे अंदर आने की ज़रूरत नहीं है, वो किसी को बाहर भेज रही है। जो देना है उसे दे दो, लेकिन यहाँ ड्रामा करने की ज़रूरत नहीं है।

अजय ने वीर से कहा कि ठीक ही है, अभी माया तक घड़ी और ग्रीटिंग कार्ड पहुँचा दे, मिल फिर कभी लेना। अब तूने ग़लती जितनी बड़ी की है तो उसकी नाराज़गी भी तो उतनी ही बड़ी होगी।

माया का एक छात्र कालेज के बाहर आया और वीर ने उसे वो पैकेट दे दिया। पैकेट देने के बाद वीर और अजय वहाँ से दिल्ली की तरफ़ निकल गए।

वीर दो दिन तक माया के फ़ोन और मैसेज का इन्तज़ार करता रहा, लेकिन माया ने ना ग्रीटिंग का और ना ही घड़ी का कोई रिस्पोंस दिया। माया की नाराज़गी अभी भी जारी थी। वीर अब भी माया के फ़ोन का इन्तज़ार कर रहा था। कई महीनों तक माया की कोई ख़बर नहीं रही और ना ही उसने कभी वीर को फ़ोन किया। माया की शादी के बाद दोनों का मिलना माया के हिसाब से होता था। उसे जब भी मौक़ा मिलता था तब वह मिलती थी। माया अपनी मर्ज़ी से आती थी और कभी भी कुछ दिनों के लिए ग़ायब हो जाती थी और वीर माया के लिए हमेशा एक अधीर इन्तज़ार में बना रहता था।

इन्तज़ार ही इश्क़ है

जैसे नसीम, हर सहर,

तेरी ही करू हूँ जुस्तजू,

ख़ाना-ब-ख़ाना, दर-ब-दर,

शहर-ब-शहर, कू-ब-कू।

मीर तक़ी मीर साहब की यह शायरी वीर के उपर ठीक बैठ रही थी। माया के साथ हुई उस घटना के बाद वीर और माया, दोनों अलग हो चुके थे। माया के दिल को वीर की इस हरकत से गहरी चोट पहुंची थी, जिसने इन दोनों प्रेमियों के बीच काफ़ी दूरियाँ कर दी थीं।

वीर और माया की बात हुए अब 18 महीने से भी ज़्यादा समय हो चुका था। वीर को अपनी ग़लती का अहसास हर रोज़ होता था। हर दिन उसे माया को थप्पड़ लगाने का बुरा लगता था। उसे लगता था कि माया अब एक शादीशुदा लड़की थी। जिस पर वीर का अब कोई हक़ नहीं था, लेकिन वीर को कभी यह बात समझ ही नहीं आई। वीर को हमेशा लगता था कि वह और माया जब भी साथ होते थे तो माया केवल उसी की ही होती थी। ग़लती वीर की नहीं थी उसने हमेशा से सिर्फ़ माया से ही प्यार किया था। जब माया की शादी हुई और माया वीर से दूर चली गई थी, तब वह टूट चुका था और उसे लगता था कि उसकी सबसे क़ीमती चीज़ उससे दूर चली गई है। जैसे ही माया दोबारा वीर की जिंदगी में आई तो वीर ने उसे फिर से उतना ही प्यार किया जितना पहले करता था, लेकिन माया ने इस बार वीर की इस ग़लत हरकत को नहीं सहा। माया को यह पहले ही कर देना चाहिए था तो फिर इस जुदाई की नौबत ही नहीं आती।

वीर को अब धीरे-धीरे अहसास होने लगा था कि माया अब फिर से वीर की लाइफ़ में लौट कर नहीं आएगी, फिर भी

वह लाइफ़ में Move On नहीं कर पा रहा था। वीर माया को भूल नहीं पा रहा था। हो सकता था कि अगर माया वीर की जिंदगी में दोबारा दस्तक न देती तो शायद वीर अपनी जिंदगी में Move On करने की कोशिश करता, लेकिन माया के दोबारा आ जाने से इस प्रेम कहानी के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ गया था, जिसने इसे एक नया रूप दे दिया था।

वीर अब माया की यादों में इतना डूब चुका था कि उसे हर पल, हर जगह माया के होने का अहसास होता था। वीर को हमेशा उम्मीद रहती थी कि माया फिर से लौट कर जरूर आएगी और उसे उतना ही प्यार करेगी जितना पहले करती थी, लेकिन जरूरी नहीं कि हर उम्मीद अपने साथ पूरी होने की उम्मीद भी साथ लेकर आए।

वीर फिर से उसी नशे के नर्क में जलने लगा, जिसमें माया के फिर से आने के बाद उस नर्क से लगभग निकल चुका था। लेकिन फिर माया के चले जाने से वीर को नशे ने फिर से जकड़ लिया था। वीर अब फिर से हर समय नशे में रहने लग गया था। माया के लव-लैटर, तस्वीरें, बिस्तर पर छोड़ी हुई उसकी हेयर-क्लिप, माया के सूट से टूटा हुआ सितारा, सब कुछ वीर रोज़ देखता था और दु:खी हो जाता था।

प्यार जितना ही गुप्त और एकान्त होता है, उतना ही तेज़ और ज़्यादा होता है। वीर का प्यार भी अब तन्हा था और वह माया को और भी अधिक प्यार करने लगा था। माया वीर के दिल की धड़कन थी और दिल से धड़कन को भुला देना आसान नहीं होता हैं क्योंकि इस कोशिश में प्रेमी दम भी तोड़ सकता है। वीर जब भी आईने में ख़ुद को देखता तो यही कहता था कि माया, तुम बस एक बार फिर वापिस लौट कर आ जाओ। मैं फिर से ऐसी ग़लती नहीं करूंगा। यह तुम्हारी जुदाई ने मुझे बर्बाद कर दिया है, दिल में इतना दर्द होता है कि सहन करना मुश्किल हो जाता है। तुम आओ और मेरे दिल में झांक कर देखो मेरे दर्द चीख रहे है।

अजय जब भी वीर से कहता कि उसे भूल जा, अब माया फिर से लौट कर नहीं आने वाली, वो अब तेरी नहीं रही, तब वीर इतना दु:खी हो जाता कि वह सोचता था कि वो तो माया का है, यह राज तो सब जानते है, लेकिन माया किसकी है यह सवाल उसे सोने ही नहीं देता है।

वीर ने अब सभी से दूरियाँ बना ली थीं। अजय से भी अब कम ही बातें होती थीं। आदि और नीलेश से तो लगभग बातें बन्द ही हो चुकी थीं। अजय वीर से कहता था कि माना ख़ुद को भूलकर ही महबूब को पाया जाता है, लेकिन तू इतना भी ख़ुद को मत भूला कि तेरी साँसे ही एक दिन तुझे छोड़ कर चली जाँए।

वीर अजय से कहता था कि यार, प्यार में तो गलतियाँ माफ हो जाती है तो माया मुझे माफ़ क्यों नहीं कर पा रही है? वीर कहता था कि उसे उम्मीद है कि माया फिर से लौट कर आएगी और उसे सँभाल लेगी। अगर माया के लिए कितना भी इन्तज़ार करना पडे, और अगर इन्तज़ार ही इश्क़ है तो आख़िरी साँस तक माया के हवाले। मैं उम्मीद नहीं छोड़ सकता हूँ और उसकी प्रतीक्षा करता रहूँगा।

प्रतीक्षा प्रेम में की जाने वाली सबसे जटिल प्रक्रिया है जैसे नागफनी के पौधे सालों साल तक बारिश की प्रतीक्षा करते हैं और उनकी उम्मीद नहीं टूटती है, उसी तरह वीर भी अब प्रतीक्षा कर रहा था उस क्लिप के साथ, जो माया बिस्तर पर छोड़ गई थी, उस सितारे के संग जो माया के सूट से टूटा था, उस खुशबू के साथ जो माया के जिस्म से आती थी और बिस्तर की चादर की सिलवटों में छोड़ गई थी। यह सब साक्षी रहेंगे वीर के इन्तज़ार के।

फिर तेरी कहानी याद आई -2

"बस यही थी मेरी अधूरी प्रेम कहानी, जिसमें न प्रेम जीत पाया और न ही प्रेमी।" वीर ने बाहर आसमान की तरफ़ देखकर कहा, जहाँ बारिश रूकने के बाद आसमान साफ हो गया था।

माधवी ने घड़ी की तरफ़ देखा जिसमें 05:00 बज रहे थे, माधवी ने अपने आँसू पोंछे और बिस्तर से उठकर बाथरूम में मुँह धोने के लिए चली गई। वीर ने बालकनी का दरवाज़ा खोला और वापिस कमरे में आकर सोफे पर बैठ गया। माधवी बाथरूम से बाहर आई और कमरे में टिप्सी को देखने गई, जो अभी भी सो रही थी।

"मैं चाय बनाती हूँ। तू पिएँगा या सुबह भी तेरी शराब ही चलती है?" माधवी ने कमरे के दरवाज़े पर खड़े होकर वीर से पूछा।

"हाँ, पी लूँगा, शराब का नशा तो वैसे भी आज चढ़ा ही नहीं।" वीर ने कहा।

माधवी किचन में चाय बनाने चली गई। कुछ देर बाद माधवी दो कप चाय लेकर वीर के पास आई और वहीं उसके सामने बिस्तर पर बैठ गई।

"यार, तेरी कहानी ने तो रूला दिया। मैं तो पहले यही सोचती थी कि सारी ग़लती माया की ही थी, लेकिन आज पता चला कि तू भी उसमें बराबर का हिस्सेदार था। मुझे तो यक़ीन ही नहीं हो रहा कि तूने माया को मारा। यार, ऐसे कैसे कर सकता है तू?" माधवी ने चाय की चुस्की लेकर कहा।

"मैंने तो पहले ही कहा था कि कुछ ग़लतियाँ मैंने की है तो कुछ ग़ुनाह माया ने भी किए हैं। हम दोनों ही ज़िम्मेदार है इस स्थिति के, लेकिन माया की वो ग़लती जो सबसे बड़ी थी और इस पूरी स्थिति की ज़िम्मेदार है वो यह कि जब उसकी

Engagement हुई, तब उसने मुझसे बात छुपाई। बस, यही बात मुझे आज तक समझ नहीं आई कि उसने अपनी Engagement के समय मुझे क्यूँ नहीं बताया और क्यूँ मुझे Ignore किया? अगर वो मुझे बता देती तो क़सम से, मैं उसी समय उसके घर जाकर सब कुछ बता देता और माया को किसी और का नहीं होने देता। ख़ैर, अगर वो बात ना छुपाती और थोड़ी हिम्मत दिखाती तो आज तेरे लिए चाय माया बनाकर लाती।

ग़लती तो मेरी भी है कि मेरे उस पर हाथ उठ जाते थें। आज अपने इन हाथों को देखता हूँ तो सोचता हूँ कि माया पर हाथ उठाने से पहले यह कट क्यूँ नहीं गए? ख़ैर, जो होना था, वो तो हो ही गया।" वीर ने कहकर टेबल से चाय का कप उठाया।

"तो फिर माया कभी तुझे उसके बाद मिलने आई और तुझे फ़ोन किया?" माधवी ने सवाल किया।

"तुझे क्या लगता है?" वीर ने सवाल पर सवाल किया।

"मुझे तो लगता है कि मिलने नहीं आई, क्योंकि तूने उसे पीटा और वो इतना कि उसकी दर्द भरी चीख़ निकल गई तो फिर तो वह नहीं आई होगी, पक्का" माधवी ने कहा।

"हाँ, आना तो नहीं चाहिए था उसे, लेकिन माया ने हमेशा Unpredictable चीज़े ही की हैं। वो उसके बाद भी मुझसे मिली थी। उस घटना के दो साल बाद उसका फ़ोन आया था। उसने कहा कि वह एक बार मिलना चाहती है, तो मैंने उसे अपना पता भेज दिया और वो दिल्ली मुझसे मिलने आई थी। माया के भाई की एक हादसे में मौत हो गई थी और वो बहुत दु:खी थी। पता है, जब वो मिलने आई थी तो उसने नीले रंग की सूट भी नहीं पहना था। तब मुझे अहसास हुआ कि हमारे मिलने की खुशी से उसका दु:ख ज़्यादा बड़ा और गहरा था। वो कुछ समय के लिए यहाँ पर थी फिर मैं उसको उसके घर छोड़ आया था।

तब मुझे एक नई उम्मीद दिखी थी कि शायद अब वो फिर मेरे पास लौटकर आएगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। हाँ, हमारी उसके बाद बात ज़रूर हुई और मिलने का भी तय हुआ था, लेकिन एक दिन पहले ही उसने मिलने से मना कर दिया। जब मैंने उससे कारण पूछा तो उसने बिना कारण बताए ही फ़ोन रख दिया। मैंने उसके पास दो-तीन बार वापिस फ़ोन भी किया, लेकिन उसने कोई जबाब नहीं दिया।

इसलिए मैंने उम्मीद नहीं छोड़ी है। आज भी उसके लिए इन्तज़ार करता हूँ क्योंकि मुझे पता है कि वो एक दिन फिर मेरे पास आएगी और सीने से लिपट जाएगी। उसकी आने की उम्मीद के कारण ही मैं जिन्दा हूं अब तक, नहीं तो शायद कब का मर चुका होता?" वीर ने कहा।

"वाकई, अजय ठीक ही कहता था कि कौन-से ग्रह से हो तुम लोग? ना तो एक-दूसरे के साथ बिना लड़ाई रह सकते हो और ना ही अलग होते हो। गजब का Combination है तेरा और माया का भी।" माधवी ने कहा।

"हम दोनों ने प्यार के शुरूआती दिनों में ही सोच लिया था कि चाहे कुछ भी हो जाए, हमारे इस पवित्र प्रेम को हमें हमारी आख़िरी साँस तक जिन्दा रखना है। अब लगता है कि सोचना तो आसान था, लेकिन सोचे हुए को निभाना और जीना बहुत मुश्किल है।

माया बहुत सारी मजबूरियों से घिरी हुई है, लेकिन जब भी उसे मेरी याद आती है तो वो आ जाती है क्योंकि उसे मालूम है कि वीर वहीं मिलेगा जहाँ से वो बिछड़े थे।" वीर ने कहा।

"तो ऐसे प्यार और इश्क़ का क्या, जिसके आने की उम्मीद बहुत कम और जाने की Suriety ज़्यादा है। माया तो अपने पति के साथ भी खुश है और तू सिगरेट और शराब के सहारे उसके आने की झूठी उम्मीद का बल्ब जलाँए बैठा है।" माधवी ने कहा।

"सिर्फ़ मोहब्बत ही वो खेल है जो सीख जाता है वो हार जाता है। माना कि मैं हार गया हूँ, लेकिन जीत का स्वाद भी चखा है। वैसे भी माया और मुझमें बहुत फ़र्क है। हम दोनों में उतना ही फ़र्क है जितना साफ़गोई और अदाकारा में होता हैं। मेरे अन्दर जितनी साफ़गाई से माया के लिए भावनाएं, प्यार, तड़प दिखती है, माया उतनी ही अदाकारी से अपनी भावनांए, प्यार, तड़प को छुपाती हैं, क्योंकि उसकी लाइफ़ अब अलग है। वो उस लाइफ़ में जी रही है, जो ना कभी उसने सोचा था और ना ही मैंने, लेकिन फिर भी हम दोनों को एक गंभीर बीमारी है जो एक-दूसरे का पूरक बनाती है, मुझे कुछ भी न भूल पाने की और उसे सब कुछ भूल जाने का नाटक करने की।

हमारे रिलेशनशिप की वो स्थिति है कि प्रेमी पति होना चाह रहे थे और पति प्रेमी बनना चाहता है। लगता है कि कोई स्त्री किसी पुरूष को शायद पूरी मिली ही नहीं। रही बात पति की, तो उसने माया का बदन तो चूमा होगा, लेकिन न उसकी जुल्फ़ें सँवारी होगी और न ही उसके हाथों को अपने हाथ में लेकर नाखून काटे होंगे।" वीर ने कहकर एक सिगरेट जलाई।

"अजय कहता था कि वफ़ाएं तक लौटकर नहीं आती इस दुनिया में और वीर को उस बेवफ़ा के लौट कर आने की दरकार है। अब मुझे भी यही लगता है कि माया अब नहीं आने वाली, तो तू कब तक उसकी यादों के सहारे उम्मीद बांधकर जीता रहेगा? यह उम्मीद और यादें भी तुझे एक दिन धोखा दे जाएँगी। अब इस यादो के गिर्दाब से बाहर निकल और नई जिंदगी जी।" माधवी ने कहा।

"उसे बेवफा मत कह। वो बेवफा नहीं है। यह कहने का हक़ सिर्फ़ मेरे को है और किसी को भी नहीं। अगर वो बेवफ़ा होती तो उसे मैं अब तक मार चुका होता। माया से जुदाई के शुरुआती दिनों में मैं उससे बहुत ज़्यादा नफ़रत करने लग गया था। एक बार तो लगा कि उसे बेवफ़ा को जीने का हक़ बिल्कुल नहीं है। अब अजय तो मेरे हर सही और ग़लत काम का साथी

रहा है तो मैं अजय के साथ माया को जान से मारने के लिए निकल गया था। अजय और मैंने एक बन्दूक का भी इन्तजाम कर लिया था और फिर हम उसके घर की तरफ़ निकल पड़े थे, लेकिन रास्ते मे ही प्यार के आगे मेरे इरादों ने घुटने टेक दिए। सोचा कि वो जैसी भी निकली, आख़िर है तो मेरा प्यार ही। आख़िरकार मैंने तो उसे उतना प्यार किया जितना कि कोई भी नहीं कर सकता, तो मै उसे मारने कि कैसे सोच सकता हूं? बस, फिर मैं और अजय बीच रास्ते से ही वापिस लौट आए थें, क्योंकि अपनों को मारने का हथियार अभी तक नहीं बना है। हाँ, मान लिया कि इंसान सबसे सस्ता मोहब्बत के नाम पर बिकता है और वही मोहब्बत उस इंसान को सबसे महँगी पड़ती है। माया का प्यार मेरे लिए वही महँगी चीज़ है और उसकी यादें उससे भी क़ीमती। मेरा प्यार और माया इतनी कमज़ोर भी नहीं है कि अपने दिल की बात तक ना सुन सके। लेकिन समाज की बेडियाँ इतनी मज़बूत होती है कि उन्हें तोड़ पाना लगभग नामुमकिन होता है। इतिहास में जिन प्रेमियों की बातें बताई जाती हैं, वो भी समाज के ही शिकार थे। यह समाज प्यार और प्रेमियों की भाषा नहीं समझता है।

ऐसा नहीं है कि मैं नई दुनिया बसाना नहीं चाहता। मैं भी माया की यादों से बाहर निकलना चाहता हूँ। मैं भी माया की तरह ही इस प्यार को निभाना चाहता हूं, जैसे वो निभा रही है, लेकिन पता है, जब भी मुझे लगता है कि माया की तरह उसकी यादें भी मुझसे दूर होने की कोशिश करने लगती हैं तो अचानक ही मेरे अन्दर एक ड़र पैदा हो जाता हैं और मेरे कदम अपने आप जलमहल, एम.जी. रोड़ मैंट्रो स्टेशन, सुभाष पार्क और भी कई जगह जहाँ हम मिलते थे, वहाँ मुझे ले जाते है। वहाँ मैं माया की यादों के साथ कुछ समय बिताता हूँ और फिर माया की यादें मुझसे दूर नहीं हो पाती है। पता है, आज भी माया का लव-लैटर, तस्वीरें, टिफिन, हेयर-क्लिप, उसकी गिफ़्ट की हुई शर्ट सब कुछ मेरे पास सँभाल कर रखे है। मैंने बहुत बार इनको

जलाने की भी कोशिश की है, लेकिन हर बार मेरे हाथ रूक जाते है। मैं चाहकर भी उन्हें जला नहीं पाता हूँ।" वीर ने कहा।

"वीर, मैं तुझे कैसे समझाऊँ कि इससे तुझे कुछ भी हासिल नहीं होगा? और हाँ, वो ड्रग्स अब भी लेता है क्या तू?" माधवी ने पूछा।

"ड्रग्स को छोड़ चुका हूँ। माया को भूलने के लिए मैंने ड्रग्स का सहारा लिया था, लेकिन माया को कुछ समय के लिए भूलना ही मुझे ज़्यादा तकलीफ़ देता था इसलिए अब ड्रग्स के नशे को छोड़कर प्यार के नशे में ही डूबा रहता हूँ। मुझे उम्मीद है कि माया फिर से मेरी लाइफ़ में आएगी। इसलिए ड्रग्स को अब छोड़ दिया है क्योंकि उम्मीद से बडा कोई नशा नहीं हैं।

मुझे भी पता है कि इससे मुझे कुछ भी हासिल नहीं होगा, लेकिन फिर भी मैं अभी हूँ अपने प्यार के लिए। जब मैंने कालेज में पहली बार माया को देखा था तभी मुझे ऐसा लगा था कि यही वो लड़की है, जिसके लिए मैं कुछ भी कर सकता हूँ। कभी माया के लिए मैंने सोचा था कि माया और मैं बारिश में भीग रहे है और बस मैं उसे देख रहा हूँ, कभी बाहर बारिश हो रही है और हम दोनों गाड़ी के अन्दर बैठें अपने में ही खोए हुए हैं यह सोच कर कि हमें कोई देख नहीं रहा है, लेकिन बारिश की बूंदे गाड़ी के शीशे पर बैठीं हुई हमें ही देख रही हो, कभी माया के हाथों को अपने हाथों में लेकर उस मेट्रो स्टेशन पर कुछ समय बिताए, जहाँ हम मिलते थे, हमारे खेत में पेड़ के नीचे चारपाई पर बैठकर हम अपना कुछ समय व्यतीत करे, खेत के बीच में बने मचान पर माया मेरी बाँहो में हो, लेकिन यह सब अब केवल एक प्यारा सपना ही बन कर रह गया है। लगता ही नहीं कि कभी माया इस सपने को पूरा करने के लिए कदम बढ़ाएगी। ख़ैर, माया को पहली बार देखने से आज तक प्यार का जुनून कभी कम नहीं हुआ है, और ये कभी कम होगा भी नहीं। ये तो बस राख बनेगा जब मैं मरूंगा। सच्चे प्यार का कोई अन्त नहीं होता है। अगर हमारा प्यार सच्चा है तो हम जरुर

मिलेंगे। यहाँ नहीं तो वहाँ, जहाँ कोई मजबूरी, झूठ नहीं होता है, पर मिलेंगे ज़रूर।" वीर ने कहा।

"प्लीज़, ऐसा मत बोल। मुझे तो माया का सोचकर ही बुरा लगता है कि काश उसने Engagement से पहले हिम्मत दिखाई होती तो आज एक सच्चा प्यार करने वाला दिन-ब-दिन उसकी यादों में मर नहीं रहा होता, लेकिन शायद इस प्रेम कहानी का अन्जाम ऐसा ही होना था। तूने जिसे अपनी दुनिया माना, उसी ने तुझे दुनिया दिखा दी। मानेगा तो तू अपनी ही जैसे हमेशा करता है, फिर भी अब यही सही रहेगा कि तू इन सब झंझटों से बाहर निकलकर शादी करले और अपनी नई जिंदगी जी।" माधवी ने कहा।

"हाँ, अब कोशिश तो करूंगा ही, अगर तूने कहा है तो, लेकिन घड़ी में टाइम देख, तुझे जाना भी है, नहीं तो तेरी फ्लाइट मिस हो जाएगी।" वीर ने घड़ी की तरफ़ इशारा करके कहा।

सुबह के 06:00 बज गए थे। माधवी की 09:00 बजे की फ्लाइट थी। माधवी ने घड़ी की तरफ़ देखा और बिस्तर से उठकर बाहर कमरे में जाकर टिप्सी को जगाने लगी। टिप्सी उठते ही रोने लगी तो माधवी टिप्सी को वीर के पास लाई और वीर से कहा कि इसे सँभाल, मैं तब तक नहाकर आती हूँ। टिप्सी नीचे फर्श पर बैठ गई थीं। वीर टिप्सी के पास आया और कमरे में रखा एक टेडी बियर दिया और टिप्सी के पास नीचे फर्श पर बैठ गया। वीर टिप्सी के साथ खेल रहा था। माधवी नहाकर आई तब तक वीर ने ब्रेकफास्ट ऑर्डर कर दिया था। माधवी ने टिप्सी के लिए दूध गर्म किया और टिप्सी को दूध बोतल में डालकर पीने को दे दिया और ख़ुद ब्रेकफास्ट करने लगी। वीर माधवी की तरफ़ देख रहा था।

"सॉरी यार, मैं तेरी शादी में नहीं आ पाया।" वीर ने कहा।

"कोई बात नहीं, 'सॉरी' की ज़रूरत नहीं है। मेरी शादी में ना आने के लिए मैं तुझे कभी भी माफ नहीं करूँगी।" माधवी ने जबाब दिया।

"तू खुश तो है ना?" वीर ने पूछा।

"हाय! काश तूने यह मुझसे शादी से पहले पूछा होता तो मैं तुझसे ही शादी कर लेती। कहाँ मिलते है ऐसे सच्चे आशिक़ जो प्यार के साथ-साथ उसकी क़ीमत भी पहचानते है। ऐसा आशिक़ जो प्रेमी के जुदा होने के बाद भी उससे इतना प्यार करता है कि उसकी यादों तक को ख़ुद से अलग नहीं होने देता। क़सम से, अगर तुम दोनों की शादी हो जाती तो ये इश्क़ एक नई ही कहानी लिख रहा होता। ख़ैर, मेरी, तेरी और माया तीनों की ही किस्मत ही फूटी है।" माधवी ने जबाब दिया।

वीर माधवी की बात सुनकर थोड़ा मुस्कुराया और टिप्सी को गोद में उठा लिया। माधवी ने ब्रेकफास्ट करने के बाद एक कैब बुक कर ली थी। कुछ मिनट बाद कैब वाले का फ़ोन आ गया था। वो बिल्डिंग के नीचे खड़ा था। माधवी ने टिप्सी को गोद में लिया और वीर से कहा कि उसका ट्रॉली बैग लेकर नीचे छोड़ने आ जाए। वीर ने माधवी का बैग उठाया और तीनों नीचे कैब के पास पहुँच गए थे। कैब ड्राइवर ने सामान गाड़ी में रखा और गाड़ी स्टार्ट कर दी। माधवी ने टिप्सी को गाड़ी मैं बैठाया और मुड़कर वीर की तरफ़ देखने लगी और करीब आकर वीर को गले लगा लिया।

"प्लीज़, बदल जा। यूं ख़ुद को बर्बाद मत कर।" माधवी ने कहा।

माधवी की बात सुनकर वीर ने नीचे ज़मीन की तरफ़ देखा और अपनी हामी भरी।

माधवी गाड़ी मैं बैठ गई थी। वीर गाड़ी के दरवाज़े के पास गया और टिप्सी को बाय कहा। गाड़ी एयरपोर्ट की तरफ़ बढ़ चुकी थी।

माधवी के जाने के बाद वीर अपने फ़्लैट पर गया। उसने जाकर आईना उठाया, जिस पर धूल जम चुकी थी। वीर ने आईने से धूल साफ़ कर अपना चेहरा देखा कि कहीं सही में अघोरी साधु तो नहीं लग रहा, लेकिन वीर को चेहरे की बजाय सबसे पहले अपनी आँखें दिखीं जो सूख चुकी थीं। वीर ने आईने से अपनी नज़रें हटाई और उसे पलट कर रख दिया। वीर की आँखें भारी हो रही थी, इसलिए वह बिस्तर तक गया और सो गया।

वीर जब शाम को उठा तो उसने देखा कि रात के लिए शराब नहीं बची थी। वीर ने कपडे पहने, नीचे जाकर ऑटो लिया और सीधा ठेके पर शराब लेने के लिए निकल गया। रास्ते में वीर के पास अजय का फ़ोन आया।

"भाई, माधवी का फ़ोन आया था क्या?" अजय ने पूछा।

"हाँ, फ़ोन आया था और वो रात को यहीं मेरे पास थी।" वीर ने कहा।

"माधवी बता रही थी कि उसकी फ्लाइट कैंसिल हो गई थीं इसलिए मैंने तेरे नम्बर दे दिए।" अजय ने कहा।

"ठीक किया। वैसे मैं बिन वजह ही उससे भाग रहा था कि वो क्या सोचेगी? लेकिन अब उससे मिलकर अच्छा लग रहा है। ऐसे लगा जैसे किसी अपने ने बरसों बाद अपनापन महसूस करवाया हो। थैंक्स, यार। चल, ठीक है, मैं तुझे बाद में कॉल करता हूँ, अभी बिज़ी हूँ।" वीर ने कहा।

"कहाँ बिजी है और यह शोर कैसा आ रहा है? कहाँ जा रहा है तू?" अजय ने पूछा।

"तबाह होने के लिए।" वीर ने जवाब दिया और फ़ोन रख दिया।

ऑटो अपनी स्पीड़ से ठेके की तरफ़ बढ़े जा रहा था।

बात उनकी अलग मेरी कहानी और है,

मैं तो आशिक हूं, मेरे अन्दर रवानी और है।

कौन समझेगा ये तडप अबके बरस,
कह रही है कुछ जुबाँ, लेकिन कहानी और है।

तुमने अब तक दिल में झाँक कर देखा ही नही,
शब्द कुछ अलग, मगर मकसद कुछ और है।
एक बात है उसमें जो बेचैन रखती है हमें,
फूल सब अपनी जगह, गुलाब की बात और है।

कुछ किस्से कहं जाएँगे अपने अलग अंदाज से,
मै नि:शब्द हूं, क्योंकि मेरी जुबानी कुछ और है।।